संक्षेप

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक समाचार पत्रिका

नवंबर-दिसंबर 2016

झलकियाँ

बाल साहित्य पुरस्कार
•
युवा पुरस्कार
•
लेखक सम्मिलन
•
संगोष्ठी
•
परिसंवाद
•
कविसंधि
•
साहित्य मंच

ग्रामालोक
•
लेखक से भेंट
•
अस्मिता
•
नारी चेतना
•
अनुवाद कार्यशाला
•
मेरे झरोखे से
•
कथासंधि

सचिव की क़लम से...

साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियाँ निरंतर जारी रहती हैं— यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि प्रायः हर शाम देश के किसी-न-किसी स्थान पर किसी-न-किसी भारतीय भाषा में कोई न कोई साहित्यिक आयोजन अकादेमी द्वारा किया जा रहा होता है। हम सभी इस बात से पूरी तरह अवगत हैं कि बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं। उनके लिए उत्कृष्ट एवं बालसुलभ रचनात्मक साहित्य उपलब्ध कराना हमारी ज़िम्मेदारी है। बाल साहित्य के रचनाकारों को सम्मानित करना भी अकादेमी का दायित्व है। 2016 में साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन अहमदाबाद, गुजरात में किया गया। इस अवसर पर पुरस्कार से सम्मानित रचनाकारों ने अपने रचनात्मक अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया। उस मौक़े पर 'बाल साहित्य लेखन : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया था।

युवा रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा उन्हें प्रतिवर्ष सम्मानित किया जाता है। 2016 के साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन अगरतला में किया गया। आयोजन में पुरस्कृत युवा रचनाकारों ने श्रोताओं के साथ अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया।

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रधान कार्यालय सहित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में 14-21 नवंबर 2016 के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, साहित्य मंच एवं विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन तथा विभिन्न भाषाओं के लेखकों पर अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया। अकादेमी द्वारा जनजातीय एवं वाचिक साहित्य पर भी संगोष्ठी एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया।

ग्रामीण क्षेत्र में रहनेवाले युवा रचनाकारों की नई पौध को तैयार करने के उद्देश्य से अकादेमी द्वारा 'ग्रामालोक' कार्यक्रम आयोजित होता है, जिसमें विभिन्न भाषा के वरिष्ठ रचनाकारों को ग्रामीण क्षेत्र के किसी विद्यालय में आमंत्रित किया जाता है। साथ ही उस क्षेत्र की उभरती प्रतिभाओं को लेखन की बारीकियों से अवगत कराया जाता है। इसके अतिरिक्त अकादेमी द्वारा निर्धारित संगोष्ठी, परिसंवाद, लेखक से भेंट, कथासंधि, कविसंधि, महिला लेखन के लिए नारी चेतना, अस्मिता, मुलाक़ात, साहित्य मंच एवं प्रवासी मंच कार्यक्रमों का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है।

ये समस्त साहित्यिक एवं रचनात्मक आयोजन हम अपने शुभचिंतकों, लेखकों, विद्वानों एवं कवियों के स्नेह और सहयोग से ही कर पाते हैं।

संक्षेप के प्रस्तुत अंक में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को सम्मिलित किया गया है तथा नवंबर-दिसंबर 2016 में अकादेमी द्वारा आयोजित समस्त कार्यक्रमों की सूची भी संलग्न है। आशा है, आपको यह अंक पसंद आएगा।

— डॉ. के. श्रीनिवासराव

संपादक की ओर से

'इंक़लाब ज़िंदाबाद' का नारा देने वाले उर्दू के प्रसिद्ध शायर और देश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी हसरत मोहानी को अब शायद ही कोई याद करता है। प्रबल साम्राज्यवाद-विरोधी पत्रकार, संपूर्ण स्वराज का नारा देने वाले बेख़ौफ़ स्वतंत्रता सेनानी, भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने वाली संविधान सभा के प्रमुख सदस्य मौलाना हसरत मोहानी अपने दौर के नायाब शख़्स थे। वह सुलझे हुए राजनेता और बेबाक योद्धा ही नहीं मुहब्बत के नाजुक एहसास के अज़ीज़ शायर भी थे। वह हसरत मोहानी साहब ही थे जिन्होंने 1921 के अहमदाबाद कांग्रेस में संपूर्ण स्वराज का प्रस्ताव रखा था। जंगे आज़ादी की उलझनों और जेल-यात्राओं की वजह से उन्हें अदब की ख़िदमत करने का मौक़ा कम मिला लेकिन उनकी शायरी की नाज़ुक ख़याली और लफ़्ज़ों की सादगी हैरान कर देने वाली है। उनकी शायरी अदब का अनमोल ख़ज़ाना है। उनकी ग़ज़ल 'चुपके-चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है/हमको अब तक आशिक़ी का वो ज़माना याद है' गुलाम अली की आवाज़ में सुनना एक अनोखा एहसास दिलाता है।

आप सभी को नया साल मुबारक।

संपादक : **डॉ. ख़ुर्शीद आलम**
ई-मेल : po.ho1@sahitya-akademi.gov.in

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह एवं लेखक सम्मिलन

14 नवंबर, 2016, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन गुजरात साहित्य परिषद् अहमदाबाद के आर.वी. पाठक सभागार में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कृत रचनाकारों, अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए गुजरात साहित्य परिषद् का विशेष आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि बच्चे किसी भी सभ्यता का स्वरूप होते हैं। उन्होंने कहा कि समृद्ध बाल साहित्य की रचना की आवश्यकता है जिससे कि बच्चे भारतीय संस्कृति और विरासत को जानने को उत्सुक हों। उन्होंने आज के मुख्य अतिथि श्री यशवंत मेहता का भी स्वागत किया जो अकादेमी के बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पुरस्कृत रचनाकारों को बधाई देते हुए समारोह में सम्मिलित होने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज बहुत ही संवेदनशील है। यह दुख का विषय है कि जहाँ एक पक्षी के वध पर एक महाकाव्य की रचना हो जाती है वहीं बाल उत्पीड़न पर एक लेख भी नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय समाज की ग़रीबी इस प्रकार के दुरुपयोग का एक मुख्य कारण है। प्राचीन भारतीय समाज के एकल परिवार के बच्चे अधिक सुरक्षित थे, लेकिन आधुनिक विभाजित समाज में विभाजित परिवारों ने पश्चिमी संस्कृति को अपना लिया है। श्री तिवारी ने युवा लेखकों से आह्वान किया कि वे उत्कृष्ट बाल साहित्य की रचना भी करें।

मुख्य अतिथि श्री यशवंत मेहता द्वारा विजेताओं को सम्मान-पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर श्री मेहता ने कहा कि बच्चे भगवान के मानव रूप होते हैं। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने 13 वर्ष की अवस्था से बाल साहित्य लेखन आरंभ किया था और आज भी बाल पत्रिका के संपादन से उन्हें आनंद मिलता है। श्री मेहता बाल साहित्य के विकास के लिए भारत के हर क्षेत्र में बाल साहित्य अकादमियों की स्थापना पर बल दिया। उन्होंने प्रकाशन संस्थानों से अपील की कि वे प्रचुर मात्रा में सस्ती क़ीमतों पर बाल साहित्य उपलब्ध कराएँ। बहुत ही सरल और स्पष्ट भाषा में बाल साहित्य लिखने की उन्होंने अपील की। अकादेमी के सचिव ने आभार व्यक्त करते हुए अकादेमी द्वारा आयोजित 15-16 नवंबर 2016 के सभी कार्यक्रमों में उपस्थित रहने का आग्रह किया।

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2016, अहमदाबाद

पुरस्कार अर्पण समारोह के दूसरे दिन गुजराती साहित्य परिषद् के गोवर्धन स्मृति खंड सभागार में लेखक सम्मिलन का आयोजन 15 नवंबर 2016 को किया गया। बाल पुरस्कार से सम्मानित लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभवों को श्रोताओं से साझा किया। सम्मिलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध गुजराती लेखक विनेश अंताणी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भारत के विभिन्न क्षेत्र की संस्कृतियों के मध्य भाषा एक पुल का काम करती है जो उन्हें एक-दूसरे के समीप लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय बच्चों को पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नहीं होना चाहिए जो कि आज एक बड़ी चुनौती है। बचपन में बच्चों को लोक कथाएँ सुनना चाहिए जिसमें हमारी सभ्यता की जड़ें हैं।

बाङ्ला के श्री अमरेंद्र चक्रवर्ती ने कहा कि बाल साहित्य का एक छोटा अंश भी हमेशा महान होता है। इस बात की परवाह किये बिना कि उसमें पाठक की उम्र क्या है। प्रशंसा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में भिन्न हो सकती है किंतु यह उन सभी को आकर्षित करेगा। यह जीवन को यहाँ तक कि वयस्क जीवन को राहत प्रदान करता है।

अंग्रेज़ी की रश्मि नार्ज़ारी ने कहा कि जब मैं कहानी पाठ और परस्पर संवाद के लिए जाती हूं तो बच्चों से कहती हूँ, देखो, ठीक अभिव्यक्ति का कहानी कहने और साहित्य से कोई लेना देना नहीं

सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए श्री विनेश अंताणी, माइक पर सुश्री रश्मि नार्ज़ारी

है। यह इंजीनियरिंग, चिकित्सा, मैनेजमेंट और अन्य तकनीकी धाराओं के साथ होता है। अतः आप जो कुछ भी कर रहे हों उसमें अभिव्यक्ति का अच्छा कौशल महत्त्वपूर्ण है। गुजराती की सुश्री पुष्पा अंताणी ने कहा कि आज के बच्चों को सांस्कृतिक मूल्यों को जानना चाहिए, साथ ही माता-पिता को भी अपने बच्चों के लिए समय निकालना चाहिए। एक लेखक को कहानी के रूप में कहानी लिखना चाहिए। यह उपदेशात्मक नहीं होना चाहिए। कहानी के द्वारा पारंपरिक विचारधारा की व्याख्या की जा सकती है।

कन्नड के श्री सुमतींद्र नाडीग ने कहा कि मेरी कविताएँ बच्चों के अंतरंग दुनिया को प्रस्तुत करती हैं। वे वास्तव में बच्चों में मातृभाषा के प्रेम को विकसित करने, उनकी कल्पना को प्रोत्साहित करने,उनकी भावनाओं की सीमा को विस्तृत करने और दूसरों की भावनाओं को जाग्रत करने वाली होती हैं। कोंकणी के श्री दिलीप बोरकर का कहना था कि हमें बच्चों के लिए एक अच्छी कहानी बुनना चाहिए और खेलने के लिए लैपटॉप या मोबाइल नहीं देना चाहिए। हमें उन्हें एक रोबोट नहीं बल्कि उनके मानव स्वभाव को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। एक लेखक बच्चों में मानवता, समानता और भाईचारे का विकास कर सकता है।

मैथिली के प्रेम मोहन मिश्रा ने कहा कि एक लेखक को बच्चों के लिए उत्कृष्ट, परिचित और दिलचस्प लेखन किया जाना चाहिए। बाल साहित्य की भाषा सरल और धाराप्रवाह होनी चाहिए। मलयाळम् के एन.पी. हाफ़िज़ मोहम्मद ने कहा कि बच्चे कहानियाँ पसंद करते हैं, उन्हें अच्छा साहित्य चाहिए। उनके दिल में कविता और गायन होता है।

मराठी से राजीव तांबे ने कहा कि क्या आज वास्तव में बच्चे पढ़ रहे हैं?हाँ, निश्चित हाँ। परंतु प्रश्न ये है कि क्या वे पढ़ते समय देखते हैं?क्या वे सुनते हैं?क्या वे जो पढ़ते हैं जीवन में उसका अनुभव करते हैं?ओड़िया के बटकृष्ण ओझा ने कहा कि मैं अध्यापन के पेशे में हूँ। मैं अध्यापन करते हुए सूचनाओं, तथ्यों को जमा करता हूँ। मैं बच्चों के मन-मस्तिष्क को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में लेखन करता हूँ। पंजाबी के हिरदेपाल सिंह का कहना था कि मेरी रचनात्मकता का मुख्य क्षेत्र गद्य है जो पंजाबी बच्चों की समझ में आ सके। कला की दुनिया के साथ दृढ़ संबंध होने के कारण मैं शब्द चित्र में अपने विचारों को प्रस्तुत करने में सहज महसूस करता हूँ। संस्कृत के श्री ऋषिराज जानी का कहना था कि पहला बाल साहित्य संस्कृत में लिखा गया। संस्कृत में रचित पशु कहानियों के आधुनिक रूप डिज्नी लैंड हैं। संताली के कुहु दुलाड़ हांसदा ने कहा कि आज हम अपनी बढ़ती लालच को पूरा करने के लिए अपमानजनक स्थिति तक युद्धरत हैं। उर्दू के वकील नजीब ने कहा कि बच्चों की कहानियाँ हास्यपूर्ण और दिलचस्प होनी चाहिए। अकादेमी के सचिव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

बाल साहित्य पुरस्कार 2016 विजेताओं की सूचि

हरप्रिया बारुकियाल बरगोहाई	(असमिया)	राजीव तांबे	(मराठी)
अरमेंद्र चक्रवर्ती	(बाङ्ला)	शंकरदेव ढकाल	(नेपाली)
ओम गोस्वामी	(डोगरी)	बटकृष्ण ओझा	(ओड़िया)
रश्मि नार्ज़ारी	(अंग्रेज़ी)	हिरदे पाल सिंह	(पंजाबी)
पुष्पा अंताणी	(गुजराती)	ऋषिराज जानी	(संस्कृत)
(स्व.) द्रोणवीर कोहली	(हिंदी)	कुहु दुलाड़ हांसदा	(संताली)
सुमतींद्र नाडीग	(कन्नड)	दयाल कोटूमल थामेजा 'आशा'	(सिंधी)
रूही जान	(कश्मीरी)	खुशा खातिरसन	(तमिळ)
दिलीप बोरकर	(कोंकणी)	अलपर्ति वेंकट सुब्बाराव	(तेलुगु)
प्रेम मोहन मिश्रा	(मैथिली)	अब्दुल वकील नजीब	(उर्दू)
एन.पी.हाफ़िज़ मोहम्मद	(मलयाळम्)		

युवा पुरस्कार अर्पण समारोह एवं लेखक उत्सव

युवा पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह

2-3 दिसंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

साहित्य अकादेमी द्वारा 2 दिसंबर 2016 को युवा पुरस्कार 2016 के अर्पण समारोह तथा अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन का आयोजन अगरतला में किया गया। इस अवसर पर अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए युवा पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में विजेताओं को बधाई दी। इस अवसर पर असम साहित्य सभा के अध्यक्ष डॉ. ध्रुव ज्योति बोरा मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित थे। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने समापन वक्तव्य दिया। अकादेमी के सचिव के धन्यवाद ज्ञापन के बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भगवत मेलम ग्रुप, कुचीपुडी द्वारा कुचिपुडी यक्षगान शैली में भक्त प्रहलाद को पस्तुत किया गया।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से पुरस्कार ग्रहण करते हुए हिंदी के नीलोत्पल मृणाल

पुरस्कार विजेता सम्मिलन

3 दिसंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

युवा पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह के अवसर पर 3 दिसंबर 2016 को पुरस्कृत रचनाकारों के सम्मिलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीविनासराव ने युवा पुरस्कार विजेताओं, सम्मानित अतिथियों का स्वागत किया। पुरस्कार विजेता सम्मिलन की

कोंकणी की अन्वेषा अरुण सिंगबाळ

अध्यक्षता अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौर हरि दास ने किया। प्रार्थना शइकीया (असमिया), राका दासगुप्ता (बाङ्ला), बिजित गयारी (बोडो), ब्रह्म दत्त 'मगोत्रा' (डोगरी), रघु कारनाड(अंग्रेज़ी), अंकित त्रिवेदी (गुजराती), नीलोत्पल मृणाल (हिंदी), विक्रम हटवारा (कन्नड), आदिल मोहिउद्दीन (कश्मीरी), अन्वेषा अरुण सिंगबाळ (कोंकणी), दीप नारायण 'विद्यार्थी' (मैथिली), सूर्या गोपी (मलयाळम्), चोङ्थम दीपु सिंह (मणिपुरी), मनस्विनी लता रवींद्र (मराठी), संजीव क्षेत्री (नेपाली), ज्ञानी

सम्मिलन की अध्यक्षता करते ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास

देवाशीष मिश्र (ओड़िया), रंजीत सरांवाली (पंजाबी), जितेंद्र कुमार सोनी (राजस्थानी), भारत भूषण रथ (संस्कृत), परिमल हांसदा (संताली), भारती सदारंगाणी (सिंधी), लक्ष्मी सरवण कुमार (तमिळ), चैतन्य पिंगली (तेलुगु) और अब्दुस समी (उर्दू) ने अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया। सत्र के अध्यक्ष ने विजेताओं को बधाई देते हुए अपनी शुभकामनाएँ दीं। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अखिल भारतीय लेखक उत्सव

3 दिसंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

अखिल भारतीय लेखक उत्सव के उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। आरंभिक वक्तव्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के सदस्य श्री ब्रजगोपाल रे ने दिया। उन्होंने साहित्य अकादेमी के युवा पुरस्कार 2016

स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव, साथ में (बायें से) श्री ब्रजगोपाल रे, प्रो. सरोज चौधरी, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं श्री सा. कंडासामी को भी देखा जा सकता है।

के विजेताओं को बधाई दी तथा अकादेमी द्वारा भव्य आयोजन पर संतोष व्यक्त किया। प्रसिद्ध तमिळ लेखक सा. कंडासामी ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। प्रसिद्ध लोक साहित्यकार, शिक्षाविद् प्रो. सरोज चौधरी विशिष्टि अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। मृदुल हलोई (असमिया), खोकन साहा (बाङ्ला), कुसुम कांति चकमा (चकमा), प्रांजलधर (हिंदी), नारायण झा (मैथिली), बाङथोई खुमन (मणिपुरी), थैलो मोग (मोग), गौरीशंकर नेमिवाल (राजस्थानी), चिन्मयी मरांडी (संताली), अलीना इतरत (उर्दू) और संगिता खिलवानी (सिंधी) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से सत्र समाप्त हुआ।

अखिल भारतीय लेखक उत्सव के पहले 'कहानी पाठ सत्र' की अध्यक्षता त्रिपुरा के प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक श्री शंकर बसु ने की। सयंतानी भट्टाचार्य (बाङ्ला), हांसदा सोवेंद्र सेखर (अंग्रेज़ी), अस्वाति ससिकुमार (मलयाळम्) एवं वेमपल्ली गंगाधर (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। दूसरे कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता गौर हरि दास ने की तथा लेबेन लाल मुसहरी (बोडो), मोनेश बदिगर (कन्नड), सुजीत कुमार पांडा (ओड़िया) एवं वीरपंडियन एस. (तमिळ) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

युवा पुरस्कार 2016 के विजेता

भाषा	लेखक	शीर्षक एवं विधा
असमिया	प्रार्थना शइकीया	जैंटाघारी (उपन्यास)
बाङ्ला	राका दासगुप्ता	अपराह्न डाउनटाउन (कविता)
बोडो	विजित गयारी	खामफ्लनाय बुब्लि (कविता)
डोगरी	ब्रह्म दत्त 'मगोत्रा'	कूले भाव (कविता)
अंग्रेज़ी	रघु कारनाड	फ़ार्दरेस्ट फ़ील्ड - एन इंडियन स्टोरी ऑफ़ द सेकेंड वर्ल्ड वॉर (जीवनी)
गुजराती	अंकित त्रिवेदी	गज़लपूर्वक (कविता)
हिंदी	नीलोत्पल मृणाल	डार्क हॉर्स - एक अनकही दास्ताँ (उपन्यास)
कन्नड	विक्रम हटवारा	ज़ीरो मतु ओंडु (कहानी)
कश्मीरी	आदिल मोहिउद्दीन	ज़ोल दिथ सद्रास (आलोचना)
कोंकणी	अन्वेषा अरुण सिंगबाळ	सुळूस (कविता)
मैथिली	दीप नारायण 'विद्यार्थी'	जे कहि नञि सकलहुँ (कविता)
मलयाळम्	सूर्या गोपी	उप्पुमाङ्गयिले पचिलैकळ (कहानी)

मणिपुरी	चोङ्थम दीपु सिंह	तोरबंदुदा (उपन्यास)
मराठी	मनस्विनी लता रवींद्र	क्लॉगच्या आरशापल्याड (कहानी)
नेपाली	संजीव छेत्री	साँचो जस्तै कथाहरु (कहानी)
ओड़िया	ज्ञानी देवाशीष मिश्र	दाग (कविता)
पंजाबी	रणजीत सरांवाली	पानी उत्ते मीनाकारी (कविता)
राजस्थानी	जितेंद्र कुमार सोनी	रणखार (कविता)
संस्कृत	भारतभूषण रथ	वनवैभवम् (कविता)
संताली	परिमल हांसदा	धुंवा ओटाञ अग काना (कविता)
सिंधी	भारती सदारंगाणी	रेतीलो चिटु (कविता)
तमिळ	लक्ष्मी सरवण कुमार	कानकन (उपन्यास)
तेलुगु	चैतन्य पिंगली	चिट्टगांग विप्लव यनितलु (कहानी)
उर्दू	अब्दुस समी	नगरी नगरी फिरा मुसाफ़िर (साहित्यिक समालोचना)

संगोष्ठी

लक्ष्मण झा, बाबू साहेब चौधरी तथा नगेंद्र कुमार जन्मशतवार्षिकी

13-14 नवंबर 2016, रायपुर, छत्तीसगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिल प्रवाहिका, मैथिली पत्रिका, रायपुर (छत्तीसगढ़) के संयुक्त तत्त्वावधान में मैथिली के तीन प्रतिष्ठित साहित्यकारों लक्ष्मण झा, बाबू साहेब चौधरी तथा नगेंद्र कुमार की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 13-14 नवंबर 2016 को रायपुर, छत्तीसगढ़ में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात के कुलपति प्रो. अर्कनाथ चौधरी ने किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि देश-विदेश में हरेक जगह मैथिल अपनी विद्या के बल पर शीर्ष पर विराजमान हैं। इसे सुरक्षित रखने के लिए सजग और सक्रिय रहने की आवश्यकता है। उन्होंने मिथिला के विद्या-वैभव की विस्तार से चर्चा की तथा साथ ही इसमें छत्तीसगढ़ के अवदान को रेखांकित किया।

आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया और कहा कि अकादेमी ने अपने भाषा विशेष के कार्यक्रमों को भाषाक्षेत्र के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर उन क्षेत्रों में भी आयोजित कर रही है, जहाँ उस भाषा के बोलनेवाले बहुलता में प्रवास कर रहे हैं। अकादेमी में मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने विषय-प्रवर्तन करते हुए तीनों साहित्यकारों के अवदान तथा तत्कालीन परिस्थितियों की रूपरेखा रखते हुए कहा कि अतीत के गर्भ में ही भविष्य निहित होता है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थिति छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. रमेंद्रनाथ चौधरी ने छत्तीसगढ़ में मैथिलों की विद्वत परंपरा तथा योगदान का स्मरण किया। साथ ही युवाओं को परंपरा से परिचित कराने पर जोर दिया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात मैथिली साहित्यकार डॉ. शोमकांत झा ने तीनों साहित्यकारों के वैशिष्ट्य को रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक अविचल ने किया, जबकि सत्रांत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन डॉ. बसंत लाल झा ने किया।

माइक पर मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका वीणा ठाकुर, (बायें से) अशोक अविचल, देवेंद्र कु. देवेश, अर्कनाथ चौधरी एवं सुबोधकांत झा

प्रथम सत्र लक्ष्मण झा पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री अशोक चौधरी ने की। इस सत्र में डॉ. शिवकुमार मिश्र एवं डॉ. भैरवलाल दास ने लक्ष्मण झा के व्यक्तित्व और कृतित्व को उजागर करनेवाले अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा पावर-प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से अनेक अल्पज्ञात तथ्यों की जानकारी भी दी। इसी सत्र में डॉ. अशोक अविचल ने 'डॉ. लक्ष्मण झा की दृष्टि में मिथिला की परिकल्पना' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने डॉ. झा द्वारा मिथिला के सीमांकन तथा शैक्षिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिकल्पना पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन संगोष्ठी का द्वितीय सत्र श्री अनिल सिंह चौहान की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो बाबू साहेब चौधरी पर केंद्रित था। इस सत्र में श्री ताराकांत झा तथा डॉ. योगानंद झा ने बाबू साहेब चौधरी के व्यक्तित्व, जीवनी और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

तृतीय सत्र श्री सरोज कुमार मिश्र की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. पंकज पराशर, डॉ. कमल मोहन चुन्नू एवं डॉ. पंचानन मिश्र ने क्रमशः 'बाबू साहेब चौधरी की पत्रकारिता' तथा बाबू साहेब चौधरी एवं नगेंद्र कुमार की जीवनी पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का अंतिम सत्र श्री के. के. झा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. केशकर ठाकुर तथा अमलेंदु शेखर चौधरी ने क्रमशः नगेंद्र कुमार के कथासाहित्य और यात्रासाहित्य पर केंद्रित अपने आलेखों का पाठ किया। 'मैथिल प्रवाहिका' पत्रिका के प्रधान संपादक श्री मनीष कुमार झा के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ संगोष्ठी का समापन हुआ।

बाल लेखन : अतीत, वर्तमान और भविष्य

15-16 नवंबर, 2016, अहमदाबाद

बाल साहित्य पुरस्कारअर्पण समारोह के दूसरे दिन साहित्य अकादेमी द्वारा 'बाल लेखन : अतीत, वर्तमान और भविष्य' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन 15-16 नवंबर 2016 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कृत रचनाकारों, प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह आम धारणा है कि बाल साहित्य आसान होता है, इसीलिए हेय दृष्टि से देखा जाता है। लेकिन इसके विपरीत यह अधिक यथार्थवादी और जटिल पैमाना है। सहज ढंग से संवेदनशीलता डालना एक कठिन काम होता है। बाल साहित्य का अधिक भाषाओं में अनुवाद करने की ज़रूरत है। स्रोत भाषा से लक्षित भाषाओं में अनुवाद करना अनुवादकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। प्रसिद्ध गुजराती लेखक एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. रघुवीर चौधरी ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए आज की तारीख़ तक बाल साहित्य न लिखने के लिए खिन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि बच्चे मासूम और शुद्ध मन के होते हैं। आज के लेखक आंशिक रूप से ही सही बाल साहित्य की रचना कर रहे हैं। अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाने के लिए युवा लेखकों को आगे आना होगा और इस चुनौती को स्वीकार करना होगा।

उद्घाटन सत्र में असमिया के सशिंद्र कुमार अधिकारी, बोडो के दीनानाथ बसुमतारी, गुजराती के उदयन ठक्कर, हिंदी के रमेश तैलंग, कन्नड के विजयकांत पाटिल, पंजाबी के इंडे, तेलुगु के वी.आर. शर्मा, सिंधी के रोशन गोलानी तथा उर्दू के असद रज़ा ने अपनी कविताओं, नज़्मों एवं ग़ज़लों का पाठ किया। सचिव, साहित्य अकादेमी के धन्यवाद ज्ञापन से सत्र समाप्त हुआ।

(बायें से) सशिंद्र कुमार अधिकारी, दीनानाथ बसुमतारी एवं माइक पर उदयन ठक्कर

उद्घाटन सत्र के बाद दूसरे दिन 16 नवंबर 2016 को प्रथम सत्र की अध्यक्षता गुजराती, संस्कृत एवं हिंदी के लेखक श्री भाग्येश झा ने की। सुश्री बुलू मुखोपाध्याय (बाङ्ला), सुश्री दक्षा दिनेश भवसार (गुजराती), श्री दिविक रमेश (हिंदी), श्री एस. आर. लाल (मलयाळम्) तथा श्री एल. जॉयचंद्र सिंह (मणिपुरी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री भागयेश झा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि बच्चों के लिए लिखना परंपरा तोड़ने के समान है। कवि एक विक्रेता की भाँति होता है जो मानव चेतना तक पहुँचता है। उन्होंने आगे कहा कि साहित्य को हमेशा प्रवाह में रहना चाहिए और उसका प्राचीन और आधुनिक साहित्य में वर्गीकरण नहीं होना चाहिए। हमारे यहाँ श्रुति और स्मृति की परंपरा है, इसलिए साहित्य जटिल नहीं होना चाहिए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध तमिळ और अंग्रेज़ी विद्वान श्री एरा नटराजन ने किया। श्री सांतनु तामुले (असमिया), सुश्री रुना चक्रवर्ती (अंग्रेज़ी) सुश्री श्रद्धा त्रिवेदी (गुजराती) और श्री सूर्यकांत सर्राफ़ (मराठी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। यह सत्र प्रतिबद्ध पाठक न होने की चुनौती पर आधारित था। विद्वानों का कहना था कि बच्चों का धारा प्रवाह अंग्रेज़ी बोलना परंतु अपनी मातृभाषा नहीं समझना, एक जटिल समस्या है।

तीसरा सत्र काव्य गोष्ठी का था जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध सिंधी कवि श्री वासदेव मोही ने की। श्री शिवदेव सिंह मन्हास (डोगरी), श्री फिलिप क्लार्क (गुजराती), श्री सैयद अब्बास जौहर (कश्मीरी), सुश्री चंद्रिका पदगांवकर (कोंकणी), श्री अनमोल झा (मैथिली), श्री शिशुपाल शर्मा (नेपाली), श्री राज किशोर पढ़ी (ओड़िया), श्री नवनीत पांडे (राजस्थानी), श्री पीतांबर माझी (संताली) तथा श्री सुभाष शर्मा (सिंधी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। क्षेत्रीय सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

राष्ट्रीय भावात्मक एकता : भारतीय भाषा और साहित्य के संदर्भ में

17-18 नवंबर 2016, नई दिल्ली

"सभी भारतीय भाषाओं का प्रारंभिक लेखन रामायण और महाभारत से किसी न किसी प्रकार प्रेरित है अतः समग्र भारतीय साहित्य का मुख्य स्वर भावात्मक एकता का ही है। इतिहास के विभिन्न चरणों में भी जीवन और साहित्य का मूल स्वर यही रहा है। लेकिन कुछ अन्य तात्कालिक प्रसंग भी उसमें जुड़े हैं।" उपर्युक्त विचार साहित्य

सचिव, साहित्य अकादेमी के. श्रीनिवासराव अतिथियों का स्वागत करते हुए।
(बायें से) पुरुषोत्तम अग्रवाल, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, सीताकांत महापात्र एवं चंद्रशेखर कंबार

अकादेमी द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय भावात्मक एकता' संगोष्ठी में अपना उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रसिद्ध ओड़िया कवि एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य सीताकांत महापात्र ने व्यक्त किए।

बीज वक्तव्य देते हुए श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल ने कहा कि संस्कृति और भाषा की विविधता में एकता रखने वाले भारत का आधुनिक राष्ट्र के रूप में निर्माण पूरे विश्व के लिए एक बड़ी सीख था। भारतीय साहित्य में स्वतंत्रता की भावना शुरू से ही अंतर्निहित थी। हमारी एकता केवल भावात्मक ही नहीं आलोचनात्मक भी होनी चाहिए। भक्ति आंदोलन ने लोक जागरण की शुरुआत की और इसमें केवल समर्पण ही नहीं बराबरी की भी माँग थी। अतः सभी भारतीय भाषाओं के भक्ति काल का अध्ययन बहुत गहराई से करने की ज़रूरत है तभी हम राष्ट्रीय भावात्मक एकता के स्वरूप को भलीभाँति समझ पाएँगे।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि भाव का निर्माण देश के भूगोल, इतिहास, समाज और परंपराओं के सम्मिश्रण से होता है। भारत का बहुलतावाद और वैविध्य परंपरा की एकता ही भावात्मक एकता की बुनियाद है। उन्होंने संस्कृत साहित्य का उदाहरण देते हुए कहा कि हमारे साहित्य में आत्मवादी चेतना, वैश्विक चेतना और नैतिक संवेदना के सूत्र हमेशा से ही निरूपित होते रहे हैं। इसलिए हमारी भावात्मक एकता राष्ट्र से उठकर वैश्विक स्वरूप की रही है।

इससे पहले अकोदमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की विस्तृत परिकल्पना प्रस्तुत की। समापन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने दिया।

संगोष्ठी के पहले सत्र जिसका विषय 'भारतीय साहित्य की मूल भावना' था, की अध्यक्षता भालचंद्र नेमाड़े ने की और भगवान सिंह तथा लक्ष्मीनंदन बोरा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। भगवान सिंह ने भारत के प्राचीन इतिहास, संस्कृति, जीवन व्यवहार की चर्चा करते हुए वर्तमान समय में भारतीय साहित्य और चिंतन के परिवर्तनों पर भी प्रकाश डाला। लक्ष्मी नंदन बोरा ने कहा कि भारत का उत्तर पूर्व का जीवन विभिन्न भाषाओं और बोलियों की विविधता के बावजूद सामंजस्य प्रस्तुत करने के लिए एक पर्याप्त उदाहरण है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भालचंद्र नेमाड़े ने भारतीय परंपरा और संस्कृति की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि अपने इतिहास और परंपरा की गहन जानकारी के बिना अच्छा साहित्य नहीं लिखा जा सकता।

भारतीय सांस्कृतिक वैविध्य और एकत्व विषयक दूसरे सत्र की अध्यक्षता सूर्यप्रसाद दीक्षित ने की और रोवेना राबिन्सन तथा बजरंग बिहारी तिवारी ने अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए। रोबेना राबिन्सन ने अपने आलेख में भारत के कई राज्यों और वहाँ के समुदायों का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया। बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि राष्ट्रीय भावात्मक एकता को अन्य अस्मिता सहित दलित समुदाय के सशक्तिकरण के बग़ैर नहीं प्राप्त किया जा सकता।

अध्यक्षीय वक्तव्य में सूर्यप्रसाद दीक्षित ने भक्ति आंदोलन सहित अन्य सामाजिक सांस्कृतिक आंदोलन का हवाला देते हुए विधिवत समझाया कि भारतीय सांस्कृतिक वैविध्य और एकत्व के कितने बिंदु हैं।

दूसरे दिन के पहले सत्र में जिसका शीर्षक 'आदर्श जीवनमूल्य एवं भारतीय साहित्य' था, की अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड़ साहित्यकार एस.एल. भैरप्पा ने की और के. इनोक (तेलुगु) तथा सा. कंदास्वामी (तमिळ) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। एस.एल. भैरप्पा ने कहा कि भावात्मक एकता का स्वरूप राजनैतिक पार्टियों द्वारा विभिन्न समुदायों और धर्मों को वोट बैंक के रूप में देखने के कारण विकृत हुआ है। मूलतः अंग्रेज़ों की फूट डालो की राजनीति का अनुसरण कहीं न कहीं हमारी राजनीतिक पार्टियाँ करती रही हैं। हमारे राजनीतिज्ञ आज तक राष्ट्रीय एकता को लेकर कोई सर्वमान्य मसौदा नहीं बना पाए हैं।

'भारतीय साहित्य में भारतीयता' शीर्षक से अगले सत्र में सितांशु यशश्चंद्र (गुजराती), बद्रीनारायण (हिंदी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी साहित्यकार नरेंद्र कोहली ने की। सितांशु यशश्चंद्र ने कहा कि भारतीयता की परिभाषा अतीत से आती है लेकिन स्वतंत्रता के बाद इस परिभाषा को नए संदर्भों में परिभाषित किया गया है। बद्रीनारायण ने समाजशास्त्रीय संदर्भों में

भारतीयता की परिभाषा दी और कहा कि सतर्क भावुकता हमारे साहित्य का आधार है। इसीलिए पूरे भारतीय साहित्य की परंपरा भारत के एक भाव को प्रतिबिंबित करती है। समापन वक्तव्य देते हुए नरेंद्र कोहली ने कहा कि किसी भी राष्ट्र का स्वरूप इतिहास से निर्धारित होता है। हमें राष्ट्रीय एकता या भारतीयता की खोज के लिए पीछे लौटकर अपने महान मूल ग्रंथों और महापुरुषों तक जाना होगा। संत कवियों द्वारा दी गई धार्मिक सीखों ने हमारे पूरे राष्ट्र की संस्कृति को भावात्मक एकता से जोड़े रखा है।

'हमारी एकता कभी भी संदिग्ध नहीं थी। आधुनिक परिभाषाओं के कारण ही यह मतभेद पैदा हुए हैं।' उक्त वक्तव्य साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी 'राष्ट्रीय भावात्मक एकता : भारतीय भाषा और साहित्य के संदर्भ में' का समापन वक्तव्य देते हुए कपिल कपूर ने व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि भारत का एकत्व ज्ञान की प्राचीन परंपरा के कारण ही है। भारत के गाँवों में इस तरह के सवाल पूछे जाने पर लोग हँसेंगे जबकि बुद्धिजीवियों के बीच यह विषय व्यापक चर्चा पाता है। ऐसा भारतीय संविधान में पश्चिमी अवधारणाओं को शामिल करने के कारण हुआ है। प्राचीन भारत में धर्म या भाषा कभी भी देश की एकता के लिए कोई ख़तरा नहीं रही है। भारत की विविधता ही उसकी सबसे बड़ी ताक़त है। समापन वक्तव्य देते हुए प्रख्यात लेखक एवं विधारक तथा वर्तमान में राज्यसभा के सांसद नरेंद्र जाधव ने कहा कि भारत की एकता का स्वरूप संविधान बनने के बाद और व्यापक तथा ज़िम्मेदारी लिए हुए परिभाषित किया जाता है। उन्होंने संविधान लागू करते समय दी गई डॉ. अम्बेडकर के ऐतिहासिक भाषण के हवाले से कहा कि हमारी एकता हमारे वैविध्य का ही प्रतीक है और इसीलिए लोकतंत्र के प्रति हमारा नज़रिया बेहद ज़िम्मेदारी भरा होना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में पूरे देश से शामिल हुए लेखकों और विद्वानों का आभार प्रकट किया।

डोगरी लोक साहित्य

18-19 नवंबर 2016, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा डोगरी विभाग, जम्मू यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'डोगरी लोक साहित्य : समकालीन समीकरण' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 18-19 नवंबर 2016 को किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन यूनिवर्सिटी के अकादमिक कार्यों के अधिष्ठाता प्रो. देशबंधु ने किया। प्रो. देशबंधु ने ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी के आयोजन की सराहना की जो डोगरी भाषा के भोपल प्रकृति के अध्ययन के वातायन खोलती है।

इस अवसर पर अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने साहित्य अकादेमी का 2016 का बाल साहित्य पुरस्कार डॉ. ओम गोस्वामी को अर्पित किया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया और संगोष्ठी के उद्देश्य एवं लक्ष्य पर प्रकाश डाला। प्रसिद्ध हिंदी विद्वान प्रो. नरेंद्र मोहन ने बीज वक्तव्य दिया। श्री मोहन ने वर्तमान समाज की जीवन शैली और समाज में लोक साहित्य की प्रासंगिकता के बारे में विस्तार से बात की। इससे पहले प्रो. ललित मंगोत्रा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि डोगरी में वाचक साहित्य की पुरानी परंपरा है और उसमें लोक कथा, लोकगीत, पहेलियों, मुहावरों और शैली के रूप में एक समृद्ध खज़ाना मौजूद है, जो डोगरा जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। डोगरी विभाग के विभाध्यक्ष प्रो. परमेश्वरी शर्मा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की एवं धन्यवाद ज्ञापन किया।

उद्घाटन सत्र के बाद दो अकादमिक सत्रों का आयोजन किया गया जिनकी अध्यक्षता क्रमशः प्रो. चंपा शर्मा तथा प्रो. वीना गुप्ता ने की। प्रथम सत्र में डॉ. सुषमा शर्मा एवं डॉ. ओम गोस्वामी ने क्रमशः 'डोगरी लोकगीतों में नारी विमर्श' तथा 'डोगरी लोककथा में नारी विमर्श' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री मोहन सिंह ने चर्चक के रूप में भाग लिया। प्रो. चंपा शर्मा ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में पढ़े गए आलेखों पर टिप्पणी की।

(बायें से) प्रीतम कयेच, ब्रह्मदत्त, सुनीता भडवाल, रजनी बाला, अध्यक्षीय भाषण देती हुईं शशि पठानिया

दूसरे सत्र में प्रो. अशोक खजूरिया, प्रो. शिवदेव सिंह मन्हास एवं डॉ. जोगिंदर सिंह ने क्रमशः 'डोगरी लोककथा में नारी विमर्श', 'डोगरी मुहावरे व कहावतों में नारी विमर्श' तथा 'डोगरी लोक साहित्य में सती परिदृश्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तथा डॉ. जितेंद्र उधमपुरी ने चर्चा में भाग लिया।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. अर्चना केसर ने की। डॉ. पदमदेव सिंह, श्री जगदीप दूबे तथा डॉ. चंचल भसीन ने क्रमशः 'डोगरी लोकगीतों में जातिगत समीकरण', 'डोगरी लोककथाओं में जातिगत समीकरण' एवं 'डोगरी लोकगाथा में जातिगत समीकरण' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री प्रकाश प्रेमी चर्चक के रूप में सम्मिलित हुए। प्रो. केसर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पढ़े गए आलेखों की सराहना की तथा उनके लेखकों को बधाई दी।

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. शशि पठानिया ने की। इस सत्र में सुश्री सुनीता भडवाल ने 'डोगरी लोक साहित्य के धार्मिक चरित/पौराणिक चरित', श्री ब्रह्मदत्त ने 'डोगरी लोक साहित्य में वीर चरित' तथा डॉ. रजनी बाला ने 'सूचना प्रौद्योगिकी में लोक साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री प्रीतम कटोच ने चर्चक के रूप में भाग लिया। प्रो. शशि पठानिया ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में इस संगोष्ठी के आयोजन में विभाग की भूमिका की सराहना करते हुए सभी प्रतिभागियों को बधाई दी।

संगोष्ठी का समापन वक्तव्य जम्मू यूनिवर्सिटी के डीन रिसर्च स्टडीज़ प्रो. जिगर मोहम्मद ने दिया जिसमें उन्होंने लोक साहित्य और इतिहास के बीच संबंधों के महत्त्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि जम्मू क्षेत्र का लोक साहित्य बहुत समृद्ध है और प्रमुखता से मानवीय और धर्मनिरपेक्ष है। प्रो. ललित मगोत्रा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए ज़ोर देकर कहा कि कुछ बुनियादी सामाजिक और मानवीय मूल्यों के आलोक में संग्रहीत और संरक्षित किए गए लोक साहित्य के अध्ययन के लिए यह उचित समय है।

आदिवासी साहित्य और संस्कृति

19-20 नवंबर 2016, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा 'आदिवासी साहित्य और संस्कृति' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन सुरेंद्र गवास्कर हॉल, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय में 19-20 नवंबर 2016 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि अकादेमी आदिवासी साहित्य की प्रशंसा करती है और बहुत गहनता से उसकी संस्कृति से परिचित है। अकादेमी ने इस प्रकार की संगोष्ठी बेंगळूरु और पालघर ज़िला के एक छोटे से क़स्बे वाडा में भी किया है। अकादेमी अपने लोक-विविध स्वर कार्यक्रम के द्वारा आदिवासी लोकनृत्य और गीतों से श्रोताओं का परिचय कराती है। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य तथा आदिवासी आंदोलन के नेता श्री विनायक तुमराम ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि आदिवासियों को जंगल का राजा माना जाना चाहिए। नागरिक संस्कृति और आदिवासी संस्कृति के बीच एक निरंतर संघर्ष है। उन्होंने घोषणा की कि आदिवासियों ने अब अपने धर्म और संस्कृति को अपना लिया है। वरिष्ठ लेखक और शोधकर्ता श्री मोतीराज राठौर ने आदिवासियों को एक ऐसे प्राणी के रूप में वर्णित किया जो बेघर हैं और जिनका कोई धर्म नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे देश को भाषाओं के आधार पर राज्यों में विभाजित किया गया है किंतु आदिवासी चूँकि संस्कृति के बंधन में बंधे नहीं होते हैं इसलिए भारत के दूर-दराज क्षेत्रों में भी पाए जा सकते हैं। आदिवासियों ने सिंधु संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित रखा है। प्रसिद्ध आदिवासी कवि वहरु सोनवने ने अपने बीज वक्तव्य में आदिवासियों की जड़ों को तलाश करने की ज़रूरत पर बल दिया। उनका कहना था कि उनका दृढ़ विश्वास है कि जब भी धन संस्कृति होती है, मानवता समाप्त हो जाती है। उन्होंने आगे कहा कि मूलतः दो संस्कृतियाँ हैं—एक मानवतावादी संस्कृति तथा दूसरा दिखावटी संस्कृति। आदिवासियों का संबंध मानवता और समानता से है। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक भालचंद्र नेमाड़े ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि राष्ट्रीय अखंडता विदेशी तनाव के कारण खत्म हो गई है। श्री नेमाड़े ने आगे कहा कि मानव जाति अपने परिवेश की भौगोलिक राज्य से प्रभावित है। आदिवासियों के पास समृद्ध और प्राकृतिक संस्कृति है, उनके लोक और मौखिक साहित्य को

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए भालचंद्र नेमाड़े,
(बायें से) के. श्रीनिवासराव, विनय तुमराम, वहरु सोनवने, मोतिराज राठौर

विषय बनाया जाना चाहिए। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय था 'आदिवासी साहित्य : प्रेरणा-प्रपत्र और विस्तार'। सत्र की अध्यक्षता श्री विनायक तुमराम ने किया। सत्र में काशीनाथ बरहते, सुनील कुमरे और गोविंद गायकी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बरहते ने अपने आलेख में आदिवासी साहित्य के बारे में और अधिक लिखे जाने पर बल दिया। श्री सुनील कुमरे ने अपने आलेख में रेखांकित किया कि आदिवासी साहित्य मानवीय अनुभवों और प्रकृति के सिद्धांतों से प्रेरित है। गोविंद गायकी का कहना था कि आदिवासी साहित्य का मुख्य स्रोत वाचक साहित्य है। श्री विनायक तुमराम ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हिंदुओं के मुख्यधारा में शामिल होने के बाद आदिवासियों में जातिगत भेदभाव विकसित हुआ है। आदिवासी साहित्य एकता की इकाई है।

'महाराष्ट्र में आदिवासी बोलियाँ' दूसरे सत्र का विषय था तथा सत्र की अध्यक्षता किरण कुमार कवठेकर ने किया। श्री वैजनाथ अनमुलवाद ने अपने आलेख में कहा कि जैविक विविधता के रूप में आदिवासी बोलियाँ, रेगिस्तान में पानी की तरह सूख रही हैं। श्री वीर राठौर ने भी कहा कि आदिवासी बोलियाँ और संस्कृति लुप्त हो रही है। सुश्री पुष्पा भगवती ने अपने आलेख में बताया कि आदिवासी भाषा भी ईश्वर द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। आदिवासी की बड़ी भाषा गोंडी है जो विशेष रूप से महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में बोली जाती है। इस भाषा के शब्द अन्य प्रगतिशील भाषाओं में पाए जाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि गोंडी भाषा संस्कृत से भी प्राचीन भाषा है। श्री कवठेकर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में आदिवासी बोलियों के लुप्त होने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इनका विस्थापन और धर्म परिवर्तन उनके पिछड़ेपन का मुख्य कारण है, इस प्रथा की अवहेलना की जानी चाहिए।

तीसरे सत्र के दो विषय थे—'आदिवासी मौखिक परंपराएँ' और 'आदिवासी साहित्य - अस्तित्व और विद्रोह'। सत्र की अध्यक्षता श्री वहरु सोनवने ने की। विनोद कुमार ने आदिवासी मौखिक परंपराओं पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। आदिवासियों ने लिपि का विकास सामाजिक व्यवस्था और समाज की संस्कृति विकसित करने में बड़ा योगदान दिया है।

सुश्री उषा किरण अद्रम ने इस बात को दोहराया कि आदिवासी संस्कृति को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है, प्राचीन काल, मध्यकाल एवं ब्रिटिश काल। प्राचीन युग में उनके अस्तित्व को अजंता गुफाओं में प्रयोग की गई लिपि के द्वारा किया जा सकता है। अनिल साबले ने भी इसी विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि आदिवासियों का पहला काव्य-संग्रह 'वनवासी' मुजंग मेश्राम द्वारा लिखा गया था। यह साहित्य आदिवासियों के शोषण की ओर संकेत करता है।

चौथे सत्र में आदिवासी लोक गीत और नृत्य की अध्यक्षता श्री मारुति शिंदे ने की। श्री शिरीष जाधव और धननजी गुरव ने आदिवासी परिधानों और नृत्य में प्रयोग होने वाले डंडों के बारे में प्रकाश डाला। वे अपने नृत्य में देवियों के मुखौटों और जानवरों का प्रयोग करते हैं। मोखड़ा और भीली उनके प्रसिद्ध नृत्य हैं। उनके यहाँ हर अवसरों के गीत हैं।

पाँचवाँ सत्र का विषय था 'आदिवासी कला' तथा इस सत्र की अध्यक्षता बी.एम. पार्सवले ने की। मुकुंद कुले और चंदोजी गायकवाड़ ने इस विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। उनके आलेख ने आदिवासी कला को पहली और अंतिम सीमा तक पहुँचा दिया। उन्होंने कहा कि इनकी कला में नवीनतम और नवीनीकृत तकनीक का अभाव है और परंपराओं और प्रकृति पर आधारित है। वे चित्रकारी के लिए दीवारों और पत्थरों का प्रयोग करते हैं। वे अपने घरों को अपनी चित्रकारी से और बड़े पैमाने पर रेखाचित्रों से सजाते हैं। श्री पार्सवले ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कला साहित्यिक संस्कृति में विचित्र है। कला ज्ञानवर्द्धक नहीं होती और अभिव्यक्ति की उसकी सीमाएँ हैं। आदिवासी कला में किसी भी रंग का अर्थ नहीं होता है। इनके चित्र और प्रतीक विकृत होते हैं। आदिवासी कला की तुलना आधुनिक कला से की जा सकती है।

संगोष्ठी का छठा और अंतिम सत्र' वैश्वीकरण और आदिवासी संस्कृति' विषय पर था जिसकी अध्यक्षता हेमंत खड़के ने की। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि आदिवासियों के जीवन और उनकी संस्कृति को और ज़्यादा नुक़सान हो रहा है। उन्होंने कहा कि आदिवासी संस्कृति और उनके मूल्यों को बहाल किया जाना चाहिए। श्री राजेंद्र गोनारकर और श्री पीतांबर कोडपे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि आदिवासी संस्कृति और उसके महत्त्व को संरक्षित करने में वैश्वीकरण मुख्य बाधा है। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

तमिळ साहित्य की आलोचना, सिद्धांत और दृष्टिकोण : प्राचीन और आधुनिक

23-24 नवंबर, 2016 तंजावुर

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा तमिळ यूनिवर्सिटी तजांवुर के साहित्य विभाग के सहयोग से 'तमिळ साहित्य की आलोचना, सिद्धांत और दृष्टिकोण : प्राचीन और आधुनिक' विषयक संगोष्ठी का आयोजन यूनिवर्सिटी के सिनेट हॉल में दिनांक 23-24 नवंबर, 2016 को किया गया। कार्यालय प्रभारी श्री ए. एस. इलंगोवन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा तमिळ साहित्य में आलोचना की परंपरा के बारे में विस्तार से बताया। अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य डॉ. आर. कामारासु ने आरंभिक

बीज वक्तव्य देते हुए श्री एस. रामकृष्णन

वक्तव्य दिया। तमिळ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. जी. भास्करन ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने दर्शन, साहित्य और आलोचना के अंतर्संबंधों के बारे में बात की। तमिळ यूनिवर्सिटी के कुल सचिव श्री एस. मुथुकुमार ने गर्मजोशी से प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध तमिळ लेखक श्री एस. रामकृष्णन ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि आलोचना के पास स्वयं के अस्तित्व की क्षमता है। साहित्यिक सिद्धांतों में तमिळ व्याकरण का सबसे पुराना काम 'तोलकप्पियम' माना जाता है। उन्होंने कहा कि हमारे समाज में साहित्य को अद्वितीय माना जाता है। तमिळ यूनिवर्सिटी के साहित्य विभाग की प्रो. के. तिलकावती के धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस. वी-शानमुगम ने की। उन्होंने 'साहित्यिक आलोचना का भाषायी दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. इंद्रा मैनुवल ने 'आगम-पुरम सिद्धांत : उद्भव और विकास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. वाय. मनिकनंदन ने 'आलोचनात्मक सिद्धांत' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. भक्तवत्सला भारती ने की और 'मानवविज्ञान साहित्यिक आलोचना' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मानव विज्ञान के अध्ययनों ने द्रविडियन जातियता पर हमारे विचारों को पुनर्परिभाषित करने के लिए रास्ता बनाया था। प्रो. वी. आनंदकुमार ने 'साहित्यिक आलोचना के उत्तर-औपनिवेशिक तत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. आर. मुराली ने 'साहित्यिक आलोचना के दार्शनिक दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने 'दर्शन' और 'विचारधारा' की अवधारणा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस. थोतायरी ने की तथा 'मार्क्सवादी साहित्यिक आलोचना' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने मार्क्सवाद और मार्क्सवादी साहित्य की अवधारणा की व्याख्या की। प्रो. दुरई सीनीसामी ने 'साहित्यिक आलोचना का सामाजिक दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. आर. थियागराजन ने 'संस्कृत और तमिल-साहित्यिक सिद्धांत' और प्रो. आर. मनोहरण ने 'थिनाई सिद्धांत और तमिळ व मलयाळम् में आधुनिक साहित्यिक आलोचना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. पंजंगम ने की और उन्होंने तमिळ की साहित्यिक आलोचना के इतिहास के बारे में बात की। डॉ. आर. संबंथ ने 'साहित्य और साहित्यिक आलोचना के सिद्धांत' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री एच.जी. रजूल ने 'उत्तर आधुनिक आलोचनात्मक सिद्धांत और तमिळ साहित्यिक आलोचना' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने तमिळ कविता और गद्य के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता के साहित्यिक परिवर्तन के बारे में बात की। प्रो. स्टालिन राजगम ने 'आधुनिक तमिळ साहित्यिक आलोचना और दलित दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. अरंगा मल्लिका ने 'आधुनिक साहित्यिक आलोचना और नारीवादी दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. ए. दक्षिणामूर्ति ने की और समापन वक्तव्य प्रो. पी. मरुथनक्यम ने दिया। उन्होंने तमिळ साहित्यिक सिद्धांतों की तुलना पाश्चात्य साहित्यिक सिद्धांतों से की और वैश्विक साहित्य में तमिळ साहित्य व आलोचना का स्थान निर्धारित किया। तमिल यूनिवर्सिटी के तमिळ विभाग के प्रो. रविचंद्रन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'अख़्तरुल ईमान : पुनर्पाठ' जन्मशतवार्षिकी

26-27 नवंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा अकादेमी के सभागार में 'अख़्तरुल ईमान : पुर्नपाठ' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 26-27 नवंबर 2016 को किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. नारंग ने कहा कि बचपन का असर अख़्तरुल ईमान की शायरी पर

स्पष्ट है। अख़्तरुल ईमान ने अस्तित्व की स्थिति और वक़्त की अहमियत को समझा, उनकी लगभग हर नज़्म में वक़्त की कल्पना मौजूद है। उन्होंने आगे कहा कि किसी अच्छी शायरी को अपने पूरे वजूद के साथ समझे बिना आनंदित नहीं हुआ जा सकता। विशेष व्याख्यान देते हुए प्रो. शाफ़े क़िदवई ने कहा कि अख़्तरुल ईमान की शायरी मानवीय जीवन के विरोधाभास का किसी केंद्रीय संदर्भ को नष्ट किए बिना प्रस्तुत करती है। अपने बीज वक्तव्य में प्रो. अनीस अशफ़ाक़ ने कहा कि अख़्तरुल ईमान ने अपनी शायरी के सर्वज्ञ होने की बात बार-बार दुहराई है। उन्होंने कहा एक अख़्तरुल ईमान की शायरी पर वक़्त, वजूद, यादआवरी हावी है। साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. मौला बख़्श ने अकादेमी की ओर से सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

संगोष्ठी के पहले सत्र की अध्यक्षता नेशनल कौंसिल फ़ॉर प्रोमोशन ऑफ़ उर्दू लैंग्वेज के निदेशक प्रो. इर्तिज़ा करीम ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री करीम ने कहा कि मेरे नज़दीक अख़्तरुल ईमान एक महत्त्वपूर्ण शायर हैं। उनकी शायरी ने एक शाहराह की हैसियत स्थापित कर ली है। इस सत्र में तीन आलेख पढ़े गए। डॉ. शाइस्ता यूसुफ़ ने 'अख़्तरुल ईमान का फ़न और आम क़ारी', डॉ. हुमायूँ अशरफ़ ने 'अख़्तरुल ईमान : इस आबाद ख़राबे की रौशनी में', और डॉ. रज़ा हैदर ने 'अख़्तरुल ईमान की अलामती नज़्में' शीर्षक से अपने आलेख प्रस्तुत किए। शाइस्ता यूसुफ़ ने कहा कि अख़्तरुल ईमान ने नज़्मों की शायरी के कई दरीचों को खोला है। उनकी नज़्मों के किरदार साधारण पाठक के मन-मस्तिष्क से चिपक कर रह गए हैं। डॉ. हुमायूँ अशरफ़ ने कहा कि आत्मकथा घटनाओं की मात्र खतौनी नहीं होती बल्कि मानवीय कर्म चिंतन के अंदर तक जाती है। अख़्तरुल ईमान की आत्मकथा अपने पाठकों के ज़ेहनों के दरीचों में झाँकती है। डॉ. रज़ा हैदर ने कहा कि अख़्तरुल ईमान की शायरी का अधिकतर अंश यादों पर आधारित है। सत्र का संचालन डॉ. मौलबख़्श ने किया। सत्र के अंत में अकादेमी द्वारा निर्मित अख़्तरुल ईमान पर वृत्तचित्र भी प्रदर्शित की गई। संगोष्ठी के दूसरे दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अली अहमद फ़ातमी ने कहा कि बिना कोई लेबल लगाए आज के संदर्भ में अख़्तरुल ईमान को समझने की ज़रूरत है। उन्होंने आगे कहा कि अख़्तरुल ईमान प्रगतिशील होते हुए भी फ़ैशनपरस्त प्रगतिशील गिरोह से अलग रहे।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. गोपी चंद नारंग, साथ में सचिव, साहित्य अकादेमी डॉ. के. श्रीनिवासराव

अख़्तरुल ईमान एक ख़ास मिज़ाज के शख़्स व शायर थे जिनका ख़मीर तन्हाई से उठा था। प्रो. मुहम्मद ज़ाकिर ने अपने आलेख में कहा कि अख़्तरुल ईमान ने आज़ाद नज़्म से उसकी प्रासंगिकता और वैचारिक महत्त्व से अलग नहीं किया। उनकी शायरी भी दूसरे शायरों की तरह अपने आसपास और कुछ वैश्विक परिस्थितियों और उनसे उत्पन्न मानसिक स्थिति या प्रतिक्रिया की शायरी है। इस सत्र में इक़बाल मसूद ने 'अख़्तरुल ईमान का तसव्वुरे इंसान', डॉ. अजय मालवी ने 'अख़्तरुल ईमान की मतरुका नज़्में' और डॉ. वसीम बेगम ने 'अख़्तरुल ईमान की नज़्म *एक लड़का* के हवाले से' शीर्षक से अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन के दूसरे सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. इब्ने कँवल ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. कँवल ने कहा कि ज़िंदा रचना वही होती है जो रचनाकार के बिना भी जिंदा रहती है। अख़्तरुल ईमान एक ज़िंदा रचनाकार हैं। इस सत्र में प्रो. मुहम्मद ज़ाकिर, प्रो. शहज़ाद अंजुम और प्रो. कौसर मज़हरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. शहज़ाद अंजुम ने कहा कि अख़्तरुल ईमान के रचनात्मक रवैये में अतीत की पुनरावृत्ति, धरती से गहरा लगाव, मूल्यों का रख-रखाव और दर्दमंदी का भरपूर समावेश है। प्रो. कौसर मज़हरी का आलेख नौशाद मंज़र ने प्रस्तुत किया। इस आलेख में कहा गया था कि जब हम अख़्तरुल ईमान की नज़्में पढ़ते हैं तो अंदाज़ा होता है कि सचमुच वह 'गुज़रान' ही है जिसके क्षणों को शायर ने शब्दों के रूप में ढाला है।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता करते हुए जनाब निज़ाम सिद्दीक़ी ने कहा कि अख़्तरुल ईमान ने अपनी आरंभिक बड़ी नज़्मों 'अपाहिज गाड़ी का आदमी', 'कूज़ागर', 'अज़्म', 'नया शहर', 'यादें', 'एक लड़का' आदि में अलग और नई तकनीक का भरपूर इस्तेमाल किया। इस सत्र में प्रो. मौला बख़्श ने 'उर्दू की तवील नज़्मों में अख़्तरुल ईमान की इन्फ़रादियत',

प्रो. साहब आली ने 'अख़्तरुल ईमान की इश्क़िया शायरी' और सैफ़ी सरौंजी ने 'अख़्तरुल ईमान का फ़न' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. मौला बख़्श ने कहा कि तवील नज़्मों (लंबी कविताओं) के काव्यशास्त्र को अख़्तरुल ईमान ने जिस ख़ूबसूरती से पेश किया इसका सबूत नज़्म 'सबरंग' है। तवील नज़्म के प्रथम मार्गदर्शन का सेहरा सरदार जाफ़री के सिर नहीं बल्कि अख़्तरुल ईमान के सिर है। प्रो. साहब अली ने कहा कि अख़्तरुल ईमान की नज़्मों की एक विशेषता यह भी है कि यह इश्क़िया जज़्बात के इज़हार के लिए रोज़मर्रा और बोलचाल के लफ़्ज़ों का इस्तेमाल करते हैं। सैफ़ी सरौंजी ने कहा कि अख़्तरुल ईमान इस मायने में सबसे बड़े यथार्थवादी मालूम होते हैं। अंत में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने समस्त सहभागियों एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। दोनों दिन संगोष्ठी में शोध छात्र, अध्यापक, लेखक, कवि एवं विद्वान भारी संख्या में उपस्थित थे।

मिथक और आधुनिक भारतीय साहित्य

5-6 दिसंबर 2016, मजुली, असम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा श्री श्री उत्तर कमलाबारी सत्र संकरदेव कृष्टि संघ, मजुली, असम में दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 5-6 दिसंबर 2016 को किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि पौराणिक कथा किस प्रकार मानव समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है और जैसे जैसे समय गुज़रता है नई कहानियों का समावेश कर उसका विस्तार करती है। डॉ. कर्बी डेका हज़ारिका ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि किस प्रकार संकरदेव ने सत्रा संस्थान का निर्माण कर राष्ट्रीय संस्कृति के संरक्षण और विकास और असमिया समाज व संस्कृति के गठन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. भालचंद्र नेमाड़े ने अपने वक्तव्य में मानव जीवन में कला के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किस प्रकार असम और मजुली कला के संरक्षण और विस्तार में एक प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गेहूँ मिथक की परिभाषा हो सकती है क्योंकि मिथक की एक उचित और सटीक परिभाषा देना मुश्किल है। उन्होंने कई व्यक्तियों एवं साहित्यिक रचनाओं के उदाहरण दिए जिन्होंने इस विषय पर काम किया है। कन्नड भाषा के लेखक श्री एच. एस. शिव प्रकाश ने भी उदाहरणों के साथ अपने विचार व्यक्त किए। डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर जादब बोहरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम अकादमिक सत्र की अध्यक्षता श्री चंद्रप्रकाश देवल ने की। श्री विकास कुमार झा ने 'आधुनिक काव्य में मैथिली की पुराणिक मिथकीय आख्यान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मिथक बहस और तर्क से परे है। सुश्री अनुराधा शर्मा ने 'असमिया साहित्य में पौराणिक उपन्यास : संतनामयी और मालिनी द्वारा यज्ञ सेनी के संदर्भ में एक अध्ययन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि किस प्रकार असमिया के कवियों ने कथित तौर पर मिथकों का प्रयोग किया है, जो पहले से ही उनकी कविता के दूसरे पुराने पाठ में वर्णित है।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एच. बिहारी सिंह ने की। इस सत्र में श्री ठा. रतन कुमार ने 'मणिपुरी साहित्य में मिथक का प्रयोग' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री मनप्रसाद सुब्बा ने 'मिथकः आधुनिक भारतीय नेपाली साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार आधुनिक नेपाली साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में मिथक का प्रयोग किया है।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. राम कुमार मुखोपाध्याय ने की। श्री रूपचंद हांसदा ने संताली साहित्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री कौस्तुभ डेका ने 'पौराणिक असमिया नाटक : प्रतिनिधित्व, पहचान और स्मृति के मुद्दे' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने पाश्चात्य चिंतकों के उदाहरण से अपने तर्क को स्थापित किया।

चौथे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के साधारण सभा की सदस्या श्रीमती अरूपा बरुआ ने की। मृदुल बरदोलोई ने 21वीं सदी के भारतीय अंग्रेज़ी कथा में मिथक की प्रासंगिकता पर व्याख्यान दिया। सुश्री स्वर्ण प्रभा चैनरी ने आधुनिक बोडो साहित्य में पौराणिक कथाओं पर बात की।

समापन सत्र में मजुली के उपायुक्त श्री पल्लव गोपाल झा तथा मजुली कॉलेज के प्राचार्य देबाजीत सइकिया, संकरदेव कृष्टि संघ के सचिव श्री बसंत नियोग उपस्थित थे। श्री पल्लव गोपाल झा ने इतने महत्त्वपूर्ण आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री देबाजीत सइकिया ने कहा कि इस संगोष्ठी में उपस्थित होकर मैं धन्य महसूस कर रहा हूँ।

संगोष्ठी –आदिवासी भाषा और संस्कृति

07-08 दिसंबर 2016, वायानाडु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा इंस्टीट्यूट ऑफ़ ट्राइबल एंड रिसर्च सेंटर यूनिवर्सिटी ऑफ़ कालिकट, वायानाडु के सहयोग से 7-8 दिसंबर 2016 को 'आदिवासी भाषा और संस्कृति' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन यूनिवर्सिटी परिसर में किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। संगोष्ठी का उद्घाटन कालिकट यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. के. मुहम्मद बशीर ने किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री के.पी. रामानुन्नी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। प्रसिद्ध दलित लेखक नारायण ने बीज वक्तव्य दिया। इंस्टीट्यूट ऑफ़ ट्राइबल एंड रिसर्च सेंटर की निदेशक डॉ. पुष्प लता ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रतिष्ठित अकादमिक विद्वानों एवं आदिवासी विशेषज्ञों ने विभिन्न विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। विद्वान जैसे कुमारन वायालेरी, पी.जी. पद्मिनी, के. एस. माधवन, पी. वी. मिनी, सोमनाथन, राजेंद्रन एदाथुमकरा, आर. वी.एम. दीवाकरण, राजू के.वसू, चेरु वायल रमन, करियान, वेलायुधान, पी. वसु ने अपने विचार व्यक्त किए। विभिन्न आदिवासी समुदायों के आदिवासी छात्र मुख्य रूप से श्रोता थे।

नरेंद्रनाथ मित्र जन्मशतवार्षिकी

15-16 दिसंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक नरेंद्रनाथ मित्र जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 15-16 दिसंबर 2016 को अकादेमी के सभागार में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने नरेंद्रनाथ मित्र के जीवन और साहित्यिक यात्रा के बारे में संक्षेप में बात की। प्रसिद्ध बाङ्ला साहित्यकार श्री दिव्येंदु पालित ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में नरेंद्रनाथ मित्र के साहित्यिक अवदान को रेखांकित किया। प्रसिद्ध समालोचक सुश्री रुस्ती सेन ने कहा कि नरेंद्रनाथ ने अपने व्यक्तित्व को अलग कर अपने रचनात्मक काम पर ध्यान दिया। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने की।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजशास्त्री एवं नरेंद्रनाथ मित्र के पुत्र अभिजीत मित्र ने की। श्री अमरेंदु चक्रवर्ती और तपस ने 'नरेंद्रनाथ मित्र और उनका समय' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री संदीप बंद्योपाध्याय ने की। श्री आलोक कुमार चक्रवर्ती एवं तपन बंद्योपाध्याय ने 'कथा लेखन : विभाजन और शरणार्थी समस्या' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के तुरंत बाद जबकि विभाजन और शरणार्थी समस्या ज्वलंत विषय थे, को नरेंद्रनाथ ने अपनी कहानियों में चित्रित किया। तपन बंद्योपाध्याय ने कहा कि यद्यपि नरेंद्रनाथ बांग्लादेश में पैदा हुए किंतु विभाजन के समय कोलकाता में रह रहे थे। विभाजन का दंश उनके लेखन में दिखाई देता है।

संगोष्ठी के तीसरे सत्र की अध्यक्षता बरदवान विश्वविद्यालय की प्रोफ़ेसर सुमिता चक्रवर्ती ने की। सुश्री सुमिता भट्टाचार्य ने 'नरेंद्रनाथ के कथा साहित्य में महिला' विषय पर अपना लेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री गोपादत्त भौमिक ने की। सुश्री पुर्णिमा साहा और शेखर बसु ने 'नरेंद्रनाथ के कथा साहित्य में मध्यम वर्ग का जीवन' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। पुर्णिमा साहा ने नरेंद्रनाथ की कहानियों में महिलाओं के सीमित अधिकार के बारे में बात की। शेखर बसु ने नरेंद्रनाथ की कहानियों में मध्यमवर्ग की उपस्थिति के बारे में बात की।

पाँचवें सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध बाङ्ला कथाकार अबुल बशर ने की। श्रवणी पॉल एवं तमल बंद्योपाध्याय ने नरेंद्रनाथ की कहानियों में कहानी के अंदर कहानी बुनने के गुण के बारे में बात की। तमल बंद्योपाध्याय ने कहा कि नरेंद्रनाथ की कहानी लेखन की कला कहानी कला को छुपाने में निहित है, कि कहानी कैसे बुनी जा रही है।

छठे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक सिलादित्य सेन ने की तथा मानस घोष ने 'नरेंद्रनाथ की कहानी और फिल्म' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्रीसेन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सत्यजीत रे को संदर्भित करते हुए कहा कि उन्होंने नरेंद्रनाथ की कहानी 'अवतर्निका' का फिल्म रूपांतर 'महानगर' नाम से किया था। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी समाप्त हुई।

वर्ण रत्नाकर का महत्त्व एवं उपादेयता

17-18 दिसंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 'वर्ण रत्नाकर का महत्त्व एवं उपादेयता' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 17-18 दिसंबर 2016 को अकादेमी सभागार, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात मैथिली एवं हिंदी विद्वान प्रो. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता ने की। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने 'वर्ण रत्नाकर' में उल्लिखित मिथिला के तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक वैशिष्ट्य पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा कहा कि कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर की यह कृति वस्तुतः मिथिला के मध्ययुगीन समाज, सामाजिक और शासन व्यवस्था का आईना है। संगोष्ठी का बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रतिष्ठित मैथिली नाट्यकार श्री महेंद्र मलंगिया ने ज़ोर देकर कहा कि 'वर्ण रत्नाकर' की मौलिकता को क़ायम रखते हुए इसकी व्याख्या की जानी चाहिए। उन्होंने इस पर और अधिक शोध किए जाने की आवश्यकता बताई।

इस अवसर पर विषय प्रवर्तन करते हुए अकादेमी में मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने कहा कि यह मैथिली साहित्य के लिए निश्चय ही गौरव का विषय है कि कविशेखर ज्योतिरीश्वर रचित 'वर्ण रत्नाकर' समस्त भारतीय भाषाओं के बीच आदि गद्य-ग्रंथ के रूप में समादृत है। आरंभ में क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल चंद्र वर्मन ने औपचारिक स्वागत करते हुए यह उम्मीद व्यक्त की कि भारतीय भाषाओं के प्रथम गद्य-ग्रंथ पर चर्चा के बहाने एक सार्थक विमर्श संभव हो पाएगा, जिसे अकादेमी पुस्तकाकार भी प्रकाशित करेगी। सत्रांत में मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य श्री कामदेव झा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र वरिष्ठ मैथिली लेखक एवं संपादक श्री राजनंदन लाल दास की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री ताराकांत झा और डॉ. रामनरेश सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री झा ने वर्ण रत्नाकर की रचना अवधि और इसके साहित्यिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालते हुए आह्वान किया कि इसके अनुपलब्ध अंशों का भी अन्वेषण किया जाना चाहिए। डॉ. सिंह ने वर्ण रत्नाकर में उपस्थित काव्य लक्षणों को दर्शाया तथा इसकी काव्य-उपादेयता की चर्चा की।

बायें से : सुकांत सोम, वीणा ठाकुर, रमानंद झा रमन, अशोक झा एवं इंदिरा झा

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री श्याम दरिहरे ने की, जिसमें डॉ. नरेश मोहन झा, श्री अमलेंदु शेखर पाठक एवं डॉ. योगानंद झा ने आलेख वाचन किया। डॉ. नरेश मोहन ने वर्ण रत्नाकर की विषयवस्तु तथा श्री पाठक ने वर्ण रत्नाकर में चित्रित ग्राम्य जीवन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए, जबकि डॉ. योगानंद झा ने कांचीनाथ झा किरण की मान्यताओं के आलोक में वर्ण रत्नाकर पर अपने विचार रखे।

तृतीय सत्र श्री सुकांत सोम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्रीमती इंदिरा झा, श्री अशोक झा और श्री रमानंद झा 'रमण' ने अपने आलेख पढ़े। इंदिरा झा ने 'वर्ण रत्नाकर में चित्रित समाज' और श्री अशोक झा ने 'वर्ण रत्नाकर में वर्णित मिथिला की संस्कृति' विषयक आलेख प्रस्तुत किए। श्री रमण ने अपने आलेख में वर्ण रत्नाकर के संबंध में सुनीति कुमार चटर्जी, बबुआजी मिश्र एवं रमानाथ झा के चिंतन और मान्यताओं का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी का चतुर्थ एवं अंतिम सत्र श्री शिवचंद्र झा की अध्यक्षता में आयोजित हुआ, जिसमें श्री पंचानन मिश्र, डॉ. अशोक अविचल, श्री रामलोचन ठाकुर और डॉ. कमल मोहन चुन्नू ने अपने आलेखों का पाठ किया। श्री मिश्र ने 'वर्ण रत्नाकर' के अब तक प्रकाशित विविध संस्करणों की विशिष्टताओं को रेखांकित किया, वहीं श्री ठाकुर ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से परवर्ती साहित्य पर 'वर्ण रत्नाकर' के प्रभाव को दर्शाया। डॉ. अविचल ने भाषा विज्ञान की दृष्टि से 'वर्ण रत्नाकर' की महत्ता को स्पष्ट किया, वहीं डॉ. चुन्नू ने 'वर्ण रत्नाकर' पर संस्कृत साहित्य के प्रभाव पर बात की

कोंकणी में लोक साहित्य

17-18 दिसंबर 2016, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा गोवा सरकार के डायरेक्टरेट ऑफ़ आर्ट एवं

बायें से : पायनूर रमेश पै, लुईस रोड्रिग्स, पांडुरंग फलदेसाय, पॉल मोरेस एवं जयंती नाइक

कल्चर के सहयोग से कोंकणी में लोक साहित्य विषयक संगोष्ठी का आयोजन 17-18 दिसंबर, 2016 को संस्कृति भवन, गोवा के लेक्चर हॉल में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि लोक साहित्य हमारी सांस्कृतिक विरासत थी और इसने हमारे संस्कृति को समृद्ध किया है। आर्ट एंड कल्चर के डायरेक्टर श्री प्रसाद लोलेकर ने अपने आरंभिक वक्तव्य में इस आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री विनायक खांडेकर ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि लोक साहित्य सामूहिक मानव की सुंदर अभिव्यक्ति थी और गायन उसकी आत्मा थी। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय विविधता लोक साहित्य की विशेषता थी, यहाँ तक कि गोवा में भी इस विविधता को देखा जा सकता है। श्री खांडेकर ने आगे कहा कि लोकसाहित्य जीवन को परिलक्षित बुद्धि प्रदान करता है और एक ही समय में उत्कृष्ट बौद्धिक मनोरंजन उपलब्ध कराता है।

अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हर्लंकर ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि कला के अन्य साहित्यिक प्रस्तुतियों से अभिव्यक्ति के विषयों और शैलियों में लोक साहित्य का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने आगे कहा कि यह हमारा लोकसाहित्य था जिसने हमारा परिचय कथात्मक तकनीक से कराया। साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती हेमा नायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'कोंकणी में लोक साहित्य : क्षेत्रीय विविधता' की अध्यक्षता श्री पांडुरंग फलदेसाय ने किया। श्री पायनूर रमेश पै, श्री लुईस रोड्रिग्स, श्री पॉल मोरेस, सुश्री जयंती नाइक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री पै ने केरल में कोंकणी लोक साहित्य के बारे में बात की। जीवनयापन के लिए उस समय केरल से देशांतरण के पश्चात् कोंकणी लोगों के लिए भाषा और साहित्य गौण हो गया था। उन्होंने आगे कहा कि लोक साहित्य एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक केवल यात्रा द्वारा ही जीवित रहती है और यह केरल में नहीं हुआ।

श्री रोड्रिग्स ने घाटमठ क्षेत्र में लोक साहित्य विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। घाटमठ क्षेत्र में गोवा के उत्तर और पूर्व क्षेत्र तथा कोल्हापुर से कर्नाटक के क्षेत्र आते हैं। श्री पॉल मोरेस ने मंगलोर क्षेत्र के लोक साहित्य के बारे में बात की और बताया कि ये किस प्रकार ईसाइयत और पुर्तगीज़ सभ्यता से प्रभावित हुए।

सुश्री नाइक ने गोवा की कुनाकणी लोक साहित्य के बारे में बात करते हुए कहा कि नान आर्यन और नान वैदिक कोंकणी साहित्य के जनक थे।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री एडवर्ड डीलिमा ने की। श्री संजय तलवाडकर ने अपने आलेख में कोंकणी लोक कथाओं से संबंधित मुहावरों, वाक्यांशों और असंख्य दंतकथाओं की चर्चा की। सुश्री सुनीता कानेकर और श्री पूरानंदचारी ने कोंकणी लोकगीत और कोंकणी नाटकों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री महाबलेश्वर सैल ने की। डॉ. प्रियदर्शिनी ताडकोदकर ने 'कोंकणी लोक साहित्य में पुरुषों का चित्रण' विषय पर, श्री सतीश दलवी ने 'कोंकणी लोक साहित्य में भगवान और नियति की अवधारणा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री उदय भेंब्रे ने की। श्री नारायण देसाई ने '16वीं शताब्दी में कोंकणी में महाभारत' तथा श्री एस. एम. बोर्जेस ने '16वीं शताब्दी में कोंकणी में रामायण' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सत्र के तुरंत बाद लोक-विविध स्वर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्री जॉन फर्नांडीस एवं उनके सहयोगी कलाकारों द्वारा कोंकणी क्रिश्चियन कुनाबी लोगों का विशिष्ट लोकनादी (मांद), लोकनृत्य और संगीत प्रस्तुत किया गया। श्री फर्नांडीस ने कहा कि इस नृत्य, संगीत और परिधान में पुर्तगाली, ईसाइ और हिंदू संस्कृति का संयोजन था। उन्होंने आगे कहा कि प्रतियोगिता की इस दौड़ में प्रदर्शन कला मर रही है।

नारी चेतना एवं अस्मिता

नारी चेतना

6 नवंबर 2016, गांतोक, सिक्किम

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य परिषद्, गांतोक (सिक्किम) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नारी चेतना' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत भारतीय नेपाली की पाँच महिला कवयित्रियों के कविता पाठ का आयोजन 6 नवंबर 2016 को गांतोक, सिक्किम में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिष्ठित नेपाली लेखिका श्रीमती शांति छेत्री ने की। उन्होंने परिवार एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नारी की विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्हें सर्वत्र प्रोत्साहित करने की ज़रूरत पर बल दिया। सत्र में श्रीमती अप्सरा दाहाल, सुश्री दीपा राई एवं सुश्री स्निग्धा बस्नेत ने अपनी कविताओं का पाठ किया। पठित कविताओं में परिवार एवं समाज में नारी की स्थिति, उनके समक्ष की समस्याओं और चुनौतियों के चित्रण के साथ-साथ उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया था। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मणिका शर्मा ने किया। श्रीमती मणिका शर्मा और श्रीमती शांति छेत्री ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। अंत में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

बायें से : शांति क्षेत्री, अप्सरा दाहाल, दीपा राई एवं स्निग्धा बस्नेत

नारी चेतना

26 नवंबर 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 26 नवंबर 2016 को भुवनेश्वर में ओड़िया लेखिकाओं एवं समाज सेविकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौर हरिदास ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा नारी चेतना कार्यक्रम के महत्त्व को रेखांकित किया। आशा कार्यकत्री जमुनामनि सिंह, पर्वतारोही कल्पना दाश, शास्त्रीय गायिका प्रो. मिताली चिनारा, प्रसिद्ध अभिनेत्री, निर्देशक समिता मोहंती, एवं प्रसिद्ध समाजिक कार्यकत्री, शिक्षाविद् श्रुति महापात्रा ने कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने श्रोताओं के साथ अपनी भावना, व्यथा, परमानंद और अनुभवों को साझा किया।

आशा कार्यकत्री जमुनामनि सिंह ने कहा कि दृढ़ शक्ति, सकारात्मक सोच, और कड़ी मेहनत से हमें सफलता मिलती है। एवरेस्ट पर्वतारोही कल्पना दाश ने एवरेस्ट पर दो बार चढ़ने की असफलता व सफलता की कहानी बताई। शास्त्रीय गायिका एवं उत्कल यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र की प्रोफ़ेसर मिताली चिनारा ने कहा कि एक महिला को हमारे समाज में कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। हमारी संवेदना अभी तक बदली नहीं है।

मंच निर्देशिका एवं अभिनेत्री समिता मोहंती ने अपने आरंभिक जीवन के संघर्ष के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि सफलता पाने का कोई शार्टकट नहीं है। कठिन परिश्रम ही सफलता प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता है। सामाजिक कार्यकत्री श्रुति महापात्रा जो कि दिव्यांगों के लिए कार्य करती हैं और शिक्षाविद् हैं, ने कहा कि कैसे उन्होंने समाज में सम्मान प्राप्त किया और प्रतिकूल परिस्थितियों से अपनी क्षमताओं में आत्म विश्वास प्राप्त होता है।

श्री पितबास राउतरे ने प्रतिभागियों का परिचय कराया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अस्मिता

25 नवम्बर 2016, संबलपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 25 नवंबर 2016 को संबलपुर में अस्मिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री कृष्ण चंद्र प्रधान ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सुश्री अमिता साहू, गरिमानाथ ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सुश्री मौसुमी दास एवं सावित्री पुरोहित ने अपनी कहानियों का पाठ किया। श्री डौंगा स्वांकर पांडा ने पढ़ी गई रचनाओं की समीक्षा की। श्री द्वारकानाथ नायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद

भारतीय नेपाली कविता एवं कहानी के सौ वर्ष

5 नवंबर 2016, जोरथाङ

साहित्य अकादेमी द्वारा सृजनशील साहित्य लेखक मंच, जोरथाङ (सिक्किम) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय नेपाली कविता एवं कहानी के सौ वर्ष' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 5 नवंबर 2016 को जोरथाङ में किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रतिष्ठित नेपाली साहित्यकार श्री शंकर देव ढकाल ने किया। सत्र की अध्यक्षता सृजनशील साहित्य लेखक मंच के सभापति श्री टीका गुरुङ ने की। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए उपस्थित श्रोताओं को साहित्य अकादेमी की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए अकादेमी में नेपाली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने भारतीय नेपाली भाषा में कविता और कहानी के आरंभ तथा विकासक्रम के बारे में अपने विचार रखे। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री टीका गुरुङ ने जोरथाङ में अकादेमी द्वारा पहली बार किए जाने वाले इस कार्यक्रम के लिए आभार प्रकट किया। सत्रांत में सृजनशील साहित्य लेखक मंच के सचिव श्री सेसिल मुखिया ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद का विचार सत्र डॉ. कृष्णराज घतानी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें सर्वश्री जय कैक्टस, मन नारायण प्रधान, विमल राई एवं सुकराज दियाली ने क्रमशः 'भारतीय नेपाली कहानी की विकास यात्रा : एक सर्वेक्षण', 'भारतीय नेपाली साहित्य में युद्ध कथाएँ', 'भारतीय नेपाली कविता की विकास यात्राः एक सर्वेक्षण' तथा 'भारतीय नेपाली कविता में राष्ट्रीय भावना' विषयक अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. घतानी ने प्रस्तुत आलेखों का समाहार प्रस्तुत करते हुए कहा कि गोरखा जाति अपनी साहस और वीरता के लिए जानी जाती है, इसलिए स्वाभाविक है कि संबंधित भावनाओं की अभिव्यक्ति नेपाली कविता एवं कहानी में प्रमुखता से हुई है।

भारतीय नेपाली साहित्य में नव लेखन

6 नवंबर 2016, गांतोक, सिक्किम

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य परिषद्, गांतोक (सिक्किम) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय नेपाली साहित्य में नव लेखन' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 6 नवंबर 2016 को गांतोक, सिक्किम में किया गया। परिसंवाद के मुख्य अतिथि प्रख्यात नेपाली साहित्यकार श्री सानु लामा थे। आरंभ में स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा लेखकों के लिए चलाई जा रही योजनाओं के बारे में बताया। अपने आरंभिक वक्तव्य में नेपाली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने भारतीय नेपाली साहित्य में युवाओं के रुझान पर संतोष प्रकट किया तथा कहा कि जो भी अवसर उन्हें प्राप्त हो रहे हैं, उनका लाभ उठाने के लिए उन्हें तत्पर रहना चाहिए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए नेपाली साहित्य परिषद के अध्यक्ष श्री रुद्र पौड्याल ने कहा कि युवाओं को साहित्य पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरित किए जाने की भी ज़रूरत है। सत्रांत में अकादेमी के नेपाली भाषा परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रद्युम्न श्रेष्ठ ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद का प्रथम सत्र प्रो. प्रतापचंद्र प्रधान की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में डॉ. राजकुमार छेत्री, श्री प्रवीण राई 'जुमेली' एवं श्री सपन प्रधान ने क्रमशः भारतीय नेपाली कहानी, उपन्यास और कविता के क्षेत्र में नवलेखन को रेखांकित और मूल्यांकित करने का प्रयत्न किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. अर्जुन प्रधान ने की, जिसके अंतर्गत डॉ. गीता छेत्री और श्री ज्ञानबहादुर छेत्री ने क्रमशः बालसाहित्य तथा आलोचना के क्षेत्र में युवा लेखकों की उपस्थिति पर अपने विचार रखे।

(बायें से बैठे हुए) रुद्र पौड्याल, देवेंद्र कुमार देवेश, प्रेम प्रधान एवं सानु लामा

विद्वानों ने विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों और शैलियों के आलोक में भारतीय नेपाली युवा लेखन का आकलन करते हुए उनकी संभावनाओं का मूल्यांकन किया।

आंध्र पत्रिका का साहित्यिक योगदान

6 नवंबर 2016, विजयवाड़ा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा कृष्णा यूनिवर्सिटी और कृष्णा डिस्ट्रिक्ट राइटर्स एसोसिएशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'आंध्र पत्रिका का साहित्यिक योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 6 नवंबर, 2016 को विजयवाड़ा के होटल इलापुरम के ए.सी. कॉन्फ्रेंस हॉल में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों को समारोह के महत्त्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आंध्र पत्रिका की स्थापना महान स्वतंत्रता सेनानी, परोपकारी, प्रतिष्ठित लेखक श्री काशीनाथुनी नागेश्वर राव पंतुल ने 1908 में बंबई में, राष्ट्रीयता, भारत की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए किया था। नागेश्वर राव ऐसे कवि थे जिन्होंने 100 हाथों से कमाया और ज़रूरत पड़ने पर 1000 हाथों से ख़र्च किया। उनकी पत्रिका को 1914 में मद्रास स्थानांतरित कर दिया गया था। उन्होंने 1926 में व्याख्यान, साहित्य, शिलालेख और ताड़पत्रों की खोज के लिए 'भारती' नामक मासिक की स्थापना की। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि उस महान कार्य के पीछे जिस व्यक्ति का हाथ है वह श्री मंडली बुद्ध प्रसाद के अलावा और कोई नहीं।

उन्होंने कहा कि श्री प्रसाद एक सुधी पाठक, एक अच्छे लेखक थे जिन्होंने अपनी यात्राओं का वर्णन बहुत रोचक ढंग से किया है और ये बुज़ुर्गों और युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। श्री गोपी ने पुरानी यादों को साझा करते हुए कहा कि जब वे 17 वर्ष के थे उन्होंने वाचन

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. एन. गोपी

कवित्वम पर 'भारती' के लिए लेख लिखा था और संपादक श्री शंभू प्रसाद ने उन्हें प्रशंसात्मक पत्र लिखा था और आग्रह किया था कि कभी-कभी पत्रिका को अपनी रचनाओं द्वारा योगदान दिया करूँ।

अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. पपिनेनी शिवशंकर ने अपने आरंभिक वक्तव्य में श्री बुद्धि प्रसाद की कार्यक्रम में पहल करने की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि प्रिंट मीडिया को आंध्र पत्रिका द्वारा निर्धारित आदर्शों का पालन करना चाहिए। मुख्य अतिथि श्री मंडली बुद्ध प्रसाद, माननीय उपसभापति आंध्र प्रदेश राज्य विधान परिषद् ने कहा कि आंध्र के लोगों को भूल जाने और महान लोगों की अवहेलना करने की बुरी आदत है, जिनमें श्री नागेश्वर राव एक हैं। ये वो व्यक्ति हैं जिन्होंने तेलुगु पत्रिकाओं की नींव रखी। उन्होंने अपने पत्रों से कभी लाभ अर्जित नहीं किया किंतु अपने प्रसिद्ध उत्पाद अमृतांजन से जो लाभ अर्जित किया उसका प्रयोग पत्रों को बनाए रखने के लिए किया।

कृष्णा यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री एस. रामकृष्णराव ने अपने वक्तव्य में 'आंध्र पत्रिका और भारती' की प्रशंसा की जिन्होंने जनमानस के उच्च स्तर को बनाए रखने और उनमें शारीरिक और मानसिक जागरुकता उत्पन्न करने में बड़ी भूमिका अदा की। डिस्ट्रिक्ट राइटर्स एसोसिएशन के महासचिव डॉ. जी.वी. पूर्णचंद ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि आंध्र पत्रिका ने स्वतंत्र प्रेस, आत्म नियम, राज्य के चहुँमुखी विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया। पत्रिका ने हर प्रकार की राय को प्रोत्साहित किया। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से उद्घाटन सत्र समाप्त हुआ।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता कृष्णा डिस्ट्रिक्ट राइटर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री गुत्तीकोंडा सुब्बाराव ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि श्री नागेश्वर राव ने बच्चों के लिए 'कलुवा बाला' पत्रिका आरंभ किया और लेखिकाओं के लिए भी एक मंच तैयार किया। श्री कदियाला राम मोहन राय ने अपने आलेख 'भाषाभिमानम-आंध्र पत्रिका' में पत्रिकाओं और उनके संपादकों के साथ अपनी अंतरंगता को साझा किया। श्री रपका एकम्बचार्यालू ने अपने आलेख 'आंध्र पत्रिका भाषा सेवा' में कहा कि पत्रिका ने आंध्र प्रदेश राज्य के लिए कठिन परिश्रम किया और उसका नाम 'दुर्गा विलास' रखा।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता कृष्णा यूनिवर्सिटी के कुल सचिव श्री डी. सूर्या ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि यह

परिसंवाद छात्रों एवं शोधार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी है तथा कार्यक्रम बहुत ही उत्साहवर्द्धक है। श्री पन्नाला सुब्रमण्य भट्ट ने अपने आलेख में संपादकीय की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में लोगों को शिक्षित करने और आगे बढ़ने में बड़ी भूमिका निभाई है। पट्टाभि सीतारामैया के आलेख बहुत शिक्षाप्रद और मूल्यवान होते थे। प्रख्यात पेंटर श्री एस. व्ही. रामाराव ने अपनी प्रस्तुति में पत्रिका के प्रबंधन से अपने अनुभवों को याद किया। उन्होंने कहा कि शंभू प्रसाद ने उनसे अपने लेखन द्वारा सहयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने संपादकों और उनके परिवार से अपने अंतरंग व क़रीबी संबंधों को याद किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. गोपी ने की और लोगों से अपनी भाषा और संस्कृति को संरक्षित और समृद्ध करने का आग्रह किया।

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

वा. सुपा. मणिकम् जन्मशतवार्षिकी

8 नवंबर 2016, त्रिची

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा भारती दसन यूनिवर्सिटी त्रिची के सहयोग से वरिष्ठ विद्वान एवं आलोचक वा. सुपा. मणिकम् के जन्मशत वार्षिकी के अवसर पर 8 नवंबर 2016 को यूनिवर्सिटी परिसर में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यालय प्रभारी श्री ए.एस. इलंगोवन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमथु ने वा. सुपा. मणिकम् द्वारा किए गए व्यापक तमिळ अनुसंधान के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि उनकी सिलप्पथिकरम पर महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ अभिनव एवं विचारोत्तेजक हैं। साहित्य अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य डॉ. आर. कमारासु ने कहा कि वा. सुपा. मणिकम् ने अन्नामलाई यूनिवर्सिटी के तमिळ विभाग के अध्यक्ष प्राचार्य, अळप्पा गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज, करकुडी तथा मदुरै कामराज यूनिवर्सिटी के कुलपति के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। उन्होंने प्रशासनिक और साहित्यिक दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त की। भारतीदासन यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. वी.एम. मुथुकुमार ने गुरु-शिष्य की तुलना यूनानी नायक अलेक्जेंडर का अपने संरक्षक अरस्तु से करते हुए पंडित मणि कथिरेसन चेतियार एवं वा. सुपा. मणिकम् से की। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री ई. सुंदर मूर्ति ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि वा. सुपा. मणिकम् की व्याख्या तोलप्पियम और थिरुकुल्य तक पहुँचता है। उन्होंने आगे कहा कि मुश्किल परिस्थितियों में मणिकम् का हास्यभाव उल्लेखनीय है। भारतीदासन यूनिवर्सिटी के प्रो. यू. अलीबावा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'वा. सुपा. मणिकम् की बहुमुखी प्रतिभा' विषयक सत्र की अध्यक्षता श्री के.वी. बालासुब्रमण्यम ने की तथा 'शास्त्रीय साहित्य में शोध' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री टी. मुरुगसामी ने मणिकम् की काव्यात्मक प्रतिभा पर बात की और कहा कि 'मणिक्का कुरल' और 'तमिल सुदी' वा. सुपा. मणिकम् की उल्लेखनीय काव्यात्मक, रचनाएँ हैं। सुश्री ए. एलिस ने वा. सुपा. मणिकम् की 'महाकाव्यों में शोध' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उनका शोध कंबा रामायणम् और सिप्रलप्पाथिकरम पर केंद्रित था। श्री बी. मविनन ने 'व्याकरण में शोध' विषय विशेषतः थोलकप्पियम पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री बी. मतिवनन ने की तथा तमिळ यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति श्री एम. तिरुमलाई ने समापन वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि वा. सुपा. के निर्देशन में उन्होंने काम किया है। उन्होंने उनके सरल और विनम्र स्वभाव के बावजूद उनकी कठोर प्रक्रियाओं, परिणाम उन्मुख दृष्टिकोण और विद्वानों की दक्षता की प्रशंसा की। धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

महाकवि वल्लाथल की काव्यात्मक दृष्टि

9 नवंबर 2016, तिरुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा वल्लाथल स्मारक समिति के सहयोग से 'महाकवि वल्लाथल की काव्यात्मक दृष्टि' विषयक परिसंवाद का आयोजन 9 नवंबर 2016 को तिरुर में किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सी. राधाकृष्णन

वल्लाथल में बिताए अपने बचपन के दिनों को याद किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अनिल वल्लाथल ने अपने आरंभिक वक्तव्य में मलयाळम् भाषा में वल्लाथल के योगदान के बारे में बात की। श्री विनोद वल्लाथल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मलयाळम् कवि देशमंगलम रामकृष्णन ने की और कहा कि वल्लायल ने सिद्ध किया कि कविता लेखन स्वयं एक सांस्कृतिक गतिविधि है और अपनी कविताओं द्वारा उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों और जनसाधारण को प्रेरित किया है। श्री पी. पवित्रन ने वल्लाथल की भाषा चेतना के बारे में बात करते हुए कहा कि मातृत्व की अवधारणा वल्लाथल की कविताओं की ऊर्जा है। श्री के.ई.एन. मुहम्मद ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की और कहा कि वल्लाथल जब तक जीवित रहे समय का जवाब दिया। उन्होंने यह भी कहा कि किस प्रकार कवि ने उस समय केरल में प्रचलित जाति व्यवस्था का जवाब दिया था।

डॉ. एन. अजय कुमार के वल्लाथल के सौंदर्य दर्शन के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि कवि ने सच्चाई को सुंदरता के साथ प्रस्तुत किया है। डॉ. के.एम. अनिल ने 'वल्लाथल और राष्ट्रवाद' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कवि की राष्ट्रीय भावना मातृभूमि पर आधारित नहीं थी। उनका दृष्टिकोण दया का था। श्री वी. राजगोपाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सी.पी. ब्राउन की समकालीन प्रासंगिकता

10 नवंबर 2016, कडप्पा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा सी.पी. ब्राउन मेमोरियल लाइब्रेरी के सहयोग से शास्त्री कांफ्रेंस हॉल, कडप्पा में, सी. पी. ब्राउन की समकालीन प्रासंगिकता' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 10 नवंबर 2016 को किया गया।

प्रो. रचपलेम चंद्रशेखर रेड्डी, सदस्य, तेलुगु परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यक्रम सहायक श्री एल. सुरेश कुमार ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। सी. पी. ब्राउन मेमोरियल लाइब्रेरी के प्रभारी डॉ. एम. ईश्वर रेड्डी ने परिसंवाद के आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया तथा प्रतिभागियों का परिचय प्रस्तुत किया। डॉ. पी.एस. गोपालकृष्ण का बीज वक्तव्य सी.पी. ब्राउन के उद्देश्यों और उपलब्धियों पर केंद्रित था तथा उन्होंने शास्त्रीय साहित्य के संरक्षण और उनके योगदान को पुनः आकलन करने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षत श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय तिरुपति की प्रो. एम. विजयलक्ष्मी ने की तथा 'सी.पी. ब्राउन एक कोशकार के रूप' में विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि किस प्रकार ब्राउन ने बोलचाल के शब्दों को अपने शब्दकोशों में समाहित किया। श्री वी. चेनचैया ने सी. पी.

'सी.पी. ब्राउन की समकालीन प्रासंगिकता' विषय पर आयोजित परिसंवाद के एक सत्र का दृश्य

ब्राउन का तेलुगु भाषा के प्रति लोकतांत्रिक विचार पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वे विद्वत्त वर्ग एवं सर्वहारा वर्ग के शब्दों को एकत्र करने में लोकतांत्रिक थे। एस. वी. यूनिवर्सिटी तिरुपति के प्रो. मेदिपल्ली रवि कुमार ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की और 'सी.पी. और ब्राउन के पत्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने सी.पी. ब्राउन को पहला अवर्गीकृत और निर्विवादित व्यक्तित्व का बताया। उन्होंने ब्राउन के पत्रों को सामाजिक इतिहास के दस्तावेज़ों के रूप में परिभाषित किया। श्री कट्टानर्सिम्हालू ने सी.पी. ब्राउन का 'बेल पत्रों के संपादन में योगदान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. एन. ईश्वर रेड्डी ने 'वेमना और सी.पी. ब्राउन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि ब्राउन के प्रयासों से तेलुगु लोगों को वेमना उपलब्ध हो सका।

योगी वेमना यूनिवर्सिटी के कुल सचिव प्रो. एन. नज़ीर अहमद समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे। प्रो. आर. चंद्रशेखर रेड्डी ने समापन वक्तव्य दिया। प्रो. नज़ीर ने सी.पी. ब्राउन मेमोरियल लाइब्रेरी को हरसंभव सहयोग देने का वादा किया तथा साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

मपिला साहित्य में शास्त्रीय लेखन और एक समाजवादी कवि मेहर

12 नवंबर 2016, मालाप्पुरम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा केरल मपिला कला एकेडमी के सहयोग से 12 नवंबर 2016 को 'मपिला साहित्य में शास्त्रीय लेखन और एक समाजवादी कवि, मेहर' विषय पर परिसंवाद का आयोजन वैदयार मेमोरियल ट्रस्ट हॉल कोंडोट्टी, मालाप्पुरम में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों के बारे में बताया।

परिसंवाद का एक दृश्य

केरल मपिला कला एकेडमी के अध्यक्ष श्री टी.के. हमज़ा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि मपिलपट्टू अरबी और मलयाळम् भाषाओं के एकीकरणवाली संस्कृतियों का परिणाम है। उन्होंने शूरानंद कुंजनपिल्ला को संदर्भित करते हुए कहा कि मपिला साहित्य के बिना मलयाळम् साहित्य का इतिहास पूर्ण नहीं हो सकता। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने साहित्य अकादेमी के लोकतांत्रिक और निष्पक्ष प्रकृति को रेखांकित किया। उन्होंने अपनी पारंपरिक बोली और संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए मालबारी मुसलमानों की प्रशंसा करते हुए कहा कि मपिला साहित्य का एक बड़ा हिस्सा पहले ही खो चुका है। प्रसिद्ध इतिहासकार हुसैन रंदाथानी ने मपिला साहित्य और तमिळ लोक साहित्य के संबंधों पर ज़ोर दिया, उन्होंने कहा कि मपिला साहित्य में ऐसा कुछ था जिससे उच्च वर्ग आनंदित होता था और ग़रीब लोगों के लिए सांत्वना की बात थी।

सुश्री शमशाद हुसैन ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने मपिला साहित्य की सार्वभौमिकता पर बात की और कहा कि मपिलापट्टू मालाबार मुसलमानों के जीवन के बारे में कुछ भी नहीं दर्शाता है। श्री अनिल चेलम्ब्रा ने 'मुहियुद्दीन माला' पर आलेख प्रस्तुत किया और मुहियुद्दीन माला पर प्रचलित धार्मिक विवाद के साथ आलेख आरंभ किया। श्री शाकिर हुसैन पी. ने कुंजयीन मुसलयार द्वारा लिखित कप्पापट्टू पर आलेख प्रस्तुत किया। कप्पापट्टू वास्तव में कप्पाल (पानी का जहाज़) पट्टू (गीत) है जिसमें मानव-जीवन की तुलना पानी के जहाज़ से की गई है। इस अनूठी कल्पना के साथ कवि हमें जीवन के सर्वोच्च दर्शन को शिक्षित कर रहा है। श्री टी.के. हमज़ा ने मपिला साहित्य के दो महाकाव्य मलाप्पुरम पडप्पट्टू और बदरुलमुनीर हुसनुल जमाल पर बात की। मलापुरम पडप्पट्टू एक युग की भावना थी और कहानी केरल के राजा चेरामन पेरुमल से शुरू की थी जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था।

दूसरा सत्र 'मपिला साहित्य में मेहर एक समाजवादी कवि' पर था तथा सत्र की अध्यक्षता हुसैन रंदाथानी ने की। श्री मुहम्मद अब्दुल सत्तार ने मेहर की कविता में समाजवादी विचारधारा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। मेहर का वास्तविक नाम एस.के.एस. जलील थंगल था और उन्होंने अपना उपनाम अपनी बेटी के नाम मेहर से लिया था। वे एक सामाजिक कार्यकर्ता थे और अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने समाज को सुधारने की कोशिश की। श्री फैसल एलेत्तिल ने मेहर को

एक आधुनिक कवि के रूप में प्रस्तुत करते हुए मेहर की भाषा और विषय के बारे में बात की। केरल मपिला कला एकेडमी के सचिव श्री रज़ाक़ पायमपोर्ट ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डी. जयकांतन

12 दिसंबर 2016, कोयंबटूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा तमिळ लेखक डी. जयकांतन पर एक परिसंवाद का आयोजन डॉ. एन.जी.पी. आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज कोयंबटूर के सहयोग से कॉलेज परिसर में 12 दिसंबर 2016 को किया गया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. नचिमुथु ने डी. जयकांतन के जीवन एवं लेखन पर प्रकाश डाला। डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने बीज वक्तव्य में जयकांतन के लेखन में चरित्र-चित्रण की बारीकियों की बात की। डॉ. एन.जी.पी. एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस के सचिव डॉ. थवमनी डी. पलनिस्वामी और डॉ. एन.जी.पी. आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी.आर. मुथुस्वामी ने अतिथियों का अभिवादन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री के.एस. सुब्रमण्यम ने की तथा 'डी. जयकांतन : तमिळ आधुनिकता के साहित्यिक अग्रणी के रूप में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री उलूर परमेश्वरन ने 'जयकांतन और मलयाळम् साहित्य में उनके समकक्ष' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री टी.एस. गिरी प्रकाश ने 'जयकांतन और तेलुगु साहित्य में उनके समकक्ष' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री नटराज हुलियार ने 'जयकांतन और कन्नड साहित्य में उनके समकक्ष' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री थेवदेरे भास्करण ने की। उन्होंने 'जयकांतन—एक फ़िल्म निर्माता के रूप में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्रीमती शांता दत्त ने 'डी. जयकांतन का तेलुगु में अनुवाद और अभिनंदन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री पी. एस. शिवकुमार ने 'डी. जयकांतन का कन्नड में अनुवाद और अभिनंदन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री एम.एस. कुप्पूसामी ने 'डी. जयकांतन—जैसा मैं उन्हें जानता हूँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र में डॉ. जयनाथश्री बालकृष्णन ने जयकांतन का लेखन और उनकी जीवनियों पर अपना समापन वक्तव्य दिया। श्री डी.के. चेलप्पन ने सत्र की अध्यक्षता की तथा धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र का दृश्य

परमहंस दासन जन्मशतवार्षिकी

14 दिसंबर 2016, करइकुडी

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा रामासामी तमिळ कॉलेज करइकुडी के सहयोग से परमहंस दासन जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन 14 दिसंबर 2016 को कॉलेज परिसर में किया गया। अकादेमी के कार्यालय प्रभारी श्री ए.एस. इलंगोवन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु ने साहित्य अकादेमी के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में बताया जिनमें जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन सबसे महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि परमहंस दासन ने सरल और पठनीय शैली में धर्म, सामाजिक उत्थान और समकालीन मुद्दों पर कविताएँ लिखीं। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. सी. सेतुपथी ने कवि का परिचय दिया। उनके जीवन और साहित्यिक जीवन की प्रमुख घटनाओं को याद किया। रामासामी तमिळ

आरंभिक वक्तव्य देते हुए प्रो. के. नचिमुथु

कॉलेज के प्राचार्य श्री एस. गणेशन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री मारु परमगुरु ने की तथा परमहंस दासन के साहित्यिक योगदान पर उन्होंने आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि श्रीदासन की गणना श्रीलंका के प्रमुख तमिळ कवियों में की जाती है। श्री मू. पलानी रघुलदासन ने परमहंस दासन की टैगोर की कविताओं के अनुवाद के सराहनीय कार्य के बारे में बात की।

कृष्णमूर्ति पुराणिक का जीवन एवं लेखन

20 नवंबर 2016, बेलगाम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा 20 नवंबर 2016 को 'कृष्णमूर्ति पुराणिक का जीवन एवं लेखन' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन कन्नड साहित्य भवन, बेलगाम में किया गया। इस अवसर पर शा-माम कृष्ण राव द्वारा लिखित एवं अकादेमी द्वारा प्रकाशित कृष्णमूर्ति पुराणिक पर एक विनिबंध का विमोचन अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. कंबार ने कहा कि यह विनिबंध महान साहित्यकार कृष्णमूर्ति पुराणिक को एक श्रद्धांजलि है जिन्होंने कन्नड साहित्य को समृद्ध करने में योगदान दिया है। श्री कंबार ने आगे कहा कि पुराणिक मात्र कथाकार नहीं थे अपितु उन्होंने कविताएँ, कहानियाँ, नाटकों की भी रचना की। डॉ. कंबार ने पुराणिक द्वारा अपनाए गए सरल जीवन को भी याद किया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। श्री एल.एस. शास्त्री ने अपने बीज वक्तव्य में कृष्णमूर्ति पुराणिक के जीवन और उनके साहित्य के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि वे एक महान व्यक्ति और समर्पित शिक्षक थे। डॉ. सी. के. नवलगी ने पुराणिक के उपन्यासों पर खुल कर बात की। उन्होंने कहा कि उनके उपन्यासों में समाज की ज़मीनी सच्चाई और समाज के समृद्ध गुणों को चित्रित किया गया है। उनके उपन्यास लोगों द्वारा पढ़े जाते हैं और पवित्र ग्रंथों की तरह पूजे जाते हैं।

कृष्णमूर्ति पुराणिक के पुत्र श्री आनंद पुराणिक ने साहित्य को पहचानने के लिए समारोह का आयोजन करने हेतु साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पुराणिक ने अस्सी उपन्यास तथा अनगिनत कहानियाँ लिखी हैं।

प्रथम सत्र में श्री राघवेंद्र पाटिल, श्रीप्रकाश देशपांडे और कृष्णमूर्ति पुराणिक की पुत्री विद्या मेंवुंदी ने अपने आलेख प्रस्तुत किया। उन सभी ने कहा कि किस प्रकार उपन्यासकार और कवि ने उनके जीवन को प्रभावित किया है। उन्होंने अपने जीवन की सफलता पुराणिक के बताए रास्ते पर चलकर प्राप्त की है।

दूसरे सत्र में श्री एल.एस. शास्त्री ने पुराणिक के मुक्त छंद के बारे में बात की। डॉ. वाय. एम. याकोल्ली ने पुराणिक की कविताओं और बाल लेखन के बारे में बात की। उनकी समस्त कविताओं में प्रगतिवादी विचारधारा और धार्मिक शोषण का आक्रोश मिलता है। श्री महालिंगा मंगी ने पुराणिक की कहानियों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि पुराणिक ने लगभग 240 कहानियाँ लिखी हैं और सारी कहानियाँ जीवन के बहुत नज़दीक हैं। श्री जिना दत्त देसाई जिन्होंने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की, अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि पुराणिक ने पाठक पैदा किए। उन्होंने अपने अगले उपन्यास की प्रतीक्षा करने के लिए लोगों को बनाया। उन्होंने कन्नड साहित्य में योगदान दिया और समाज के विनाशकारी शक्तियों के विरुद्ध लिखा।

दीप प्रज्वलन के अवसर पर डॉ. चंद्रशेखर कंबार एवं अन्य

सिंधी साहित्य में उल्हास नगर की लेखिकाओं का योगदान

20 दिसंबर 2016, उल्हासनगर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा श्रीमती सी.एच.एम.कॉलेज के सिंधी विभाग के सहयोग से सिंधी साहित्य में उल्हासनगर की लेखिकाओं का योगदान विषय पर ताराचंद मनसुखानी सभागार में एक परिसंवाद का आयोजन 20 दिसंबर 2016 को किया गया।

श्रीमती सी.एच.एम. कॉलेज की सिंधी विभागाध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) संध्या कुंदनानी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य

अकादेमी एवं कॉलेज के प्रति आभार व्यक्त किया। कॉलेज की प्राचार्य डॉ. (श्रीमती) मंजू लालवाणी पाठक ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया कि कॉलेज परिसर में अकादेमी ने इस परिसंवाद का आयोजन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्रीमती मीना रूपचंदानी ने की। प्रो. पूजा राजानी, प्रो. भारती खियानी, श्रीमती काजल भोजवानी, प्रो. भावना रोचलानी, डॉ. कविता बजाज, प्रो. भावना बिनवानी, व प्रो. संगीता बांसवानी ने अपनी कहानियों का पाठ किया। सत्र अध्यक्ष ने पढ़ी गई कहानियों पर उत्साहजनक टिप्पणी दी। भोजनोपरांत सत्र 'उल्हास नगर की लेखिकाएँ' विषय पर आधारित था तथा डॉ. (श्रीमती) रोमा जयसिंहानी ने अपना आलेख प्रस्तुत किया, श्रीमती मीना रूपचंदानी ने 'मेरी प्रिय पुस्तक' विषय पर अपने विचार रखे।

डॉ. (श्रीमती) संध्या कुंदनानी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया और धन्यवाद ज्ञापन किया।

कोंकणी में जीवनी और आत्मकथात्मक लेखन

24 दिसंबर 2016, एर्नाकुलम

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा पी.जी.कामत फ़ाउंडेशन, एर्नाकुलम के सहयोग से 24 दिसंबर 2016, को 'कोंकणी में जीवनी और आत्मकथात्मक लेखन' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

पी.जी. कामत फ़ाउंडेशन के ट्रस्टी श्री आनंद जी कामत ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए दूसरे राज्यों से पधारे अतिथियों का अभिनंदन किया। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य श्री पयानुर रमेश पै ने विषय के बारे में बात करते हुए कहा कि यह विषय एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह है जिसे विभिन्न दृष्टिकोण से देखने पर विभिन्न दिखाई देता है। प्रसिद्ध साहित्यकार श्री के. एल. मोहना वर्मा ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कहा कि कोंकणी लेखन विभिन्न विधाओं द्वारा समृद्ध है। कई लोगों के लिए जीवन के दस्तावेजीकरण की कोई प्राथमिकता नहीं होती, जिस कारण आत्मकथाएँ बाहर नहीं आ पाती हैं। आत्मकथाओं में संस्मरण, डायरी नोट्स, साक्षात्कार जैसी विधाएं शामिल हैं। उन्होंने अप्पू भट, रंगा भट और विनायक पंडित जैसे कोंकणी तिकड़ी के योगदान को याद किया जिन्होंने ऐतिहासिक व्यक्तियों के जीवनी पर शोध करने का प्रयास किया।

अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य श्री गोकुलदास प्रभू ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने जीवनी और आत्मकथा लेखन के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने लोगों के जीवन से उठे कई पहलुओं से उत्पन्न रचनात्मक साहित्य पर भी प्रकाश डाला। आत्मकथा लेखन आदर्शों का बखान करने के लिए नहीं होता है, न ही एक आत्मकथा समाज पर बहुत प्रभाव डालती है। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य श्री एल. सुब्रह्मण्यन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'कोंकणी में जीवनी और आत्मकथात्मक लेखन : आलोचनात्मक विश्लेषण' विषय पर था तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुधीर ताडकोदकर ने की। श्री सुधीर ने पिछली जीवनी और आत्मकथाओं के उदाहरण प्रस्तुत किए जिन्होंने महान मूल्यों और सिद्धांतों के द्वारा समाज को लाभान्वित किया। श्रीमती शकुंतला किनी ने 'कर्नाटक का कोंकणी लेखन' विषय पर अपने आलेख में कहा कि उन्होंने 40 से अधिक पुस्तकों का अध्ययन किया है जो अधिकतर विनिबंध हैं और उनमें जीवन-यात्रा के तत्त्व बहुत कम थे। उन्होंने कहा कि कुछ लेखक आत्मकथा में घटनाओं का वर्णन करते हुए वास्तविक दिनांक का उल्लेख नहीं करते हैं। डॉ. गुनाजी एस. देसाई ने अपने आलेख में गोवा की इन दो विधाओं के बारे में ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि कई बार लेखक भी भावुक हो जाते हैं लेकिन समाज में उनके योगदान को याद किया जाता है। ऐसे लेखन में उनकी उपलब्धियों का पाठ उपलब्ध होता है। श्रीमती राधिका शेनॉय ने केरल की जीवनी और आत्मकथात्मक लेखन की एक तस्वीर पेश की। उन्होंने कहा कि इन दो विधाओं में काव्यात्मक रूप में कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

दूसरे सत्र का विषय था 'कोंकणी में जीवनी और आत्मकथात्मक लेखन की कमी' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री पयानुर रमेश ने की। उन्होंने इन विधाओं में कमी के कई कारणों में से एक

(बायें से) के. अनंत भट्ट (माइक पर), रमेश पै, गोकुलदास प्रभू एवं एल. सुब्रह्मण्यन

मुख्य कारण पाठकों एवं प्रकाशकों की कमी बताया। श्री आर.एस. भास्कर ने कहा कि महान दृष्टाओं के जीवन सदैव अध्ययन योग्य हैं क्योंकि केवल उनकी उपलब्धियां बल्कि उनके जीवन में उतार-चढ़ाव विश्लेषण के योग्य होते हैं। कर्नाटक कोंकणी साहित्य एकेडमी के रजिस्ट्रार डॉ. बी. देवदास ने अपने आलेख में बताया कि कोंकणी में जीवनी और आत्मकथात्मक लेखन की कमी के कारणों में से एक कारण कोंकणी भाषा का कई लिपियों में प्रयोग किया जाना है।

तीसरे और अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री गोकुलदास प्रभू ने की। इस सत्र का विषय था 'जीवनी और आत्मकथात्मक लेखन के मेरे अनुभव'। डॉ. सुधीर ताडकोदकर ने संबंधित व्यक्ति की अनुपस्थिति में जीवनी लिखते समय डेटा तत्त्वों को शामिल करने की कठिनाइयों के बारे में बात की। शोध में मृत व्यक्ति के रिश्तेदारों और संबंधियों के सहयोग की भी ज़रूरत होती है। डॉ. के. अनंत भट्ट ने कहा कि उनकी आत्मकथा 'अनंतु' काव्य शैली में ऐसी विधा में अंतर को भरने के लिए सचेत प्रयास है। लोगों को महसूस हुआ कि यह अन्य भाषाओं में भी अद्वितीय और दुर्लभ है। श्री शरतचंद्र शेनॉय ने समापन वक्तव्य में कहा कि जीवनी या आत्मकथा को रचनात्मक लेखन के लिए कभी पुरस्कार नहीं मिला, परंतु गांधी जी की जीवनी को साहित्य अकादेमी का अनुवाद पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

श्री एस. रामकृष्ण किनी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

स्वातंत्र्योत्तर भाषा में साहित्यिक आंदोलन एवं महिलाओं के मुद्दे

28 दिसंबर 2016, कोल्हापुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा शिवाजी यूनिवर्सिटी के मराठी विभाग के सहयोग से 'स्वातंत्र्योत्तर मराठी में साहित्यिक आंदोलन एवं महिलाओं के मुद्दे' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 28 दिसंबर 2016 को किया गया। प्रसिद्ध आलोचक डॉ. बी.ए. अत्तार ने परिसंवाद का उद्घाटन किया।

(बायें से) कृष्णा किंबहुने, देवानंद शिंदे एवं माइक पर सुश्री अरुणा ढेरे

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल की सदस्य एवं प्रसिद्ध मराठी कवयित्री डॉ. अरुणा ढेरे को बीज वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया। डॉ. ढेरे ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि साहित्य में विद्रोह सामाजिक आंदोलन के लिए पैदा हुआ था और मराठी साहित्य में सुधारवादी व मानवतावादी आंदोलनों के माध्यम से स्वयं की अभिव्यक्ति की गई।

प्रथम सत्र में डॉ. दिलीप चौहान, डॉ. श्रायु आसोलकर और सुश्री सोनाली नावांगुल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. शोभा नायक ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. चौहान ने अपने आलेख में स्वातंत्र्योत्तर थियेटर आंदोलन में महिला मुद्दों की चर्चा की। डॉ. आसोलकर ने नारी आंदोलन और स्वातंत्र्योत्तर महिला साहित्य की चर्चा की तथा सुश्री नावांगुल ने अपने आलेख में स्वातंत्र्योत्तर महिला साहित्य के मराठी अनुवाद की चर्चा की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. रोहिणी तुकदेव ने की तथा डॉ. पी. विट्ठल, डॉ. मेघा पंसारे, डॉ. प्रभाकर देसाई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए जिनमें मराठी लेखन में महिला मुद्दों की विस्तृत चर्चा की गई थी।

मराठी विभाग के डॉ. रणधीर शिंदे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भारतीय नेपाली साहित्य में राष्ट्रीयता

29 दिसंबर 2016, तेजपुर, असम

साहित्य अकादेमी द्वारा असम नेपाली साहित्य सभा, शोणितपुर जिला समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय नेपाली साहित्य में राष्ट्रीयता' विषयक परिसंवाद का आयोजन 29 दिसंबर 2016 को तेजपुर, असम में किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात नेपाली साहित्यकार डॉ. जीवन नामदुङ ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने भारतीय नेपाली साहित्य में राष्ट्रीय भावना को रेखांकित करते हुए कहा कि नेपाली जाति अपनी वीरता और साहस के लिए विश्व में विख्यात है, जिसका प्रतिफलन साहित्य में दिखाई देना स्वाभाविक है।

आरंभिक वक्तव्य अकादेमी में नेपाली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने

दिया। उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए नेपाली भाषा संबंधी योजनाओं और उपलब्धियों के बारे में बताया। सत्राध्यक्ष प्रतिष्ठित नेपाली साहित्यकार और नेपाली भाषा परामर्श मंडल के सदस्य श्री ज्ञान बहादुर छेत्री ने की। आरंभ में असम नेपाली साहित्य सभा, शोणितपुर जिला समिति के अध्यक्ष श्री डिल्लीराम खनाल ने औपचारिक स्वागत भाषण किया, जबकि सत्रांत में जिला समिति की सचिव श्रीमती नवप्रभा देवी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री डिल्लीराम खनाल की, जिसमें डॉ. खेमराज नेपाल तथा श्री सचिन राई ने क्रमशः भारतीय नेपाली कविता और आख्यान साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की पड़ताल करनेवाले अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. भीम शर्मा ने की, जिसमें श्री मुक्ति उपाध्याय ने भारतीय नेपाली कहानियों में राष्ट्रीय चेतना विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

ग्रामालोक

11 दिसंबर 2016, जोनूवलसा ग्राम, विजियानगरम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण छात्रों में साहित्य की भावना को बढ़ावा देने के लिए ग्रामालोक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने की। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम गाँव के हाईस्कूल स्तर के छात्रों के लिए है और उन्हें साहित्य के लिए प्रेरित करना उद्देश्य है। छात्रों को प्रमुख लेखकों के साथ बातचीत से लाभ होगा।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं में रचनात्मक साहित्य की सेवा कर रही है और बच्चों, युवाओं और वरिष्ठों के बीच साहित्य को बढ़ावा देने के साथ-साथ विभिन्न भाषाओं के अनुवाद को प्रोत्साहित करती है। इसके लिए बहुत सारे कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं और निरंतर इनका आयोजन होता रहता है। विजया भवन के महासचिव डॉ. ऐ. गोपालाराव ने कहा कि वे गाँव के छात्रों तक पहुँचने के लिए साहित्य अकादेमी के सहयोग से इस प्रकार के उपयोगी कार्यक्रम के आयोजन से बहुत खुश हैं।

दूसरे सत्र में प्रसिद्ध तेलुगु कथाकार श्री चिंताकिंदी श्रीनिवासराव ने अपनी कहानी का पाठ किया। कहानी में गन्ना किसानों एवं गुड़ बनाने वालों के बारे में मार्मिक वर्णन था। कहानी बच्चों को बहुत पसंद आई और वे हँसने पर विवश हुए। श्री पी. लक्ष्मण राव ने अपनी तेलुगु कविता (नानीलु) का पाठ किया। उन्होंने कहा कि इस विधा के जनक डॉ. एन. गोपी हैं और 1000 से अधिक कवि इस फ़ार्म में कविता कर रहे हैं।

ग्रामालोक कार्यक्रम का एक दृश्य

प्रसिद्ध लेखक डॉ. ए. गोपाल राव ने 'प्रवचनम्' पर अपनी व्याख्या प्रस्तुत की। इसका उद्देश्य छात्रों में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना था। उन्होंने कहा कि एक प्राचीन संत विष्णु शर्मा ने कहावतों के द्वारा छात्रों को अनगिनत नैतिक कहानियाँ दीं।

एक अन्य प्रसिद्ध कवि श्री के. बाबूराव ने अपनी तेलुगु कविताओं का पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. गोपी ने की। तीसरे सत्र में विशाखापतनम से श्री एल.आर. स्वामी, श्री काकुलम से डॉ. पुलकंधम श्रीनिवासराव, डॉ. जक्कू रामकृष्णा, डॉ. भ. विजयदित्या, श्रीमती के.के. भाग्यश्री, डॉ. चांगटि तुलसी ने छात्रों के साथ चर्चा में भाग लिया और उपन्यास, कहानी, कविता, अनुवाद आदि के बारे में उनकी शंकाओं को दूर किया।

चौथा सत्र समापन सत्र था। जोनुवलसा के अध्यक्ष श्री एम. अप्पाराव, ज़िला परिषद हाईस्कूल के प्राध्यापक श्री के. मुरली मोहन ने इतने महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। 'ग्रामालोक' कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए डॉ. एन. गोपी. ने अकादेमी को बधाई दी।

विविध कार्यक्रम

विश्व बाङ्ला साहित्योत्सव

28-29 नवंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा विश्व बाङ्ला साहित्य उत्सव कमेटी के सहयोग से विश्व बाङ्ला साहित्योत्सव का आयोजन पश्चिम बङ बाङ्ला एकेडमी कोलकाता में 28-29 नवंबर 2016 को किया गया।

साहित्य मंच का उद्घाटन वरिष्ठ बाङ्ला कवि श्री शंख घोष ने किया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्योत्सव के बारे में बात की। आरंभिक वक्तव्य श्री श्यामल कांति दास ने दिया। सर्वश्री निर्रेंद्रनाथ चक्रवर्ती, शिरशेंदु मुखोपाध्याय, नवनीता देव सेन, बुद्धदेव दास गुप्त, इमदादुल हक़ मिलन, हबीबुल्लाह सिराजी, असीम साहा, मुहम्मद नुरुल हुदा, शेखर बसु, महमूद कमाल, पवित्र मुखोपाध्याय, रामकुमार मुखोपाध्याय, स्वाती गंगोपाध्याय ने साहित्योत्सव में भाग लिया और अपने विचार प्रस्तुत किए। सुश्री छंदा चटोपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आदिवासी लेखक सम्मिलन

26-27 नवंबर 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा ओड़िया विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के संयुक्त तत्त्वावधान में दो-दिवसीय आदिवासी लेखक सम्मिलन का आयोजन 26-27 नवंबर 2016 को विश्वविद्यालय परिसर, भुवनेश्वर में किया गया, जिसमें दस आदिवासी भाषाओं के बीस लेखकों ने हिस्सेदारी की।

सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए उत्कल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अशोक कुमार दास ने अकादेमी द्वारा आदिवासी भाषाओं के संवर्द्धन के लिए किए जानेवाले प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि विभिन्न आदिवासी भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य का अनुवाद हिंदी, अंग्रेज़ी सहित अन्य भाषाओं में किए जाने की सर्वाधिक आवश्यकता है। इस अवसर पर आरंभिक वक्तव्य देते हुए अकादेमी में संताली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने ओड़िशा में आदिवासी समुदायों की बहुलता और उनकी भाषाओं की साहित्यिक उपलब्धियों को रेखांकित किया।

आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण देते हुए अकादेमी द्वारा अलिखित एवं आदिवासी भाषाओं के संदर्भ में चलाई जा रही योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में बताया। बीज भाषण 'हो' भाषा के प्रतिष्ठित साहित्यकार और अकादेमी के भाषा सम्मान से विभूषित श्री विनोद कुमार नायक द्वारा किया गया। उन्होंने आदिवासी लेखकों से अपनी भाषाओं के वाचिक साहित्य के संकलन, लिप्यंतरण के साथ-साथ समकालीन प्रवृत्तियों से युक्त नवीन लेखन के लिए आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित अकादेमी में ओड़िया भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री गौरहरि दास, तथा सत्राध्यक्ष स्नातकोत्तर परिषद्, उत्कल विश्वविद्यालय के चेयरमैन प्रो. रंजन कुमार बल ने भी अपने विचार व्यक्त किए और ऐसे महत्त्वपूर्ण सम्मिलन के आयोजन के लिए अकादेमी एवं उत्कल विश्वविद्यालय को बधाई दी। सत्र संचालन श्री आनपा मरांडी ने किया, जबकि सत्रांत में प्रो. अनादि चरण गांण ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

सम्मिलन में रचना पाठ के चार सत्र रखे गए थे, जो सर्वश्री कृष्णचंद्र नायक, राजकिशोर नायक, राजेंद्र पाधी और आनपा मरांडी की अध्यक्षता में संपन्न हुए। सत्रों में चौदह लेखकों ने दस भाषाओं में अपनी रचनाओं का पाठ मूल भाषा सहित हिंदी/अंग्रेजी/ओड़िया अनुवाद में प्रस्तुत किया। श्री लक्ष्मण मांद्रा (बोंडा भाषा), श्री धनु मुदली (गदबा भाषा), श्री सुग्रीव जुआंग (जुआंग भाषा), श्रीमती विद्युलता हुइका (कंध भाषा), श्रीमती सविता मुदुली (भोत्रा भाषा), श्री शरत चंद्र नायक (बाथुडी भाषा), श्रीमती पद्मा

कार्यक्रम का एक दृश्य

चलन (गदबा भाषा) एवं श्री पूर्णचंद्र जुआंग (जुआंग भाषा) ने अपनी कहानियों का पाठ किया तथा श्रीमती सविता मांद्रा (बोंडा भाषा), श्री रवींद्र नाथ नायक (बायुडी भाषा), श्री यामिनीकांत तिरिया (हो भाषा), श्री खग केंदु (भूमिया भाषा), श्री गगरिआ सबर (सबर भाषा), श्री पूर्ण पेंथिया (पेंथिया भाषा) एवं डॉ. आनपा मरांडी (संताली भाषा) ने अपनी कविताएँ सुनाईं।

उत्तर-पूर्व और दक्षिणी लेखक सम्मिलन

9 दिसंबर 2016, कोच्चि

साहित्य अकादेमी के उपकार्यालय चेन्नै द्वारा अंतरराष्ट्रीय पुस्तकोत्सव समिति कोच्चि के सहयोग से कोच्चि अंतरर्राष्ट्रीय पुस्तक उत्सव के अवसर पर 9 दिसंबर 2016 को उत्तर-पूर्व और दक्षिणी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए देश की आदिवासी और अलिखित बोलियों को सुरक्षित रखने और बढ़ावा देने में अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि देश में प्रचलित आदिवासी और मौखिक साहित्यों की विस्तृत और अनूठी शृंखला और प्राचीन परंपराओं को विकसित करने के लिए इंफाल और दिल्ली में मौखिक और आदिवासी साहित्य के लिए केंद्र स्थापित किए गए हैं। प्रसिद्ध मलयाळम् समालोचक डॉ. एम. लीलावती ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में देश की एक भाषा से अन्य भाषाओं के साहित्यिक मूल्यों को पारित करने के लिए अकादेमी की प्रशंसा की। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि ऐसे आयोजनों द्वारा योग्य विचारों का आदान-प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त होता है और लोगों के बीच एकता को बढ़ावा मिलता है। तत्पश्चात् एक काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें सत्यकाम बारठाकुर (असमिया), श्रीमती के. शांतिबाला देवी (मणिपुरी), श्री जीवन नामदुंग (नेपाली) श्री हरिकृष्णन् (तमिळ), श्री सतीश चंद्र (तलुगु), सुश्री रेमया-संजीव (मलयाळम्) एवं सुश्री जा. ना. तेजश्री (कन्नड) ने अपनी मूल कविता एवं उनके अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध तेलुगु लेखक श्री ए.एन. जगन्नाथ ने की। श्री अतनु भट्टाचार्य (असमिया), श्रीमती आर.के. हेमवती देवी (मणिपुरी), श्री जॉर्ज जोसफ़ (मळयाळम्), श्री थिरुप्रसाद नेपाल (नेपाली), श्री शिव कुमार मुथैया (तमिळ) और श्री करी गौडा बीचनहल्ली (कन्नड) ने अंग्रेज़ी में श्रोताओं को अपनी कहानियों की जड़ों को उजागर किया। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी. राधाकृष्णन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तेलुगु लेखक सम्मेलन

10 दिसंबर 2016, यानम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा 'स्फूर्ति साहिती समख्या, यानम के सहयोग से 10 दिसंबर 2016 को सर्वशिक्षा अभियान कॉन्फ्रेंस हॉल यानम में तेलुगु लेखक सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन पुदुचेरी सरकार के कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मल्लाडी कृष्णा राव द्वारा किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। श्री देवदानम राजू ने आरंभिक वक्तव्य दिया जबकि श्री एन.गोपी. ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। श्री गोपी ने तेलुगु साहित्य और इसमें साहित्य अकादेमी के योगदान के बारे में बात की। मुख्य अतिथि माननीय मंत्री जी ने भविष्य में इस प्रकार के और आयोजन की कामना की तथा साहित्य के महत्त्व को रेखांकित किया। तेलुगु कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता श्री देवदानम राजू ने की। श्रीमती वी. वीरलक्ष्मी देवी ने आज की तेलुगु कहानी के बारे में बात की। श्री च. श्रीनिवास राव, श्री ए. प्रभू, श्रीमती जी. लक्ष्मी ने अपनी कहानियों का पाठ किया। श्री देवदानम राजू ने भी अपनी कहानी प्रस्तुत की और पढ़ी गई कहानियों पर टिप्पणी भी की।

दूसरा सत्र आज की तेलुगु कविता को समर्पित था। श्री के. संजीवराव ने सत्र की अध्यक्षता की तथा श्री नारायण शर्मा ने आज की तेलुगु कविता पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री

तेलुगु लेखक सम्मिलन के उद्घाटन सत्र का दृश्य

संजीव राव, डॉ. वेंदलुरी सुधाकर, श्री एम.एस. एन. मूर्ति, श्री बोल्लोजू बाबा, श्रीमती के. विजयलक्ष्मी, श्री रयाली प्रसाद, श्री च. राम, श्री एम.एस.वी. नागा प्रसाद एवं श्री एस.वी. राघवेंद्र राव ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

समापन सत्र में श्री वी. भास्कर रेड्डी ने प्रत्येक सत्र की संक्षेप में टिप्पणी करते हुए प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय बहुभाषी काव्य गोष्ठी

21 नवंबर 2016, मानस नेशनल पार्क, असम

साहित्य अकादेमी तथा बोडो राइटर्स एकेडमी द्वारा 21 नवंबर 2016 को मानस नेशनल पार्क बांसबरी में अखिल भारतीय बहुभाषी काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के पूर्वी क्षेत्रीय बोर्ड के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने अपने आरंभिक वक्तव्य में भारतीय भाषाओं की कविता के बारे में बात की। मुख्य अतिथि बोडोलैंड टेरिटोरियल कौंसिल के सचेतक श्री काम्पा बोरगोरी ने बहुभाषी काव्यगोष्ठी में सम्मिलित होने वाले कवियों का स्वागत करते हुए बोडो समुदाय के बारे में बात की। श्री मंगलसिंग हज़ोवरी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में बोडो भाषा एवं साहित्य के विकास के बारे में बात की। बोडो राइटर्स एकेडमी के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध बोडो कवि श्री बिजय बगलरी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। बोडो राइटर्स एकेडमी के उपाध्यक्ष एवं प्रसिद्ध बोडो कथाकार श्री राजन बसुमतारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बहुभाषी काव्य गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता मराठी के विद्वान एवं कवि श्री गणेश विसुते ने की। सर्वश्री अजीत मराली (असमिया), बिनायक बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), श्रीमती ज्वीसरी बोरो, सुश्री शांती बसुमतारी (बोडो), अरंबम ओंग्बी ममचौबी (मणिपुरी) ने

कार्यक्रम का एक दृश्य

पहले अपनी मातृभाषा तत्पश्चात कविताओं के हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। श्री गणेश विसुते ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पढ़ी गई कविताओं पर टिप्पणी की और अपनी मराठी कविताओं का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कन्नड कवि श्री सिद्दलिंगैया ने की। इस सत्र में श्रीमती अपर्णा महंती (ओड़िया), सुश्री थिरज्यू बसुमतारी (बोडो), उदय थुलंग (नेपाली) ने सर्वप्रथम अपनी मूल भाषा उसके बाद कविताओं के हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। सत्र के अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कविता लेखन के बारे में बात की तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय कविता का मूल्यांकन किया। अध्यक्ष ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया और श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध उर्दू कवि श्री आज़िम कोहली ने की। उन्होंने श्रीमती अंजू बसुमातारी (बोडो), मोहन सिंह (डोगरी), आदित्य कुमार मरांडी (संताली) को क्रमशः कविता पाठ के लिए आमंत्रित किया। कवियों ने सर्वप्रथम अपनी मूल भाषा में उसके बाद कविताओं के हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। श्री कोहली ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पढ़ी गई रचनाओं को सराहा और रचनाकारों को बधाई दी। अध्यक्ष ने भी अपनी रचनाओं का पाठ किया।

चौथे सत्र की अध्यक्षता सिंधी की प्रतिष्ठित कवयित्री सुश्री वीना श्रंगी ने की। इस सत्र में सर्वश्री बिमलेश कुमार त्रिपाठी (हिंदी), अमलेंद्रशेखर (मैथिली), नारायण दास (संस्कृत) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सुश्री श्रंगी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कवियों को सुंदर रचना पाठ के लिए बधाई दी और अपनी कुछ सिंधी कविताओं के हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए।

क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समापत हुआ।

संताली कवि सम्मिलन

29 दिसंबर 2016, तेजपुर, असम

साहित्य अकादेमी द्वारा संताली भाषा शिक्षा एवं साहित्य मंच, असम (Santali Language Education and Literary Society of Assam) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'संताली कवि सम्मिलन' का आयोजन 29 दिसंबर 2016 को तेजपुर, असम में किया गया। सम्मिलन का उद्घाटन प्रख्यात संताली साहित्यकार और पूर्व सांसद श्री पृथ्वी माझी ने किया। उन्होंने अपने भाषण में भारत के सुदूर संताल बहुल इलाकों में

कार्यक्रमों के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को साधुवाद दिया और संताली भाषा-भाषियों का अपनी भाषा-संस्कृति एवं साहित्य के उत्थान एवं संरक्षण के लिए कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में सर्वश्री सुधीर मुर्मु, हरिनाथ मुर्मु, धर्मकांत मुर्मु, कुर्वेश्वर मार्डी और विजय टुडु ने अपनी संताली कविताओं का पाठ किया, जिनमें संताली समाज की समस्याओं और देश-दुनिया से उनके संपर्क को लेकर प्रतिक्रियाओं और अनुभवों को साझा किया गया था। सभा की अध्यक्षता करते हुए श्री प्रभा सोरेन ने पठित कविताओं पर टिप्पणी की तथा आशा व्यक्त की कि ऐसे आयोजन भविष्य में भी किए जाते रहेंगे। आरंभ में श्री विजय टुडु ने अकादेमी और संघ की तरफ से औपचारिक स्वागत और अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

कथा संधि - पी.पी. रामचंद्रन

9 नवंबर 2016, मंगलम, तिरुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा वल्लाथल स्मारक समिति मंगलम के सहयोग से प्रसिद्ध मलयाळम् कवि श्री पी.पी. रामचंद्रन के साथ कवि संधि कार्यक्रम का आयोजन 9 नवंबर 2016 को किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने आमंत्रित कवि एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए

श्री पी.पी. रामचंद्रन

कवि संधि कार्यक्रम के महत्त्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि श्री पी.पी. रामचंद्रन प्रतिष्ठित मलयाळम् कवि हैं तथा आपके दो कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। श्री रामचंद्रन ने अपनी चुनिंदा कविताओं का पाठ किया। कविता पाठ के बाद श्रोताओं ने उनकी लेखन प्रक्रिया के बारे में सवाल किए, जिनके उत्तर आमंत्रित कवि ने सहजता से दिए।

कथासंधि - गीतांजलि श्री

22 नवंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा दसवें दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव (12-25 नवंबर 2016) के दौरान 22 नवंबर 2016 को 'कथासंधि' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत प्रतिष्ठित हिंदी कथालेखिका गीतांजलि श्री के एकल कहानी-पाठ का आयोजन किया

सुश्री गीतांजलि श्री

गया। आरंभ में दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव कार्यालय की तरफ से श्री वैभव श्रीवास्तव ने औपचारिक स्वागत करते हुए उत्सव की परिकल्पना पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उत्सव का स्मृति चिह्न श्रीमती गीतांजलि श्री को प्रदान किया। इस अवसर पर गीतांजलि श्री ने अपने नवीनतम उपन्यास 'रेत समाधि' के अंश का पाठ किया, जिसमें एक अस्सी वर्षीया वृद्धा और उसके पोते सिड के संबंधों का चित्रण किया गया था। इसके माध्यम से लेखिका ने बदलते पारिवारिक संबंधों तथा पीढ़ियों के परस्पर संघर्ष को रेखांकित किया है। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन तथा अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

कथा संधि - भास्कर चंदन शिव

27 दिसंबर 2016, कोल्हापुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा शिवाजी यूनिवर्सिटी के मराठी विभाग के सहयोग से प्रसिद्ध मराठी कहानीकार श्री भास्कर चंदन शिव के साथ कथा संधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने आमंत्रित लेखक एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए लेखक का परिचय प्रस्तुत किया। श्री चंदन शिव की कहानियों में ग्रामीण मराठवाड़ को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है और इस तथ्य को स्थापित किया गया है कि ग़रीबी से पीड़ित लोगों की पहचान थी और न जाति थी तथा पीड़ा और अपमान उनके धर्म थे। श्री किंबहुने ने कहा कि चंदन शिव के कहानी-संग्रहों ने मराठी में कथा लेखन के नए रुझान स्थापित किए। श्री चंदन शिव ने अपनी कहानी 'लाल चिखल' (लाल कीचड़) का पाठ किया। कहानी में पीड़ित किसान चतुर बाज़ारी, धोखा-धड़ी में विफल रहता है और विक्रय हेतु उसके द्वारा पैदा किया गया टमाटर बग़ैर विक्रय के रह जाता है। श्रोताओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों के जवाब श्री चंदन शिव ने बड़ी सहजता से दिए। शिवाजी यूनिवर्सिटी के मराठी विभाग के डॉ. नंद कुमार मोरे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कविसंधि - युद्धवीर राणा

29 दिसंबर 2016, तेज़पुर, असम

साहित्य अकादेमी द्वारा असम नेपाली साहित्य

श्री युद्धवीर राणा

सभा, शोणितपुर जिला समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कविसंधि' कार्यक्रम के अंतर्गत 29 दिसंबर 2016 को तेजपुर, असम में नेपाली के प्रख्यात कवि श्री युद्धवीर राणा के एकल कविता-पाठ का आयोजन किया गया। श्री कमलकांत सेडाई ने उनका संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्हें काव्य पाठ के लिए आमंत्रित किया। श्री युद्धवीर राणा ने विभिन्न काव्यशैलियों में अपनी कविताओं का पाठ किया। पठित कविताओं में नेपाली समाज की वर्तमान स्थिति और उस पर भूमंडलीकरण के प्रभावों का चित्रण किया गया था, कि किस प्रकार हमारे जीवन में संवेदनहीनता बढ़ती जा रही है, जिसके कारण हमारे पारिवारिक संबंधों पर बुरा असर पड़ रहा है। उन्होंने राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कुछ कविताओं का पाठ भी किया।

कार्यशाला - लघुकथा लेखन

12-17 नवंबर 2016, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सहयोग से लघुकथा लेखन कार्यशाला का आयोजन 12 से 17 नवंबर 2016 तक जम्मू में किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन शेरे कश्मीर यूनिवर्सिटी ऑफ़ एग्रीकल्चर-साइंस एंड टेक्नोलॉजी के कुलपति प्रो. प्रदीप शर्मा ने किया। प्रो. शर्मा ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि यह कार्यशाला युवा पीढ़ी को लघुकथा की सृजन प्रक्रिया के बारे में अभ्यास कराने का अवसर प्रदान कराएगा। साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा, जो कि इस कार्यशाला के निदेशक थे, ने अपने वक्तव्य में इस प्रकार के प्रथम कार्यशाला के लक्ष्य एवं उद्देश्य के बारे में बताया। डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि युवा पीढ़ी को मंच प्रदान करने के लिए इस प्रकार की गतिविधियाँ समय की आवश्यकता है।

कार्यशाला केवल एक भाषा तक सीमित नहीं थी, इस कार्यशाला के लिए चुने गए छात्रों में, डोगरी, हिंदी, पंजाबी, उर्दू, संस्कृत और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के भी छात्र थे। कार्यशाला में श्री छत्रपाल, प्रो. ललित मंगोत्रा, श्री ख़ालिद हुसैन, श्री ओम गोस्वामी, श्रीमती सुरिंदर मीर, श्रीमती योगिता यादव, श्री बलजीत सिंह रैना, श्रीमती नीरु शर्मा, श्रीमती निर्मल विक्रम, डॉ. प्रत्यूष गुलेरी, श्री कृष्ण शर्मा एवं श्री एम.के. वक़ार विशेषज्ञ के रूप में सम्मिलित हुए। कार्यशाला ने 25 से अधिक नए कथा लेखकों की रचना के कारण यादगार बनाने में सफलता प्राप्त की और कार्यशाला के दौरान डोगरी, हिंदी, उर्दू, पंजाबी के प्रतिभागियों द्वारा 30 से अधिक कहानियों की रचना की गई। शिवानी आनंद, राधा रानी, सोनिका जसोत्रा, आशु शर्मा, रवनीत कौर, अमनप्रीत कौर, एस. हरसिमरन सिंह, प्रतीक शर्मा, शारदा देवी, रीतिका, खुशी वज़ीर, श्रीमती रजनी कुमारी, लक्ष किशोर, कमक्षी वैद, महक देवी, रोहिणी रैना, आरती देवी, फ़रहाना फ़ारूक़, हिमानी बाली, सरोज बाला, सबा सरवर ख़ान, अब्दुल, क़य्यूम मलिक, सुनील मगोत्रा, नीतू कुमारी, सविता पुरी और रंजना देवी ने प्रतिभागी के रूप में हिस्सा लिया। कार्यशाला का समापन 17 नवंबर, 2016 को हुआ, जिसमें समस्त प्रतिभागियों ने कार्यशाला के अपने अनुभवों को साझा किया। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, डोगरी संस्था के अध्यक्ष श्री छत्रपाल, प्रो. ललित मगोत्रा ने अपने विचार व्यक्त किए।

लघुकथा लेखन कार्यशाला के प्रतिभागियों का ग्रूप फ़ोटो

ओड़िया-संताली कहानी अनुवाद कार्यशाला

26-28 नवंबर 2016, पुरी, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी द्वारा पुरी, ओड़िशा में 26-28 नवंबर 2016 को ओड़िया-संताली कहानी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया।

ओड़िया-संताली अनुवाद कार्यशाला के प्रतिभागी

कार्यशाला प्रतिष्ठित संताली लेखिका एवं अनुवादिका डॉ. दमयंती बेसरा की देख-रेख में संपन्न हुआ। कार्यशाला में अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'स्वाधीनतोत्तर ओड़िया क्षुद्र गल्प' खंड दो (संपादक : सतकड़ी होता) नामक पुस्तक का अनुवाद आठ अनुवादकों द्वारा किया गया। विशेषज्ञ के रूप में डॉ. नाकू हांसदा और श्री लक्ष्मण मरांडी कार्यशाला में शामिल हुए। सर्वश्री अनूप माँझी, मांगत मुर्मु, रघुनाथ हेंब्रम, अर्जुन मरांडी, कृष्णचंद्र सोरेन, रामराय माझी, गोविंद चंद्र माझी और शेखरचंद्र मार्डी ने संग्रह में शामिल कुल 37 कहानियों का अनुवाद किया। कार्यशाला के दौरान अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की ओर से सभी विद्वानों के प्रति आभार प्रकट किया तथा बताया कि उक्त पुस्तक का पहला खंड भी एक कार्यशाला के दौरान ही अनूदित हुआ था, जो शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है और अनूदित किया जा रहा दूसरा खंड भी अकादेमी पुस्तकाकार प्रकाशित करेगी। उन्होंने आग्रह किया कि सभी विद्वान अपने-अपने स्तर पर लघु कार्यशालाएँ आयोजित कर विभिन्न भाषाओं के अनुवादकों को तैयार करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। इस अवसर पर सभी अनुवादकों और विशेषज्ञों ने कार्यशाला संबंधी अपने अनुभव साझा किए। कार्यशाला निदेशक डॉ. दमयंती बेसरा तथा अकादेमी में संताली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

लेखक से भेंट - अनिल बोरो

28 नवंबर 2016, गुवाहाटी, असम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा प्रसिद्ध लोक साहित्यकार एवं बोडो भाषा के कवि अनिल बोरो के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन गुवाहाटी यूनिवर्सिटी के बोडो विभाग में 28 नवंबर 2016 को किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने आमंत्रित कवि एवं अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेमानंद मुसहरी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। डॉ. अनिल बोरो ने अपने जीवन एवं लेखन कर्म के बारे में ओजपूर्ण भाषण के बाद अपनी कविताओं का पाठ किया। उन्होंने कहा कि कविता उनका पहला प्यार है, उनकी काव्य प्रतिभा संभवतः जन्मजात है, किंतु जीवन के दूसरी व्यस्तताओं के कारण यह पक्ष अलग हो गया। उन्होंने कई कविताओं का पाठ किया। कवि एवं श्रोताओं के बीच परस्पर संवादात्मक सत्र भी हुआ। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य परणव ज्योति नरज़री ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. अनिल बोरो

लेखक से भेंट – तारापति उपाध्याय

30 दिसंबर 2016, उदालगुड़ी (असम)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा असम नेपाली साहित्य सभा, उदालगुड़ी के सहयोग से 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन 30 दिसंबर 2016 को गुलमागाँव हाईस्कूल में किया गया जिसमें प्रसिद्ध नेपाली लेखक श्री तारापति उपाध्याय को आमंत्रित किया गया। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आमंत्रित लेखक का परिचय दिया और कहा कि श्री उपाध्याय

श्री तारापति उपाध्याय

निरंतर साहित्य सृजन में सक्रिय हैं। श्री उपाध्याय ने अपने साहित्यिक यात्रा एवं प्रेरणाओं के बारे में बात की। उन्होंने नेपाली रामायण के रचनाकार भानुभक्त सहित अन्य रचनाकारों को उद्धृत किया। उन्होंने आगे कहा कि "बुढ़ापे में भी समाज के लिए लेखन की गति को बनाए रखने के लिए एक प्रेरणा है और असम के नई पीढ़ी के लेखकों को उनके साहित्यिक पहलुओं को जानने को प्रोत्साहित करता है।"

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह

14 नवंबर 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर नेशनल कॉलेज, बसावनगुड़ी के सहयोग से एक सप्ताह के लिए कॉलेज परिसर में पुस्तक प्रदर्शनी एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में तेलुगु भाषा मित्र मंडली के को-ऑर्डिनेटर डॉ. ए. चंद्रशेखर रेड्डी ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्य के बारे में बताया।

डॉ. रेड्डी ने रायल सीमा से आमंत्रित प्रतिभागियों को मंच पर बुलाया। प्रो. राजेश्वरम्मा ने तेलुगु भाषा और साहित्य पर तमिळ और कन्नड भाषा के प्रभावों की बात की। उन्होंने कहानियों में प्रयुक्त मुहावरों, कहावतों और कृषि संबंधी स्थानीय शब्दों के बारे में भी बात की। दूसरे वक्ता श्री बंदी नारायण स्वामी ने अनंतपुरम जनपद की कहानियों में बोली जाने वाली भाषा के प्रयोग के संबंध में बात की। कुरनूल जनपद से पधारे डॉ. हरिकृष्ण ने बोली जाने वाली भाषाओं के बारे में बात की। उन्होंने क्षेत्र विशेष जैसे अदोनी में कन्नड, उर्दू और हिंदी के शब्दों के प्रभाव के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि कुछ ही लोग हैं जो प्राचीन तेलुगु भाषा में कहानियाँ लिख रहे हैं।

अंत में डॉ. जी.वी. सई प्रसाद ने कडप्पा जनपद में लिखी जा रही कहानियों की भाषा के बारे में बात की। उनका कहना था कि कडप्पा पाँच जनपदों के मध्य स्थित है। बॉर्डर के क्षेत्रों के कहानीकारों द्वारा लिखी जा रही कहानी बहुत प्रभावी है। डॉ. वेल्लाला वेंकटेश्वर राव के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह

14-20 नवंबर 2016, कुंबकोनम

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन 14-20 नवंबर 2016 को कुंबकोनम में किया गया। पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन तमिळ यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. जी. भास्करन ने किया। प्रभारी श्री ए.एस. इलंगोवन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए पुस्तक सप्ताह के महत्त्व को बताया तथा अकादेमी की सहभागिता को रेखांकित किया। डॉ. रामा गुरुंथन, प्रसिद्ध तमिळ विद्वान ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि साहित्य का उद्देश्य काल्पनिक कार्यों के माध्यम से सच्चे ज्ञान को स्थापित और उजागर करना है। अकादेमी के सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. आर. कामरासु ने पढ़ने की अच्छी आदत को विकसित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

15 नवंबर, 2016 को प्रसिद्ध साहित्यकारों पर अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया। 16 नवंबर 2016 को एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री कवि मुगिल ने की। श्री वृंदा सारथी, श्री बालरसु और श्री अंगराई भैरवी ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

17 नवंबर, 2016 को अकादेमी द्वारा निर्मित डी. जयकांतन, वैकम मो. बशीर और यू. आर. अनंतमूर्ति के वृत्तचित्रों का प्रदर्शन किया गया।

18 नवंबर 2016 को कहानी पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध तमिळ विद्वान श्री सोलई सुंदरपेरुमल ने की। श्री ना. विश्वनाथन, श्री सी.एम. मुथु और श्रीमती नूर ज़हीर ने अपनी कहानियों का पाठ किया। 19 नवंबर 2016 को अकादेमी द्वारा निर्मित महाश्वेता देवी, सुब्रमण्यम भारती और खुशवंत सिंह के वृत्तचित्रों को प्रदर्शित किया गया। 20 नवंबर 2016 को 'जीवन और साहित्य' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा का संचालन प्रो. गुणाशेखरन ने किया तथा श्री शानमुगा सुंदरम, सुश्री द्रविडामनि और श्री कलई भारती ने चर्चा में भाग लिया। इस

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान आयोजित एक कार्यक्रम का दृश्य

प्रकार का अकादेमी द्वारा आयोजन मंदिरों के शहर में पहली बार किया गया।

नेपाली रचना पाठ

5 नवंबर 2016, जोरथाङ

साहित्य अकादेमी द्वारा सृजनशील साहित्य लेखन मंच, जोरथाङ (सिक्किम) के संयुक्त तत्त्वावधान में नेपाली रचना पाठ कार्यक्रम का आयोजन 5 नवंबर 2016 को जोरथाङ में किया गया। रचना पाठ का प्रथम सत्र कविता पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य एवं सुपरिचित नेपाली साहित्यकार श्री थिरू प्रसाद नेपाल ने की। सत्र में श्री कमल प्रसाद अधिकारी, श्री रवि रोदन, श्रीमती जयंती मुखिया, श्रीमती नीरा सुब्बा, श्री रस्तमान राई एवं श्रीमती एडना घले ने अपनी नेपाली कविताओं का पाठ किया। प्रस्तुत कविताओं में समकालीन नेपाली समाज की समस्याओं, पारिवारिक स्थितियों, राष्ट्रप्रेम की भावना तथा विशेषकर नारी मन का चित्रण किया गया था। कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध नेपाली कथाकार श्री एम. पथिक ने की। इस सत्र में श्रीमती तारामणि लेप्चा, श्री एल. बी. बस्नेत तथा श्री प्रकाश पराजुली ने अपनी कहानियों का पाठ किया। कहानियों में चित्रित समय-समाज और समस्याओं से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ महसूस करने के कारण श्रोताओं ने उन्हें बेहद पसंद किया।

साहित्य मंच - बहुभाषी कविता पाठ

24 नवंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा दसवें दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव (12-25 नवंबर 2016) के दौरान 24 नवंबर 2016 को 'साहित्य मंच' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत बहुभाषी कविता पाठ का आयोजन किया गया। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों को दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव का स्मृति चिह्न प्रदान किया। इस अवसर पर असमिया कवि श्री अजित गोगोई, उर्दू शायर प्रो. अहमद महफ़ूज़, हिंदी कवि श्री पंकज चौधरी तथा कवयित्री डॉ. रानी श्रीवास्तव ने अपनी कविताओं का पाठ किया। श्री गोगोई ने अपनी कविताओं का पाठ मूल असमिया के साथ हिंदी एवं अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत किया। पठित कविताओं में दलित एवं स्त्री विमर्श की प्रतिध्वनियाँ थीं, जिन्हें श्रोताओं ने ख़ासतौर पर सराहा। अनेक कविताओं में मनुष्य के वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक संघर्षों को स्वर दिया गया था। प्रो. महफ़ूज़ ने अपनी गज़लें सुनाईं, जिन्हें ख़ूब वाहवाही मिली। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन तथा अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच- आधुनिक तेलुगु कहानी

24 नवंबर 2016, गुंटूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा गवर्नमेंट वुमेंस कॉलेज, गुंटूर के तेलुगु विभाग के सहयोग से साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'आधुनिक तेलुगु कहानी' कार्यक्रम का आयोजन 24 नवंबर 2016 को कॉलेज के मीटिंग हॉल में किया गया। कॉलेज की प्राचार्य डॉ. एल. शशिबाला ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्रीमती विजयलक्ष्मी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि किस प्रकार तेलुगु कहानी ने अपने अंतरराष्ट्रीय स्तर को स्थापित किया। आचार्य नागार्जुन यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. ए. राजेंद्र प्रसाद जो कि मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए, ने कहा कि कविताओं और कथाओं के माध्यम से साहित्य छात्रों के मस्तिष्क को आकार देता है और जीवन में शिखर तक पहुँचने में सहायता प्रदान करता है।

साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. पपिनेनी शिवशंकर ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने लघु कथाओं में नवीनतम प्रयोगों के बारे में बात की और विवादास्पद विषयों और उनकी प्रस्तुति तकनीक और शैलियों की पसंद के बारे में बात की। उद्घाटन सत्र का समापन तेलुगु विभाग की श्रीमती एन. विजयलक्ष्मी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। दूसरे सत्र की अध्यक्षता अंग्रेज़ी विभाग के डॉ. के. विजयबाबू ने की। उन्होंने पश्चिम में लघुकथा के विचार और तकनीक के बारे में संक्षेप में समझाया जिसने तेलुगु लेखकों को प्रभावित किया। डॉ. के. राममोहन राय, डॉ.

कार्यक्रम का एक दृश्य

सुजाता, डॉ. जी. स्वर्णलता और डॉ. जी. गौरी ने तेलुगु कहानियों के विभिन्न पहलुओं के बारे में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

डॉ. के. राममोहन राय ने अपने आलेख 'तेलुगु कहानियों में किसानों का चित्रण' में किसान और उसके भूमि के बीच संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया और श्री गोपीचंद, श्री उन्नव लक्ष्मी नारायण, श्री केतु विश्वनाथ रेड्डी, श्री तिलक, श्रीमती यशोदा रेड्डी तथा अन्य की कहानियों के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनका जीवन किस प्रकार विभिन्न व्यवसाय के लोगों के साथ जुड़ा हुआ है।

डॉ. के. सुजाता ने अपने आलेख 'लघु कथा लेखन में बोलियों की भूमिका' में बताया कि कैसे बोलियों ने तेलुगु भाषा को समृद्ध किया है और किस प्रकार उन्होंने तेलुगु संस्कृति के मूल स्वभाव को संरक्षित रखा है। डॉ. जी. स्वर्णलता ने अपने आलेख 'आधुनिक लघुकथा और उसके प्रस्तुति की तकनीक' में तेलुगु लघुकथा की अंतरराष्ट्रीय ख्याति तथा, विषय, शैली, विवरण, संवाद, चरित्र चित्रण आदि के बारे में बात की। उन्होंने तिलक, रवि शास्त्री, पद्म राजू, गोपीचंद, बुच्ची बाबू और अन्य की कहानियों को उदाहरण प्रस्तुत किया। डॉ. जी. गौरी ने अपने आलेख 'आधुनिक लघुकथा में नारीवादी जागरूकता' के समाज के विभिन्न पहलुओं में महिलाओं की स्वतंत्रता की बात की। उन्होंने महाकाव्यों और लघु कथाओं से उदाहरण प्रस्तुत किए। श्रीमती च. अनीता के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

साहित्य मंच - मलयाळम् यात्रा लेखन और अनुभव

26 नवंबर 2016, त्रिवेंद्रम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'मलयाळम् यात्रा लेखन और अनुभव' कार्यक्रम का आयोजन 26 नवंबर 2016 को वाई.एम.सी.ए. कांफ्रेंस हॉल में किया गया।

कार्यक्रम के दौरान अपने अनुभवों को साझा करते एक प्रतिभागी

श्री मधु नायर (न्यूयॉर्क) ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एक दशक के अपने यात्रा संस्मरण (भारत एवं विदेश) को साझा किया। उन्होंने अनजाने देश में होने वाली कठिनाइयों के बारे में भी बात की। साहित्य अकादेमी के परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. कायमकुलम यूनुस ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अकादेमी के नए कार्यक्रमों और लोगों के बीच साहित्य का विस्तृत प्रचार करने के बारे में बताया। श्री प्रदीप पनगड़ ने मलयाळम् में यात्रा लेखन के इतिहास बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने नए लेखकों को दृश्य मीडिया के बारे में चेतावनी दी जो दुनिया की हर चीज़ पर विजय प्राप्त कर लेना चाहती है लेकिन यात्रा लेखन में नए की आशा भी व्यक्त की। केसरी मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सी. रहीम जो एक पक्षी विशेषज्ञ के रूप में पक्षियों को देखने के लिए भ्रमण करते रहते हैं, उन्होंने मलयाळम् और अंग्रेज़ी में प्रकाशित अपनी पुस्तकों के बारे में बात की।

प्रेस क्लब के सचिव श्री के.आर. अजयन जो हिमालय में निरंतर यात्रा करते रहते हैं, उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान पेश आने वाली कई आपदाओं के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि युवा यात्रा लेखकों को कभी भी उचित सम्मान नहीं दिया गया। 'द पायनियर' के केरल संस्करण के पूर्व संपादक श्री अरुण लक्ष्मण ने अपनी विदेश यात्राओं के संस्मरण को साझा किया। श्रीमती के.ए. बीना ने अपने युवावस्था में रूस यात्रा पर लिखे गए यात्रा संस्मरण के अनुभवों को साझा किया। श्री व्ही. कृष्णा नायर के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

संविधान दिवस का अनुपालन

26 नवंबर 2016 चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा 'संविधान दिवस' के अवसर पर 26 नवंबर, 2016 को कार्यालय परिसर में संविधान दिवस के अनुपालन का आयोजन किया गया। अकादेमी के प्रभारी श्री ए.एस. इलंगोवन द्वारा कार्यालय के सहयोगियों को भारत के संविधान की प्रस्तावना को प्रतिज्ञा के रूप में पारित किया गया। प्रतिज्ञा के बाद श्री इलंगोवन ने डॉ. अंबेडकर द्वारा कल्पना की गई संविधान में शामिल आदर्शों और मूलभूत अधिकारों व कर्तव्यों के बारे में बात की। हमारे संविधान ने अपने सभी नागरिकों को राष्ट्र के कल्याण के लिए अनुपालन किए जाने वाले छः मौलिक अधिकार और मूलभूत कर्तव्यों

का आश्वासन दिया। यह प्रतिज्ञा सभी भारतीयों में देशभक्ति और एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए की गई थी।

साहित्य मंच - असग़र वजाहत द्वारा नाटक पाठ

29 नवंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्य-मंच कार्यक्रम में दिनांक 29 नवंबर 2016 को साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में प्रख्यात नाटककार असगर वजाहत ने अपने नए नाटक

प्रो. असग़र वजाहत

'महाबली' के अंतिम भाग का पाठ किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने असग़र वजाहत का स्वागत किया और उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

प्रो. असग़र वजाहत ने पाठ से पहले श्रोताओं को बताया कि तुलसीदास के जीवन पर आधारित इस नाटक में तीन तथ्यों को उभारने की उन्होंने कोशिश की है। पहला तथ्य तुलसीदास द्वारा विचारों की लोकतांत्रिक परंपरा को आम आदमियों तक पहुँचाना जिससे कि आम आदमी भी सशक्त होते हैं। दूसरा अवधी जैसी आम बोलचाल की भाषा में इतना बड़ा महाकाव्य लिखना तथा तीसरा सत्ता और कला के आपसी संबंधों पर प्रकाश डालना। उन्होंने श्रोताओं के सामने नाटक का तीसरा और अंतिम भाग पढ़ा जिसमें मुगल सम्राट अकबर और तुलसीदास की बातचीत है। सपने में की गई यह बातचीत सत्ता और कला के संबंधों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालती है। तुलसीदास सम्राट अकबर को महाबली नाम से संबोधित करते हैं। यह नाम अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना द्वारा दिया गया है। सम्राट अकबर तुलसीदास को गोस्वामी नाम से संबोधित करते हैं और उनसे सीकरी ना आने का कारण पूछते हैं। पूरा संवाद बहुत ही सरल, छोटे वाक्यों में और तीक्ष्ण व्यंग्य लिए हुए था। नाटक के अन्य पात्रों में तुलसीदास के शिष्य, टोडरमल और अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना प्रमुख हैं।

नाटक के बाद उपस्थित श्रोताओं ने महाबली शीर्षक को लेकर कई सवाल पूछे। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि उन्हें यह नाटक लिखने में दस वर्ष का समय लगा है। कार्यक्रम में भारी संख्या में हिंदी के वरिष्ठ लेखक, पत्रकार और नाट्यकर्मी उपस्थित थे।

साहित्य मंच - व्याख्यान

2 दिसंबर 2016, मुंबई

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा मुहिब्बाने उर्दू के सहयोग से 2 दिसंबर 2016 को इस्लाम जिमख़ाना के दीवाने ख़ास में 'साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'गोपीचंद नारंग की अदबी ख़िदमात' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के सदस्य जनाब शमीम तारिक़ ने अपने व्याख्यान में कहा कि प्रो. गोपीचंद नारंग लोकप्रिय व्यक्तित्व के मालिक और साहित्य, समाजशास्त्र, भाषा विज्ञान, संरचनावाद, शैली विज्ञान जैसे विषयों के विशेषज्ञ हैं। शमीम तारिक़ ने गोपीचंद नारंग की कई किताबों और आलेखों का विश्लेषण करते हुए बताया कि कई विषयों में उनका व्यक्तित्व दूसरों से अलग है। इस्लाम जिमख़ाना के दीवाने ख़ास में महाराष्ट्र के लेखकों की बड़ी संख्या मौजूद थी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. क़ासिम ईमाम ने किया और धन्यवाद ज्ञापन इरफ़ान जाफ़री ने किया।

साहित्य मंच - तमिळ डायस्पोरा साहित्य

10 दिसंबर 2016, मन्नरगुडी

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा 'तमिळ डायस्पोरा साहित्य' पर 10 दिसंबर 2016 को मन्नरगुडी में एक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अकादेमी के सामान्य परिषद के सदस्या डॉ. आर. कामरासु ने प्रतिभागियों अतिथियों का स्वागत किया तथा

'तमिळ डायस्पोरा साहित्य' कार्यक्रम का एक दृश्य

प्रतिभागियों का परिचय प्रस्तुत किया। म्युनिस्पल मिडिल स्कूल की प्राचार्या मन्नरगुडी सुश्री डी. अबूसेलवी ने अतिथियों का अभिनंदन किया।

श्री एस. आर. कुरिंजेवंदन ने 'मलेशिया के तमिळ साहित्य' पर बोलते हुए संगम युग के बाद से तमिलों और मलेशिया के मध्य संबंधों का वर्णन किया। डॉ. जी. राजगोपालन ने अपने आलेख 'सिंगापुर का तमिल साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि तमिळ डायस्पोरा के लेखकों को प्रोत्साहित किया जाना

चाहिए। डॉ. सुधाकर वादिवेलू ने 'श्रीलंका का तमिळ साहित्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। गोपाल समुद्रम, मिडिल स्कूल की प्राचार्या डॉ. एम. देवी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच - भाषा और साहित्य

16 दिसंबर 2016, मेइलादुथुरै

साहित्य अकादेमी के उप क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा ए.वी.सी. कॉलेज मेइलादुथुरै के सहयोग से 'भाषा और साहित्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

भाषा और साहित्य कार्यक्रम का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य डॉ. आर संबथ ने अतिथियों का स्वागत किया। ए.वी.सी. कॉलेज के प्राचार्य श्री आर. नागराजन ने अध्यक्षता की। ए.वी.सी. कॉलेज के तमिळ विभाग के अध्यक्ष श्री एस. तमिलवेलु ने प्रतिभागियों को बधाई देते हुए 'शुद्ध तमिळ आंदोलन' की उत्पत्ति के बारे में बात की।

श्री का. तमिझमल्लन, श्री ना. मू. तमिळमनी एवं श्री तमिळ अनंबी ने 'शुद्ध तमिळ आंदोलन' के बारे में अपने आलेख प्रस्तुत किए। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नेपाली रचना पाठ

30 दिसंबर 2016, उदालगुड़ी (असम)

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा असम नेपाली साहित्य सभा उदालगुड़ी के सहयोग से नेपाली रचना पाठ कार्यक्रम का आयोजन 30 दिसंबर 2016 को गुलमागाँव हाई स्कूल उदालगुड़ी (असम) में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने की। श्री प्रेम प्रधान ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी द्वारा शुरू किए गए नए कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला।

डॉ. जीवन राणा (डोर्स), गोपीचंद प्रधान (दार्जिलिंग), सुकराज दियाली (सिली गुड़ी) जगन्नीधि दहाल (रोवता) रेवती रमन सापकोटा (उदालगुड़ी), रुद्र बराल, (बोरसोला) वैद्यनाथ उपाध्याय (उदालगुड़ी) तथा लक्ष्मण अधिकारी (उदालगुड़ी) ने अपनी कविताओं एवं कहानियों का पाठ किया। डॉ. जीवन नामदुंग तथा नेपाली पमरार्श मंडल के सदस्य डॉ. ज्ञान बहादुर क्षेत्री ने भी सभा को संबोधित किया। असम नेपाली साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री विष्णु शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. जीवन राणा अपनी रचना प्रस्तुत करते हुए

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के ग्राहक बनें

संस्कृतप्रतिभा (संस्कृत त्रैमासिक)

(संपादकः राधावल्लभत्रिपाठी)

एक प्रति : 40 रु.

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 150 रु.,

त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क : 400 रु.

पुस्तक प्रसंग

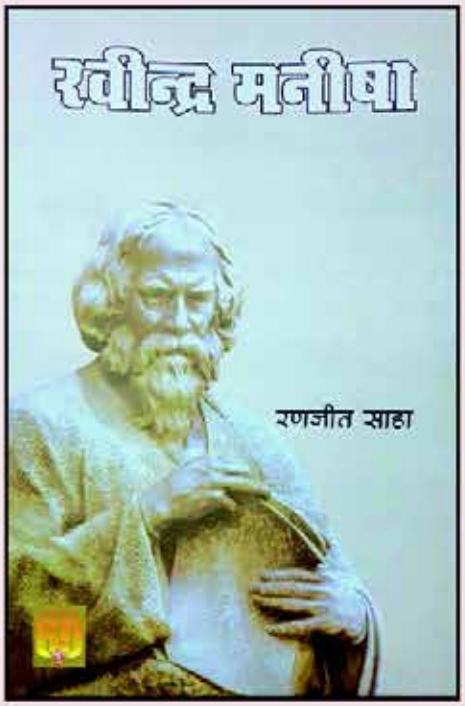

रवीन्द्र मनीषा

रवींद्रनाथ बीसवीं सदी की भारतीय मनीषा के विश्व-राजदूत हैं—पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक। सिंधु-सीमांतों के पार उनकी कीर्ति पताका और उनके साथ-साथ भारतीय मनीषा की कीर्ति पताका फहरा रही है।

रवींद्रनाथ का सर्जक व्यक्तित्व प्रतिभा का विस्फोट था। कवि, कथाकार, नाटककार, अभिनेता, संगीतकार, चित्रकार, निबंधकार आदि सर्जना के सभी रूप उनके व्यक्तित्व में पूँजीभूत हो उठे थे। चिंतन, दर्शन, शिक्षाशास्त्र, समाज-चिंता उनके व्यक्तित्व के ऊपरी पक्ष थे—इन्हीं अर्थों में विश्वभारती शांतिनिकेतन के प्रकल्पक के रूप में भी आधुनिक भारत के एक निर्माता थे।

हिंदी में एक ऐसी पुस्तक की ज़रूरत निरंतर महसूस होती रही, जिसमें रवींद्रनाथ की कृति एवं चिंतक व्यक्तित्व अपनी संपूर्णता में उपस्थित हो। विलंब से ही सही, इस अभाव की पूर्ति डॉ. रणजीत साहा ने 'रवींद्र मनीषा' शीर्षक वृहत ग्रंथ के द्वारा की है। वे अपने विषय के अधिकारी विद्वान हैं—'गीतांजलि' सहित रवींद्र-साहित्य की अनेक पुस्तकें हिंदी में अनूदित करने के अतिरिक्त, पी-एच.डी. के शोधकार्य के सिलसिले में वे विश्वभारती शांतिनिकेतन के उस परिवेश में भी काफ़ी समय बिता चुके हैं, जहाँ का कण-कण कवींद्र-सुरभि से अनुप्राणित है।

समीक्ष्य ग्रंथ का नियोजन जिन 11 प्रमुख शीर्षकों (देशकाल, आरंभिक लेखन, काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, रवींद्रनाथ की कला-सृष्टि, रवींद्र संगीत, गुरुदेव और महात्मा और नोबेल पुरस्कार से सम्मानित रवींद्रनाथ ठाकुर) के अंतर्गत हुआ है, उनमें चरितनायक के उद्भव की युगीन परिस्थितियाँ, जन्म एवं जीवनगत विकास, आरंभिक लेखकीय संलग्नताओं से प्रारंभ कर, उसकी सृजन-यात्रा के सभी पड़ावों-पक्षों का अवलोकन-आकलन तो हुआ ही है, रवींद्रनाथ और गांधी के पारस्परिक संबंधों एवं संवाद के माध्यम से बीसवीं सदी के भारत के उन प्रमुख विमर्शों का संक्षिप्त जायज़ा भी लिया गया है, जिनसे आधुनिक भारत के स्वरूप निर्धारण का पथ प्रशस्त हुआ। डॉ. साहा ने इस ओर संकेत करते हुए उचित ही लिखा है, "अपने भावचिंतन में समाहित और समस्त प्रकृति चेतना के वाहक और गायक रवींद्रनाथ न तो कभी इतिहासविमुख रहे और न देश-काल के प्रश्नों से उदासीन। अपने देश से प्रेम करनेवाले रवींद्रनाथ ने राष्ट्र के प्रति अंध-प्रेम जतानेवालों और राष्ट्रवाद के नाम पर मानवता पर अपराध करनेवालों की खुले शब्दों में भर्त्सना की थी; उनका यह तेवर आनेवाले समय में और भी उग्र-मुखर और तर्कप्रवण होता चला गया।"

सृजन और चिंतन की लगभग सभी सरणियों के अवगाहक रवींद्रनाथ की मानसभूमि रचना प्रधान थी और उनका कवि-रूप उस सब पर भारी पड़ता था। कवि रूप में ही उन्हें दुनिया-भर में प्रतिष्ठा मिली। वय और सृजन-कर्म में उनसे वरिष्ठ, अंग्रेज़ी कविता की स्वच्छंदतावादी धारा के अंतिम भास्कर व्यक्तित्व डब्ल्यू. बी. येट्स से कोई डेढ़ दशक पूर्व, कवि-रूप में ही उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जो वस्तुतः सकल एशियाई कविता का सम्मान था। बाङ्ला और अंग्रेज़ी में कोई साठ काव्यकृतियाँ देनेवाले और महाप्रयाण (7 अगस्त 1941) से कोई दस दिन पूर्व तक काव्य-सृजन से अवकाश न लेनेवाले रवींद्रनाथ अपने कवि की परिभाषा 'मातः भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः' (ऋग्वेद) के रूप में करते थे। इसी बात को अपनी बोली-बानी में उल्टा करते हुए उन्होंने कहा, 'आमि एइ पृथिवीर कवि'। यही वह बिंदु है जहाँ से डॉ. साहा रवींद्रनाथ की कविता को विश्व मानवता की महाकाव्यात्मक पहचान के रूप में देखते हैं।

काव्य-रचना के लगभग साथ-साथ रवींद्रनाथ कहानी, उपन्यास, नाटक आदि अन्य रचना-रूपों में भी आवाजाही करने लगे थे। उनकी पहली प्रकाशित काव्यकृति 'कवि काहिनी' 1878 में आई, जबकि उनकी पहली कहानी 'भिखारिणी' उससे एक वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी थी—यह अलग बात है कि उसे उन्होंने अपने जीते-जी किसी संकलन में शामिल नहीं किया। अस्सी वर्ष लंबे जीवन में रवींद्रनाथ ने लगभग अस्सी कहानियाँ लिखीं, जिनमें से 'देना-पावना', 'पोस्टमास्टर', 'काबुलीवाला', 'क्षुधित पाषाण', 'नष्टनीड़', 'गुप्तधन', 'स्त्रीर पत्र' आदि एक दर्जन से ऊपर कहानियाँ कालजयी कोटि में आती हैं।

उनका पहला उपन्यास 'करुणा' 1880 में आया और 1934 तक 'नष्टनीड़', 'चोखेर बालि', 'नौकाडुबी', 'गोरा', 'घरे बाइरे' आदि उनके 15 उपन्यास प्रकाशित हुए। रवींद्रनाथ का कथा-साहित्य युगीन यथार्थ का दर्पण है। वे एक ओर जहाँ अपने से पहले के बंगीय कथा-साहित्य की भावुकता के घटाटोप को विदीर्ण कर तार्किकता और वृहत्तर मानवीय संकल्प को प्रतिष्ठित करते हैं, वहीं "आत्मिक और

सामाजिक प्रश्नों से जुड़े परस्पर विपरीत ध्रुवांतों को निकट लाते हुए'' आस्वादपरकता के नए दिगंत अन्वेषित करते हैं। 'गोरा' उपन्यास में परेश बाबू के समक्ष गोरा के प्रायश्चित्त वक्तव्य के संदर्भ से डॉ. साहा इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं : ''हिंदू राष्ट्रवाद और तथाकथित ब्राह्मण गौरव पर प्रहार करते हुए रवींद्रनाथ ने भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के देशव्यापी आंदोलन से पूर्व भारतीय राष्ट्र और राज्य का जो मानवीय आदर्श इस उपन्यास के रूप में प्रस्तावित किया, वह अन्यतम है। ... 'गोरा' उनके उपन्यासकार की सर्वोत्तम उपलब्धि है, जिसे उचित ही श्रेष्ठतम भारतीय उपन्यास कहा जाता है और आधुनिक भारत का महाभारत भी... ।''

कविता के बाद रवींद्रनाथ के कृति व्यक्तित्व की सबसे उर्वर विधा नाटक है। उनके प्रथम नाटक के रूप में 'रुद्रचंद्र' का उल्लेख मिलता है, किंतु तथ्यगत अर्थों में कालक्रमानुसार उनका पहला नाटक 'वाल्मीकि प्रतिभा' (1881) माना जाता है। वे 1939 तक नाट्य-लेखन में संलग्न रहे और 'विसर्जन', 'चित्रांगदा', 'राजा', 'डाकघर', 'मुक्त धारा', 'चिरकुमार सभा', नटीर पूजा', 'रक्त करबी', 'तासेर देश', 'चंडालिका' आदि नाटकों की रचना की। इनमें से कई संगीत रूपक हैं का संवाहक मानना सटीक होगा। 'वाल्मीकि प्रतिभा' की रचना के साथ ही रवींद्रनाथ को यह प्रतीति हो गई थी कि नाटक का अर्थ है उसकी रंग-प्रस्तुति। रंग-प्रस्तुति से रहित नाटक अपूर्ण है, प्रभावहीन है। 'वाल्मीकि प्रतिभा' का उन्होंने बाक़ायदे, जोड़ासाँकों में मंचन किया था और निर्देशक का दायित्व वहन करने के साथ-साथ 'वाल्मीकि' की भूमिका भी अभिनीत की थी। उन्होंने स्वरचित 32 नाटकों का निर्देशन और 24 नाटकों में अभिनय किया। और चूँकि संगीत का रंगमंच से अन्योन्याश्रय संबंध है, 'रवींद्र संगीत' को भी रवींद्रनाथ के नाट्यकार का अनुपूरक अंग मानना उचित होगा। डॉ. साहा के अनुसार, ''रवींद्रनाथ ने विपुल संख्या में गीत और गान रचते हुए, उनके संगीत पक्ष की, अर्थात् उनकी गेयता और लय-ताल की कमी अनदेखी नहीं की। ... 'वाल्मीकि प्रतिभा' एवं 'कालमृगया' से लेकर 'फाल्गुनी', मुक्तधारा', 'तासेर देश', और बाद में 'श्यामा', 'चांडालिका' तथा 'चित्रांगदा' आदि नाट्यकृतियों के गान स्वतंत्र रूप से भी रवींद्र संगीत की मान्य स्वरलिपि के साथ सस्वर गाए जाते हैं। ... न केवल भावनात्मक स्तर पर, बल्कि शब्द-सौंदर्य और संगीत तत्त्व की उदात्तता के नाते भी रवींद्रनाथ के गान किसी भी सुधी श्रोता समाज के लिए अनिवार्य ही नहीं अपरिहार्य हैं।''

रवींद्रनाथ के रचनाकार व्यक्तित्व का एक अविभाज्य, दुर्लभ किंतु अल्पचर्चित पक्ष कला-साधना से संदर्भित है। अपने पूरे जीवन साहित्य साधना करने के साथ-साथ वे कला-साधना में भी रत रहे। जब समूचा 'बंगाल स्कूल' रंग-रेखा और आकृतियों में गले-गले तक भावुकता में डूबा था, रवींद्रनाथ अपनी कलाकृतियों में पौर्वात्य आधुनिकता के दिगंत विकसित कर रहे थे। रवींद्रनाथ ने कला को न सिर्फ़ अपनी सृजन-यात्रा का एक पाथेय बनाया, बल्कि शांतिनिकेतन में 'कला भवन' की स्थापना करके भविष्य के कलाकारों का पथ भी प्रशस्त किया। उनके व्यक्तित्व में रचना और विचार, राष्ट्र और समाज-चिंतन के जितने रूप समाहित हैं, न सिर्फ़ भारत बल्कि बीसवीं सदी के सकल संसार में किसी एक काया में उन्हें खोज पाना असंभव नहीं तो दुर्लभ अवश्य है। इस प्रसंग में डॉ. साहा एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात करते हैं, ''रवींद्रनाथ के, रचना और चिंतन के सभी रूप एक-दूसरे में प्रविष्ट हैं, परस्पर उद्दीपक और परिपूरक हैं और एक अखंड सत्ता के प्रतिरूप हैं। ... रवींद्रनाथ की समस्त लेखनी, चाहे वह कहानी हो या कविता, गान हो या निबंध, व्याख्यान हो या विचार—वह मनुष्य के निर्बंध होने के संकल्प से दीप्त और मुक्ति के मंत्र से भास्वर है।''

प्रस्तुत ग्रंथ को परिकल्पना और प्रस्तुति के स्तर पर, हिंदी में अपने विषय का विश्वकोश माना जाना चाहिए। प्रायः इस प्रकार के व्यापक फलक वाले कामों में अनावश्यक विस्तार और बिखराव के ख़तरे रहते हैं। डॉ. साहा उन ख़तरों के प्रति सतर्क रहे हैं और उन्होंने विषय-प्रतिपादन में विवेक और संयम से काम लेते हुए राष्ट्रभाषा हिंदी में एक ऐसे अभाव की पूर्ति की है, जिसके लिए सकल हिंदी समाज को उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

रवींद्र मनीषा, *लेखक* : डॉ. रणजीत साहा
साहित्य अकादेमी, 35, फ़ीरोज़शाह रोड
नई दिल्ली-110001
पृ. 572 (अनेक रंगीन-श्वेतश्याम चित्रों से युक्त), मूल्य : 400 रुपये, वर्ष 2015

समीक्षक : **सुरेश सलिल**—कवि, अनुवादक, गद्यकार एवं सांस्कृतिक विषयों के टिप्पणीकार। दिल्ली में रहते हैं।

(साभार : संगना 24-25)

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के ग्राहक बनें

समकालीन भारतीय साहित्य (हिंदी द्वैमासिक)

(अतिथि संपादक : रणजीत साहा)

एक प्रति : 25 रु.

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 125 रु., त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क : 350 रु.

नवंबर-दिसंबर 2016 के साहित्यिक आयोजन

नवंबर 2016

2 नवंबर 2016	नई दिल्ली	सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अवसर पर श्री उदय सहाय का व्याख्यान।
3-4 नवंबर 2016	बेंगलूरु	स्कूल ऑफ़ बिज़नेस स्टडीज़ एंड सोशल साईंसेंज़, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के सहयोग से 'महानगरीय विस्तार : भारतीय साहित्य एवं आधुनिकता के प्रतिपक्ष' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन।
4 नवंबर 2016	आइज़ोल, मिज़ोरम	अंग्रेज़ी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय के सहयोग से 'बाल विधा एवं पहचान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
5 नवंबर 2016	जोरथाङ, सिक्किम	सृजनशील साहित्य लेखन मंच, जोरथाङ, सिक्किम के सहयोग से 'भारतीय नेपाली कविता एवं कहानी के सौ वर्ष' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
5 नवंबर 2016	जोरथाङ, सिक्किम	सृजनशील साहित्य लेखन मंच, जोरथाङ, सिक्किम के सहयोग से नेपाली के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ 'नेपाली रचना पाठ' का आयोजन।
6 नवंबर 2016	विजयवाड़ा, आ.प्र.	कृष्णा विश्वविद्यालय एवं कृष्णा ज़िला लेखक संघ के सहयोग से 'आंध्र पत्रिका का साहित्यिक योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
6 नवंबर 2016	गांतोक, सिक्किम	नेपाली साहित्य परिषद्, गांतोक, सिक्किम के सहयोग से 'भारतीय नेपाली साहित्य में नव लेखन' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
6 नवंबर 2016	गांतोक, सिक्किम	नेपाली साहित्य परिषद्, गांतोक, सिक्किम के सहयोग से प्रतिष्ठित नेपाली लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
6 नवंबर 2016	सावंतवाड़ी, महाराष्ट्र	अखिल भारतीय कोंकणी परिषद् के सहयोग से कोंकणी के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' का आयोजन।
7 नवंबर 2016	नई दिल्ली	ब्रिटेन से पधारी हिंदी के प्रख्यात लेखिका सुश्री अरुणा सभरवाल के साथ 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
7-8 नवंबर 2016	पटियाला, पंजाब	पंजाबी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के सहयोग से 'बलवंत गार्गी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन।
8 नवंबर 2016	तिरुचिरापल्ली, त.नाडु	तमिळ अध्ययन विभाग, भारती दासन विश्वविद्यालय के सहयोग से 'वा. सुपा. मणिकम्' शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
9 नवंबर 2016	मलापुरम, केरल	वल्लाथल स्मारक समिति, पुल्लुनी के सहयोग से 'महाकवि वल्लाथाल की काव्यात्मक दृष्टि' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
9 नवंबर 2016	मलापुरम, केरल	मलयाळम् के प्रतिष्ठित कवि श्री पी.पी. रामचंद्रन के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
9-10 नवंबर 2016	नई दिल्ली	साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं के प्रख्यात कवियों के साथ 'अखिल भारतीय काव्योत्सव' का आयोजन।
10 नवंबर 2016	कडपा, आ.प्र.	सी.पी. ब्राउन स्मृति पुस्तकालय, योगी वेमना विश्वविद्यालय, कडपा के सहयोग से 'सी.पी. ब्राउन की समकालीन प्रासंगिकता' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
11 नवंबर 2016	नई दिल्ली	'राजलक्ष्मी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
12 नवंबर 2016	मलप्पुरम, केरल	केरल मप्पिला कला एकेडमी, कोंडोट्टी के सहयोग से 'मपिला साहित्य में शास्त्रीय लेखन और एक समाजवादी कवि मेहर' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।

12 नवंबर 2016	कडपा, आ.प्र.	तेलुगु भाषा मित्र मंडली, कडपा के सहयोग से 'तेलुगु कथा एवं स्वदेशी तेलुगु भाषा' शीर्षक से साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
12 नवंबर 2016	अगरतला, त्रिपुरा	गौरंगर यूथ क्लब, त्रिपुरा के सहयोग से साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'पेना एवं मणिपुरी साहित्य और कवि गोष्ठी' का आयोजन।
12 नवंबर 2016	अगरतला, त्रिपुरा	गौरंगर यूथ क्लब, त्रिपुरा के सहयोग से मणिपुरी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री माखनमोनी मोंगसबा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
12-17 नवंबर 2016	जम्मू	जम्मू एंव कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सहयोग से 'लघु कथा कार्यशाला' का आयोजन।
13-14 नवंबर 2016	रायपुर, छत्तीसगढ़	मैथली प्रवाहिका, रायपुर के सहयोग से 'लक्ष्मण झा, बाबू साहेब चौधरी एवं नागेंद्र कुमार' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
14 नवंबर 2016	अहमदाबाद, गुजरात	'बाल साहित्य पुरस्कार 2016' अर्पण समारोह का आयोजन।
14 नवंबर 2016	गुवाहाटी, असम	पश्चिम गुवाहाटी कॉलेज, गुवाहाटी के सहयोग से साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'असमिया गेय साहित्य' का आयोजन।
14-21 नवंबर 2016		अकादेमी के मुख्य कार्यालय समेत सभी क्षेत्रीय कार्यालयों एवं उप-कार्यालय चेन्नै में 'राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2016' का आयोजन जिसके दौरान विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।
15 नवंबर 2016	कोझिकोड, केरल	साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित 'तकझी शिवशंकर पिल्लै', 'सुब्रह्मण्य भारती' एवं 'एम.टी. वासुदेवन नायर' पर वृत्तचित्र की प्रदर्शनी।
15 नवंबर 2016	कुंबाकोनम, तमिळनाडु	साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित 'तकझी शिवशंकर पिल्लै', 'नील पद्मानाभन' एवं 'कमला दास' पर वृत्तचित्र की प्रदर्शनी।
15 नवंबर 2016	बेंगळूरु, कर्नाटक	कन्नड के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ 'लघु कथा पाठ' कार्यक्रम का आयोजन।
16 नवंबर 2016	कोझिकोड, केरल	मलयाळम् के प्रतिष्ठित कवियों के साथ 'कवि गोष्ठी' कार्यक्रम का आयोजन।
16 नवंबर 2016	कुंबाकोनम, तमिळनाडु	तमिळ के प्रतिष्ठित कवियों के साथ 'कवि गोष्ठी' कार्यक्रम का आयोजन।
16 नवंबर 2016	बेंगळूरु, कर्नाटक	साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित 'जी.एस. शिवरुद्रप्पा', 'पु. टी. ना.' एवं 'मुल्क राज आनंद' पर वृत्तचित्र की प्रदर्शनी।
17 नवंबर 2016	कोझिकोड, केरल	साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित 'डी. जयकांतन', 'वायकम मोहम्मद बशीर' एवं 'यू. आर. अनंतमूर्ति' पर वृत्तचित्र की प्रदर्शनी।
17 नवंबर 2016	कुंबाकोनम, तमिळनाडु	साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित 'डी. जयकांतन', 'वायकम मोहम्मद बशीर' एवं 'यू. आर. अनंतमूर्ति' पर वृत्तचित्र की प्रदर्शनी।
17 नवंबर 2016	बेंगळूरु, कर्नाटक	कन्नड के प्रतिष्ठित कवियों के साथ 'कवि गोष्ठी' कार्यक्रम का आयोजन।
18 नवंबर 2016	कोझिकोड, केरल	मलयाळम् के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ 'लघु कथा पाठ' कार्यक्रम का आयोजन।
18 नवंबर 2016	कुंबाकोनम, तमिळनाडु	तमिळ के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ 'लघु कथा पाठ' कार्यक्रम का आयोजन।
18 नवंबर 2016	बेंगळूरु, कर्नाटक	साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित 'कुवेम्पू', 'यू. आर. अनंतमूर्ति' एवं 'कमलेश्वर' पर वृत्तचित्र की प्रदर्शनी।
19 नवंबर 2016	कोझिकोड, केरल	साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित 'अयप्पा पाणिकर', 'महाश्वेता देवी' एवं 'कमला दास' पर वृत्तचित्र की प्रदर्शनी।
19 नवंबर 2016	कुंबाकोनम, तमिळनाडु	साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित 'महाश्वेता देवी', 'सुब्रमण्या भारती' एवं 'खुशवंत सिंह' पर वृत्तचित्र की प्रदर्शनी।
19 नवंबर 2016	बेंगळूरु, कर्नाटक	कन्नड के प्रतिष्ठित लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।

20 नवंबर 2016	कोझिकोड, केरल	'साहित्य एवं जीवन' शीर्षक पर परिचर्चा का आयोजन।
20 नवंबर 2016	कुंबाकोनम, तमिळनाडु	'साहित्य एवं जीवन' शीर्षक पर परिचर्चा का आयोजन।
20 नवंबर 2016	बेंगळूरु, कर्नाटक	समापन समारोह का आयोजन।
15 नवंबर 2016	अहमदाबाद, गुजरात	'लेखक सम्मिलन' का आयोजन जिसमें बाल साहित्य पुरस्कार से अलंकृत लेखकों ने अपनी रचनात्मक अनुभव श्रोताओं से साझा कीं।
15 नवंबर 2016	बारपेटा, असम	असम साहित्य सभा, गुवाहाटी के सहयोग से 'चार चपोरी क्षेत्र की जनता का असमिया साहित्य एवं संस्कृति में योगदान' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
15-16 नवंबर 2016	अहमदाबाद, गुजरात	'बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह' के अवसर पर प्रतिष्ठित बाल साहित्य लेखकों एवं विद्वानों के साथ 'बाल साहित्य लेखन : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
16 नवंबर 2016	नई दिल्ली	'दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव' के अवसर पर भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठित लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
16 नवंबर 2016	चंडीगढ़, पंजाब	पंजाबी की प्रतिष्ठित लेखिका प्रो. वनिता के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
17-18 नवंबर 2016	नई दिल्ली	'भारतीय भाषाओं एवं साहित्य में राष्ट्रीय एकता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
18 नवंबर 2016	हैदराबाद	लेखनी महिला चैतन्या संस्था के सहयोग से 'तेलुगु महिला साहित्य में विषय की विविधता : वैश्वीकरण के प्रभाव' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
18 नवंबर 2016	हैदराबाद	तेलुगु के लब्धप्रतिष्ठ कवि डॉ. घरबासायानम श्रीनिवासाचार्य के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
18-19 नवंबर 2016	जम्मू	स्नातकोत्तर डोगरी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू के सहयोग से 'डोगरी लोक साहित्य : समकालीन समीकरण' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
19-20 नवंबर 2016	मुंबई	'आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
20 नवंबर 2016	बेलगाम, कर्नाटक	'कृष्णमूर्ति पुराणिक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर परिसंवाद का आयोजन। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित कन्नड विनिबंध 'कृष्णमूर्ति पुराणिक' का विमोचन भी किया गया।
21 नवंबर 2016	पांडिचेरी	'भारतीदासन कुइल पट्टु और इसके समकालीन प्रतिध्वनियों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
21 नवंबर 2016	असम	बोडो राइटर्स एकेडमी और बोडोलैंड टेरिटोरियल काउंसिल के सहयोग से 'अखिल भारतीय बहुभाषी काव्य गोष्ठी' का आयोजन।
21 नवंबर 2016	मुंबई	गोयथे इंस्टीट्यूट, मैक्स मूलर भवन, मुंबई के सहयोग से 'सांस्कृति विनिमय कार्यक्रम' का आयोजन जिसके अंतर्गत गोयथे इंस्टीट्यूट के निमंत्रण पर कुछ विदेशी कवियों ने भारत भ्रमण किया।
21-23 नवंबर 2016	वाराणसी, उ.प्र.	अकादेमी द्वारा वाराणसी स्थित अपने व्याख्या केंद्र पर व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन।
22 नवंबर 2016	नई दिल्ली	दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव के अवसर पर हिंदी की प्रसिद्ध लेखिक सुश्री गीतांजलि श्री के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
22 नवंबर 2016	अगरतला, त्रिपुरा	अंग्रेज़ी के युवा कवियों के साथ 'कविता महोत्सव' का आयोजन।
23-24 नवंबर 2016	थनजावुर, तमिळनाडु	तमिळ विश्वविद्यालय, थनजावुर के सहयोग से 'तमिळ साहित्य की आलोचना, सिद्धांत और दृष्टिकोण : प्राचीन और आधुनिक' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
25 नवंबर 2016	नई दिल्ली	ईरान कल्चर हाउस, नई दिल्ली व बुक सिटी के सहयोग से 'भारत और ईरान में समकालीन कथा लेखन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
25 नवंबर 2016	संबलपुर, ओड़िशा	ओड़िया के लब्धप्रतिष्ठ लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
25 नवंबर 2016	नई दिल्ली	दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव के अवसर पर 'बहुभाषी कवि गोष्ठी' का आयोजन।

25 नवंबर 2016	गुंतूर, आ.प्र.	तेलुगु विभाग, गवर्नमेंट विमेन कॉलेज, गुंतूर के सहयोग से 'आधुनिक तेलुगु कहानी' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
25-27 नवंबर 2016	शिलांग, मेघालय	'ख़ासी-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
26 नवंबर 2016	भुवनेश्वर, ओड़िशा	ओड़िया की प्रतिष्ठित लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
26 नवंबर 2016	बेंगळूरु	तेलुगु के प्रसिद्ध कवि डॉ. आर.ए. पद्मनाभराव के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
26 नवंबर 2016		अकादेमी के मुख्य कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं उप-कार्यालय चेन्नै में डॉ. भीमराव अंबेडकर की याद में संविधान दिवस का आयोजन।
26 नवंबर 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	गुलापी नाटा संकृताना एकेडमी, इंफ़ाल के सहयोग से 'कोंजेंबम तोयैमा सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
26 नवंबर 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	मणिपुरी के प्रतिष्ठित लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
26-27 नवंबर 2016	नई दिल्ली	'अख़्तरुल ईमान : पुनर्पाठ' विषय पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
26-27 नवंबर 2016	कोलकाता	भारतीय संस्कृत संसद, कोलकाता के सहयोग से 'संस्कृत युवा कवि सम्मिलन' का आयोजन।
26-27 नवंबर 2016	भुवनेश्वर	ओड़िया विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के सहयोग से 'आदिवासी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
26-27 नवंबर 2016	गुवाहाटी	'मणिपुरी-बोडो अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
26-28 नवंबर 2016	पुरी, ओड़िशा	'ओड़िया-संताली लघु कथा अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
27 नवंबर 2016	भद्रक, ओड़िशा	राधानाथ पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
27 नवंबर 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	चिल्ड्रेन कल्चरल सेंटर ऑफ़ केशमथौंङ होडाम लिरक के सहयोग से 'मणिपुर में बाल साहित्य और रंगमंच : समस्याएँ एवं संभावनाएँ' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
28 नवंबर 2016	नई दिल्ली	डॉ. भीमराव अंबेडकर की 125वीं जयंती के अवसर पर प्रो. एम. श्रीधर, केंद्रीय सूचना आयुक्त, केंद्रीय सूचना आयोग द्वारा व्याख्यान का आयोजन।
28 नवंबर 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	अंग्रेज़ी साहित्य मंडल, मणिपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से 'मणिपुरी साहित्यिक आलोचना पर पाश्चात्य आलोचना सिद्धांत का प्रभाव' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
28 नवंबर 2016	गुवाहाटी, असम	बोडो के प्रसिद्ध लेखक डॉ. अनिल कुमार बोरो के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
28 नवंबर 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	मणिपुरी की प्रतिष्ठित लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
28-29 नवंबर 2016	कोलकाता	विश्व बाङ्ला साहित्य उत्सव के सहयोग से 'साहित्योत्सव' का आयोजन।
29 नवंबर 2016	नई दिल्ली	हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ नाटककार एवं कथाकार श्री असग़र वज़ाहत के साथ 'नाटक पाठ'।
29 नवंबर 2016	नई दिल्ली	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली के सहयोग से 'संस्कृत और डॉ. अंबेडकर : संस्कृत साहित्य में दलित विमर्श' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
29 नवंबर 2016	नई दिल्ली	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली के सहयोग से संस्कृति के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान डॉ. रामशंकर अवस्थी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
30 नवंबर 2016	नई दिल्ली	हिंदी के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।

दिसंबर 2016

2 दिसंबर 2016	अगरतला, त्रिपुरा	युवा पुरस्कार अर्पण समारोह।
2 दिसंबर 2016	मुंबई	मुहिब्बाने उर्दू के सहयोग से साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन। इस दौरान प्रो. गोपी चंद नारंग पर अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया।
3 दिसंबर 2016	अगरतला, त्रिपुरा	युवा पुरस्कार से पुरस्कृत लेखकों का सम्मिलन।

3-4 दिसंबर 2016	अगरतला, त्रिपुरा	'अखिल भारतीय युवा लेखक महोत्सव - अविष्कार' कार्यक्रम का आयोजन।
5-6 दिसंबर 2016	मजुल्ली, असम	श्री श्री उत्तर कमलाबारी सत्र संकरादेव कृष्टि संघ, मजुली के सहयोग से 'पौराणिक कथाएँ और आधुनिक भारतीय साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
7 दिसंबर 2016	नई दिल्ली	असमिया, अंग्रेज़ी, हिंदी, तेलुगु एवं उर्दू की लब्धप्रतिष्ठ लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम।
7-8 दिसंबर 2016	कालीकट, केरल	जनजातीय अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान, कालीकट यूनिवर्सिटी सेंटर, चेथालायम के सहयोग से 'जनजातीय भाषा एवं संस्कृति' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
9 दिसंबर 2016	कोची, केरल	उत्तर-पूर्व एवं दक्षिणी लेखक सम्मिलन का आयोजन।
10 दिसंबर 2016	यनम, पुडुचेरी	स्पूर्थि साहिति समख्या, यनम के सहयोग से तेलुगु लेखक सम्मिलन का आयोजन।
10 दिसंबर 2016	मन्नारगुडी, तमिलनाडु	'तमिळ प्रवासी साहित्य' शीर्षक से साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
11 दिसंबर 2016	जोन्नावलसा गाँव, विजयानगरम	विजया भवन के सहयोग से 'ग्रामालोक' कार्यक्रम का आयोजन।
11-12 दिसंबर 2016	पुरुलिया	सृजन उत्सव, पुरुलिया के सहयोग से मिज़ोरम की संस्कृति मंडली के साथ 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन।
12 दिसंबर 2016	कोयम्बटूर	डॉ. एन.जी.पी. आर्ट्स एंड साईंस कॉलेज, कोयम्बटूर के सहयोग से 'डी. जयकांतन' विषय पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन।
12 दिसंबर 2016	मुंबई	'द हिंदवासी', समाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका के सहयोग से सिंधी के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
14 दिसंबर 2016	करायकुडी, तमिलनाडु	रामासामी तमिळ कॉलेज, करायकुडी के सहयोग से 'परमहंस देसान' शतवार्षिकी परिसंवाद।
15 दिसंबर 2016	कोलकाता	बाङ्ला के लब्धप्रतिष्ठ आलोचक डॉ. अश्रु कुमार सिकदर के साथ 'आलोचक के साथ एक शाम' कार्यक्रम का आयोजन।
15 दिसंबर 2016	जम्मू	'जम्मू क्षेत्र में कश्मीरी साहित्य का विकास' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
15-16 दिसंबर 2016	कोलकाता	'नागेंद्र मित्र' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
16 दिसंबर 2016	पट्टक्कोट्टाई, तमिलनाडु	एनाथी राजप्पा आर्ट्स एंड साईंस कॉलेज के सहयोग से 'पट्टक्कोट्टाई कल्यानसुंद्रम' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
16 दिसंबर 2016	त्रिवेंद्रम	अकादेमी की द्विमासिक हिंदी पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के 'एन.वी. कृष्ण वैरियर विशेषांक' का विमोचन।
16 दिसंबर 2016	जम्मू	कश्मीरी भाषा के कवियों के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
16 दिसंबर 2016	जम्मू	कश्मीरी भाषा के कहानीकारों के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
17 दिसंबर 2016	कुरनूल	जी. पुल्ला रेड्डी इंजीनियरिंग कॉलेज, कुरनूल के सहयोग से 'वैश्वीकरण एवं तेलुगु लघु कथा' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
17 दिसंबर 2016	बुलढाना	मराठी की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका सुश्री प्रभा गानोरकर के साथ 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें उन्होंने मराठी के विख्यात कवि डॉ. मंगेश पडगाँवकर पर अपना व्याख्यान दिया।
17-18 दिसंबर 2016	गोवा	कला एवं संस्कृति निदेशालय, भारत सरकार के सहयोग से 'कोंकणी लोक साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
17-18 दिसंबर 2016	कोलकाता	'वर्ण रत्नाकर' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
18 दिसंबर 2016	कुरनूल, केरल	तेलुगु भाषा विकास उद्यानम, कुरनूल के सहयोग से 'आधुनिक तेलुगु रायलसीमा महाकाव्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
18 दिसंबर 2016	गोवा	कला एवं संस्कृति निदेशालय, भारत सरकार के सहयोग से 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम।

18 दिसंबर 2016	जम्मू	कश्मीरी भाषा की प्रख्यात लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
18 दिसंबर 2016	जम्मू	कश्मीरी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. वली मोहम्मद असीर के साथ 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें उन्होंने प्रख्यात कश्मीरी लेखक डॉ. जाँबाज़ किश्तवारी पर व्याख्यान दिया।
19 दिसंबर 2016	दुलीजान, असम	दुलीजान राष्ट्रीय पुस्तक मेला के अवसर पर 'प्रगतिशील असमिया लेखन : रुझान, प्रवृत्ति एवं भविष्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
20 दिसंबर 2016	उल्हासनगर, महाराष्ट्र	सिंधी विभाग, श्रीमती सी.एच.एम.कॉलेज एवं सिंधी साहित्य संगत के सहयोग से 'सिंधी साहित्य में उल्हासनगर लेखिकाओं का योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
21 दिसंबर 2016	करकला, केरल	भुवेंद्र कॉलेज, करकला के सहयोग से 'साहित्य मंच : साहित्य स्पंदन' कार्यक्रम का आयोजन।
21 दिसंबर 2016	पांडिचेरी	साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'भारतीदासन के साहित्यिक आंदोलन और अंबेडकर की साहित्यिक आंदोलन के सामाजिक सुधारों का तुलनात्मक अध्ययन' का आयोजन।
22 दिसंबर 2016	चिकामंगलूरु, कर्नाटक	अज्जमपुरा जी. सुरी ट्रस्ट, कदूर के सहयोग से 'देवानुरु लक्ष्मीसा का साहित्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
23 दिसंबर 2016	भुवनेश्वर, ओड़िशा	'जनजातीय भाषा एवं साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
23 दिसंबर 2016	भुवनेश्वर, ओड़िशा	अमेरिका से पधारे प्रख्यात विद्वान एवं सामाजिक वैज्ञानिक श्री दिगम्बर मिश्र के साथ 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
23-24 दिसंबर 2016	इंफ़ाल	'अखिल भारतीय कवि सम्मिलन' का आयोजन।
24 दिसंबर 2016	चमराजनगर, कर्नाटक	श्रीगन्नदा पुस्तक मराता मिलेज के सहयोग से 'चमाराजनगर का लोक साहित्य में योगदान' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
24 दिसंबर 2016	भुवनेश्वर, ओड़िशा	ओड़िया विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय के सहयोग से 'राजकिशोर पटनायक जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन।
24 दिसंबर 2016	इर्नाकुलम, केरल	पी.जी. कामथ फ़ाउंडेशन के सहयोग से 'कोंकणी में जीवनी और आत्मकथात्मक साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
25 दिसंबर 2016	अनंतपुरम, आ.प्र.	साहिति श्रवंथी के सहयोग से 'तेलुगु साहित्य एवं श्रमिक वर्ग' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम।
25 दिसंबर 2016	कटक, ओड़िशा	उत्कल साहित्य समाज के सहयोग से 'ज्ञानेंद्र वर्मा' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
27 दिसंबर 2016	कोल्हापुर	मराठी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के सहयोग से मराठी के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार डॉ. भास्कर चंदनशिव के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
27 दिसंबर 2016	कोलकाता	'राजभोग कार्यशाला' एवं योग पर कार्यक्रम का आयोजन।
28 दिसंबर 2016	कोल्हापुर	मराठी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के सहयोग से 'स्वातंत्र्योत्तर भाषा में साहित्यिक आंदोलन एवं महिलाओं के मुद्दे' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
29 दिसंबर 2016	तेजपुर, असम	असम नेपाली साहित्य सभा के सहयोग से 'राष्ट्रवाद और भारतीय नेपाली साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
29 दिसंबर 2016	तेजपुर, असम	असम नेपाली साहित्य सभा के सहयोग से नेपाली के प्रसिद्ध कवि श्री यधाबीर राना के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
30 दिसंबर 2016	उदालगुरी, असम	असम नेपाली साहित्य सभा के सहयोग से नेपाली के प्रसिद्ध लेखकों के साथ 'नेपाली रचना पाठ'।
30 दिसंबर 2016	उदालगुरी, असम	असम नेपाली साहित्य सभा के सहयोग से नेपाली के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री तारापति उपाध्याय के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
30 दिसंबर 2016	तेज़पुर, असम	संताली भाषा, शिक्षा एवं साहित्यिक सोसायटी के सहयोग से संताली के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ 'संताली कवि गोष्ठी' का आयोजन।

नए प्रकाशन

अंग्रेज़ी

हरि दरयानी दिलगीर (विनिबंध)
मोती प्रकाश
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5132-8

पिशमुर्तिज सेलेक्टेड शॉर्ट-स्टोरीज़
तमिळ भाषा में सं. एवं सं. वेंकट स्वामीनाथन्,
अनु.: एस. थिल्लैनायगम्,
पृ. 288, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-2466-6 (पुनर्मुद्रण)

श्री रामायण दर्शनम्
लेः के.वी. पुट्टप्पा, अनु शंकर मोकाशी पुणेकर
पृ. 684 रु. 560/-
ISBN : 978-81-260-1728-7

हिंदी

बलभद्र प्रसाद दीक्षित पढ़ीस (विनिबंध)
ले.: भारतेंदु मिश्र
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5214-1

ग्यारह लैटिन अमरीकी कहानियाँ
सं. एवं सं.: राजीव सक्सेना
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5211-0

केशव प्रसाद पाठक (विनिबंध)
ले.: सत्येंद्र शर्मा
पृ. 148, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5210-3

किशोरीलाल गोस्वामी (विनिबंध)
ले.: गरिमा श्रीवास्तव
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5215-8

कन्नड

अद्भुत ग्रहदा कथे मत्तु इतारा कटेगलू (बाल क्लासिक)
ले.: तसिमा शिंजी, अनु.: टी. एस. नागराजशेट्टी
पृ. 112, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-5209-7

बी. वेंकटाचार्य (विनिबंध)
ले.: लक्ष्मण कोडसे
पृ. 84 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5206-6

जनवाणी बेरु (कन्नड लोकसाहित्य का संग्रह)
सं.: सिद्धलिंगैया
पृ. 384, रु. 95/-
ISBN : 978-81-260-4960-7

के. कृष्णमूर्ति (विनिबंध)
ले. एवं अनु.: के.जी. नारायणप्रसाद
पृ. 96 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5206-6

कृष्णमूर्ति पुराणिक (विनिबंध)
ले.: एस. एम. कृष्णराव
पृ. 148, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2508-0

एम.वी. सीतारमैया (विनिबंध)
ले.: पी. वी. नारायण
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5207-3

मराठी

एनीमल फ़ार्म
ले.: जॉर्ज ओरवेल, अनु.: श्रीकांत लागू
पृ. 90, रु.75/-
ISBN : 81-7201-088-5 (पुनर्मुद्रण)

दन्यानदेव (विनिबंध)
ले.: विलास सालुंके
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5137-3

मामा वारेडकर (विनिबंध)
लेः सदा कराढे, अनु. राजा होलकुंडे
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5173-1

एस.वी. केतकर
ले.: डी.पी. जोशी, अनु.: मैत्रेयी एस. जोशी
पृ. 56, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5134-2

सावरकर (मराठी लेखक पर विनिबंध)
ले.: सुधाकर देशपांडे, ले.: शैलजा वाडेकर
पृ. 92, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5130-4

श्रीपद् कृष्णा कोल्हटकर
ले.: एम.एल. वरणपांडे
पृ. 92, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5139-7 (पुनर्मुद्रण)

पंजाबी

हरभजन सिंह (विनिबंध)
ले.: सतींद्र सिंह
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5220-2

मिलजुल मन (अ.पु. हिंदी उपन्यास)
ले.: मृदुला गर्ग, अनु.: नक्षतर
पृ. 340, रु. 310/-
ISBN : 978-81-260-5221-9

राजस्थानी

विजयदान देथा (विनिबंध)
ले.: घनंजय अमरावत
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5110-6

तमिळ

अंडाल (विनिबंध)
ले.: के. ए. मनवलन
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 81-720-1633-6

अव्वैयर (विनिबंध)
ले.: तमिद्यन्नल
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 81-260-0057-0

अयलगा तमिक्ष इलक्कियम
(सिंगापुर, श्रीलंका, मलेशिया की कहानियों एवं कविताओं का संग्रह)
सं.: सा. कंडासामी
पृ. 320, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-1717-1 (पुनर्मुद्रण)

इरांडु पाडी
ले.: तकषै शिवशंकर पिल्लै
अनु.: श्री रामलिंगा पिल्लै
पृ. 144, रु. 85/-
ISBN : 978-81-260-1249-8 (पुनर्मुद्रण)

का. अयोथिदास पंडितर (विनिबंध)
ले.: गौतम सन्ना
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 81-260-2466-6

कवि का मु. शेरिफिन पदैप्पलुमै
(परिसंवाद आलेख), सं.: आर. संबथ
पृ. 224, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-5196-0

पथुप्पत्तू अरैची
ले.: एम. रसमणिकनर
पृ. 688, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5198-4 (पुनर्मुद्रण)

द्रौपदीन कथई (ओड़िया उपन्यास)
ले.: प्रतिभारे, अनु.: आर. बालचंद्र बाला
पृ. 527, रु. 275/-
ISBN : 978-81-260-5217-2

थोलकप्पियर (विनिबंध)
ले.: आर.एम.पेरियकरुप्पन
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 81-260-0056-2

वद्दरधनइ कथई उलगम (कन्नड कहानियाँ)
ले.: शिवकोत्तचर,
सं.: आर.एल. अनंत रमैया
अनु.: टी.एस. सदाशिवम, परवन्नन एवं इरैयदियन
पृ. 254 रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5219-6

अन्य कार्यक्रमों की झलकियाँ

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. खान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : rs.rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर.अम्बेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-80-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाई, तेनामपेट, चेन्नै 600 018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

खुर्शीद आलम द्वारा संपादित तथा के.श्रीनिवासराव, सचिव द्वारा
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001 के लिए प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित